

# राजभाषा जागृति

14वाँ अंक, मार्च 2017

वरिष्ठ नागरिक - हमारी धरोहर



गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड  
पोतनिर्माण में उत्कृष्टता एवं गुणवत्ता की दिशा में अग्रसर





रियर एडमिरल वी के सक्सेना, भानौ (सेवानिवृत्त)  
हमारे नए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



रियर एडमिरल ए.के. वर्मा, वीएसएम, भानौ (सेवानिवृत्त), तत्कालीन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, जीआरएसई, भारत के माननीय राष्ट्रपति से राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए-14 सितंबर 2016



श्रीमती सुनीता शर्मा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), जीआरएसई, भारत के माननीय राष्ट्रपति से गृह पत्रिका पुरस्कार योजना के अंतर्गत राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करते हुए -14 सितंबर 2016



## विषय सूची

गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड  
अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका

अंक : 14वाँ

मार्च 2017

(केवल आंतरिक वितरण के लिए)

### सम्पादक

श्रीमती सुनीता शर्मा

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

सम्पादकीय पत्राचार का पता :

### सम्पादक

राजभाषा जागृति

राजभाषा विभाग

गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड

61, गार्डन रीच रोड, कोलकाता - 700 024

दूरभाष : 033-24698140-8143, एक्स - 303

ईमेल - Sharma.Sunita@grse.co.in

(राजभाषा जागृति पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचार लेखकों के अपने हैं, अतः यह आवश्यक नहीं कि सम्पादक इनसे सहमत हो)

1. **आवरण कथा** ..... 6-9  
वरिष्ठ नागरिक - हमारी धरोहर
2. **तकनीकी लेख** ..... 10-14, 19-20  
मारिन, नीदरलैंड में पी-17ए का मॉडल परीक्षण • गोलियथ क्रैन  
• 5 टेक्नोलॉजियाँ जो बदल सकती हैं जहाज निर्माण का भविष्य
3. **कविताएँ** ..... 14, 17, 23, 33, 38, 41, 48  
आशा के दीप • मासूम बुढ़ापा • सर्जिकल स्ट्राइक • इंसाफ • वरिष्ठ  
नागरिक - हमारी धरोहर • वृक्ष • अग्नि सुरक्षा • कदम कदम  
बढ़े चलो
4. **विविध लेख** ..... 15-16, 18, 21-22, 32-33, 39-41  
विमुद्रीकरण और भ्रष्टाचार निर्मूलन • बदलता हुआ समाज • वरिष्ठ  
नागरिक - हमारी धरोहर • वरिष्ठ नागरिक - हमारी धरोहर  
• विमुद्रीकरण-भारतीय अर्थव्यवस्था • मानसिक एवं शारीरिक  
उत्पादकता वृद्धि के उपाय
5. **पर्यटन** ..... 24-25, 34-35  
रूपकुंड की यात्रा • जांस्कर नदी - बर्फ की सफेद चादर
6. **साहित्य** ..... 22, 26-27  
आज का नाटक-लाइफ ऑफ पाओ (नाट्य समीक्षा) • रामचरित मानस  
में वंदना
7. **निगमित सामाजिक दायित्व** ..... 28-29
8. **विचार** ..... 30-31  
मेरी नजरों में भारत की नकदीहीन अर्थव्यवस्था
9. **स्वास्थ्य** ..... 36-37  
ओल्ड इज गोल्ड
10. **जीआरएसई परिवारों से** ..... 42-47  
कल्पना चावला का जीवन • वाह रे तेरा न्याय • बेटियाँ • जनसंख्या  
वृद्धि • वरिष्ठ नागरिक-हमारी धरोहर • नैतिकता और विकास  
• आयुर्वेदिक पंचकर्म चिकित्सा
11. **राजभाषा गतिविधियाँ** ..... 49-55



संदेश

राजभाषा  
जागृति



प्रभास कुमार झा  
सचिव  
Prabhas Kumar Jha  
SECRETARY  
Tel. : 23438266 Telefax : 23438267  
E-mail : secy-ol@nic.in



भारत सरकार  
राजभाषा विभाग  
गृह मंत्रालय  
तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन,  
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001

GOVERNMENT OF INDIA  
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE  
MINISTRY OF HOME AFFAIRS  
3rd FLOOR, N.D.C.C.II BUILDING,  
JAI SINGH ROAD, NEW DELHI-110001

पत्र सं0-11014/08/2016-रा.भा. (पत्रिका)

13 जनवरी, 2017

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लि., कोलकाता द्वारा पत्रिका "राजभाषा जागृति" के 14वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्रजातंत्र में आम जनता का हित सर्वोपरि होता है क्योंकि राष्ट्र की सांविधानिक शक्ति जनता में अंतर्निहित होती है। इसलिये अन्य बातों के साथ-साथ यह जरूरी हो जाता है कि देश का राजकाज जनता की भाषा में हो। इसके लिए हमारे संविधान निर्माताओं ने बड़ी सूझ-बूझ के साथ संविधान में ऐसी व्यवस्था की जिसके अनुसार प्रत्येक राज्य अपना सरकारी कामकाज अपनी भाषा में करने का निर्णय ले सकें और संघ सरकार का कामकाज, हिंदी में किया जाये। इस बात पर जोर दिया गया कि हिंदी को इस प्रकार विकसित किया जाये कि वह सभी भाषाओं की शब्दावली और पदावली को अपने में समाहित करते हुये भारत की सामासिक संस्कृति का वाहक बन सके।

मैं "राजभाषा जागृति" के 14वें अंक हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं तथा कामना करता हूं कि पत्रिका "राजभाषा जागृति" इसी प्रकार अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

  
(प्रभास कुमार झा)



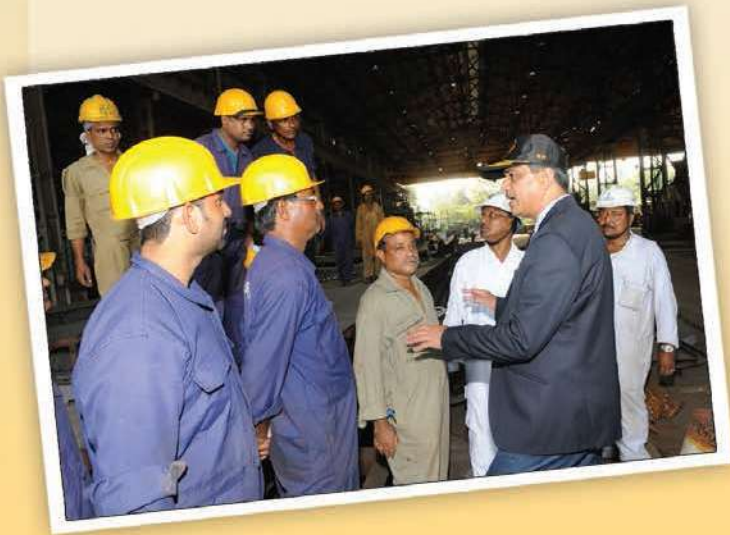
साथियों,

‘राजभाषा जागृति’ के माध्यम से आप सबके समक्ष अपने विचार रखने का मुझे यह अनुपम अवसर मिला है। मैं जीआरएसई के सभी कार्मिकों को शुभकामनाएँ देता हूँ। हम नए वित्तीय वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं और आने वाले वर्ष की नई आशाओं, नए लक्ष्यों, नई चुनौतियों का मिलकर सामना करते हुए हमें एकजुट प्रयासों से समय की मांग के अनुरूप आगे बढ़ना है। जीआरएसई लगातार चार वर्षों से सर्वश्रेष्ठ कार्यनिष्पादक रक्षा शिपयार्ड के अद्वितीय दर्जे पर है और हमें आगे भी इस गौरवशाली स्थिति को बनाए रखने के लिए दृढ़संकल्प होकर कार्य करना है।

जीआरएसई में राजभाषा अनुपालन के विषय में यह जानकर मैं अत्यन्त प्रसन्न और गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ कि हमारी कंपनी सर्वश्रेष्ठ शिपयार्ड होने के साथ साथ राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए भी लगातार कई वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर अपना कीर्तिमान स्थापित कर रही है। लगातार चौथी बार वर्ष 2015-16 के लिए कंपनी को भारत के माननीय राष्ट्रपति से मिले **राजभाषा कीर्ति पुरस्कार – प्रथम पुरस्कार** और साथ ही हिन्दी पत्रिका राजभाषा जागृति को मिले राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के लिए हमारा राजभाषा विभाग और कंपनी के सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं। हिन्दी पत्रिका राजभाषा जागृति के माध्यम से कार्मिकों व परिवार के सदस्यों की हिन्दी लेखन प्रतिभा तो विकसित हो ही रही है, साथ ही रचनाओं के माध्यम से यह पत्रिका कार्मिकों और उनके परिवारों को आपस में जोड़ने का काम भी बखूबी निभा रही है।

राजभाषा जागृति के इस 14वें अंक का विषय ‘वरिष्ठ नागरिक – हमारी धरोहर’ समाज के एक महत्वपूर्ण मुद्दे को उजागर कर रहा है। आज के बदलते हुए सामाजिक माहौल और मानवीय मूल्यों के भीतर हमें इस विषय पर गहन चिंतन करने और एक सकारात्मक सोच विकसित करने की आवश्यकता है।

आइए, हम सब मिलकर पूर्ण समर्पण और लगन के साथ कार्य करते हुए देश और समाज के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने में अपना भरपूर योगदान दें। पत्रिका के 14वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।



वी.के. सक्सेना

विपिन कुमार सक्सेना  
रियर एडमिरल, भा.नौ. (सेवानिवृत्त)  
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



साथियों,



‘राजभाषा जागृति’ का 14वां अंक पाकर मैं बेहद प्रसन्न हूँ। यह पत्रिका कंपनी में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने का अपना प्रमुख दायित्व अत्यंत सफलतापूर्वक निभा रही है, जिसका प्रमाण है, पत्रिका को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर मिलने वाले पुरस्कार और सम्मान। एक उत्पादन इकाई में कार्मिकों की रचनात्मक प्रवृत्ति को उभारना और उसे सकारात्मक रूप से प्रयोग में लाना अपने आप में एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिसे राजभाषा जागृति के माध्यम से हमारा राजभाषा विभाग बखूबी पूरा कर रहा है।

गत वर्षों की भांति यह वित्तीय वर्ष भी राजभाषा के प्रयोग की दृष्टि से अत्यंत सफल रहा। जीआरएसई को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर **राजभाषा कीर्ति पुरस्कार – प्रथम पुरस्कार** हासिल करना वास्तव में हम सभी के लिए गर्व और सम्मान की बात है। राजभाषा जागृति, जिसके अब तक के सभी अंक क्षेत्रीय स्तर पर पुरस्कृत किए जा चुके हैं, वर्ष 2015-16 के दौरान इसे राष्ट्रीय स्तर पर भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राजभाषा जागृति का यह 14वां अंक समाज और परिवार के वरिष्ठ वर्ग को समर्पित करते हुए ‘वरिष्ठ नागरिक – हमारी धरोहर’ रखा गया है। वरिष्ठ नागरिक समाज की अमूल्य निधि हैं, जिनके अनुभव न केवल जिंदगी की नई सीख देते हैं, अपितु हमारे परिवार और अंततः समाज को सही और गलत की पहचान कराते हैं।

प्रतिस्पर्धा के इस दौर में सफलता हासिल करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, टीमवर्क, अभिनव सोच और अपनी क्षमताओं के भरपूर प्रयोग की आवश्यकता है। आइए, हम सब मिलकर इस प्रतिस्पर्धात्मक युग की नित नई नई चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी कार्यकुशलता और विकसित सोच के साथ एकजुट होकर संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित ।



असित कुमार नंदा

असित कुमार नंदा  
निदेशक (कार्मिक)



साथियों,

पुस्तकें ज्ञान और जानकारी का आदान-प्रदान करती हैं, हमें अंधकार से निकालकर रोशनी की ओर ले जाती हैं। ये न केवल हमें जीने का साहस देती हैं बल्कि मानव को मानवता का एहसास करवाती हैं, हमें भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं और हमें वैयक्तिक स्तर पर एक दूसरे के करीब लाती हैं। हमारी 'राजभाषा जागृति' भी संगठन के भीतर कार्मिकों को हिन्दी लेखन का एक मंच प्रदान करते हुए पठन-पाठन के प्रति प्रेरित कर रही है और उन्हें आपस में जोड़ कर अपनी भूमिका का भलीभाँति निर्वाह कर रही है। आप सभी के सहयोग से राजभाषा जागृति का 14वां अंक भी सफलतापूर्वक प्रकाशित हो पाया है।

भारत सरकार का संगठन होने के नाते, संवैधानिक दृष्टि से सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करना हमारे लिए अपेक्षित है और यह हमारा दायित्व है। लेकिन भारत का नागरिक होने के कारण यह हमारा नैतिक दायित्व भी है कि हम हिन्दी का प्रयोग औपचारिकतावश नहीं बल्कि सहज रूप में करें और आम जन व्यवहार में हिन्दी को अपनाएं। हिन्दी अपने मानकीकरण और लचीलेपन के कारण सर्वाधिक स्वीकृत भाषा है, जो किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं अपितु एक ऐसी उदार भाषा है, जो सबको जोड़कर चलती है।

राजभाषा जागृति का 14वां अंक समाज के एक अत्यन्त अहम पहलू, वरिष्ठ नागरिकों पर आधारित है और इस महत्वपूर्ण वर्ग के प्रति दायित्वों को ध्यान में रखते हुए इस अंक का विषय 'वरिष्ठ नागरिक – हमारी धरोहर' रखा गया है। वरिष्ठ नागरिक, अर्थात् वह वर्ग जो आने वाली पीढ़ी को तैयार करने में, उसे आकार देने में सहयोग देता है, उनके अनुभव समाज को सही राह दिखाते हैं। पत्रिका के माध्यम से इस महत्वपूर्ण विषय पर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया गया है। पिछले अंकों की भांति इस अंक में भी जीआरएसई परिवार की ओर से उपर्युक्त विषय पर आधारित लेखों, कविताओं के अतिरिक्त तकनीकी, साहित्यिक, पर्यटन, स्वास्थ्य आदि विषयों पर भी लेख तथा कविताएँ समाहित की गई हैं। आशा है यह अंक भी आपको अवश्य पसंद आएगा।

सभी रचनाकारों के इस महत्वपूर्ण योगदान के लिए हृदय से आभार प्रकट करते हुए निवेदन है कि पत्रों/मेल के माध्यम से अपने सुझाव भेजते रहें, ताकि आगामी अंकों को और अधिक सुरुचिपूर्ण व लाभकारी बनाया जा सके।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।



सुनीता शर्मा

सुनीता शर्मा

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)



### वरिष्ठ नागरिक – हमारी धरोहर

**व**रिष्ठ का अर्थ है उच्च अनुभव प्राप्त और श्रेष्ठ। वरिष्ठ शब्द के इस अर्थ के अनुसार परिवार के वरिष्ठ सदस्य या देश के वरिष्ठ नागरिक से तात्पर्य उस सदस्य या नागरिक से है जो उच्चतम, श्रेष्ठतम और वरिष्ठ है। वह व्यक्ति परिवार और समाज की अमूल्य निधि है अर्थात् धरोहर है, जिनके भीतर अनुभवों का सागर समाया हुआ है। उन्होंने अपने जीवन काल में परिवार और समुदाय के विकास के लिए कड़ी मेहनत और त्याग किया है, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का उन्हें व्यापक अनुभव है जिससे समाज और देश लाभान्वित हो सकते हैं। जीवन की तीन अवस्थाओं अर्थात् - बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था में से वृद्धावस्था जीवन का अंतिम पड़ाव है। यह बुद्धिमत्ता, अपार अनुभवों, ज्ञान का भंडार और सही निर्णय लेने की गुणवत्ता वाली अवस्था है।

आज समाज में परिस्थितियाँ बदल रही हैं। मानव मूल्य, नैतिकता और मर्यादाओं का स्वरूप भी निरंतर बदल रहा है। पहले की तरह संयुक्त परिवार अब बहुत कम होते जा रहे हैं, उन का अस्तित्व विलीन होता जा रहा है। परिस्थितियों के अनुसार ज़्यादातर एकल परिवारों ने जगह बना ली है। जो रिश्ते पहले प्यार, विश्वास और अपनत्व पर टिके होते थे आज वे औपचारिकता की बुनियाद पर टिके हुए नजर आ रहे हैं। संयुक्त परिवारों के कारण बुजुर्गों की देखभाल बहुत ही अच्छे से होती थी और वे अपनों के बीच आने वाली पीढ़ियों के साथ रहते थे, उन्हें सद्भाव और प्रेरणा देते थे, उनके अनुभवों का न केवल सम्मान होता था बल्कि आने वाली पीढ़ियाँ उनके अनुभवों से लाभान्वित होती थीं, नई पीढ़ी के निर्माण में उनका बहुत योगदान होता था। घर के बच्चे भी अपने बुजुर्गों के साये में अच्छे संस्कारों में पलकर बड़े होते थे। बुजुर्गों को एकाकी, शून्य जीवन जीने को मजबूर नहीं होना पड़ता था। आज सम्बन्धों के संदर्भ बदल रहे हैं। आज आधुनिकतम सुख सुविधाएँ तो मौजूद हैं लेकिन शहरों की भागमभाग और व्यस्त जिंदगी ने भावनाएँ छीन ली हैं, संवेदनाएँ गुम हो चुकी हैं, उनका स्थान अब वेदनाओं ने ले लिया है, कई नई बीमारियों ने जन्म ले लिया है, जैसे तनाव, मधुमेह, अवसाद, दिल की बीमारियाँ, जिनका पहले नाम भी नहीं सुना था। इन बदली हुई परिस्थितियों का प्रभाव बच्चों के साथ साथ घर के बुजुर्गों पर भी पड़ रहा है। यह समस्या केवल उन बुजुर्गों तक सीमित नहीं है, जो अकेले रह रहे हैं बल्कि उनकी भी है, जो संयुक्त परिवार में रह रहे हैं, वे भी इस भागमभाग और व्यस्तता में समय के अभाव और ध्यान के अभाव में तिरस्कृत होने के कारण परिवार में होने के बावजूद भी एकाकी महसूस कर रहे हैं।

#### वरिष्ठ नागरिकों की समस्याएँ और कारण

● बुढ़ापे में व्यक्ति अकेला, निर्बल और अशक्त व असहाय हो जाता है। उनकी कार्य करने की क्षमता कमजोर होने के कारण अपने दैनिक कार्यों व भरण पोषण के लिए उनमें से अधिकांश को दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह निर्भरता उनकी समस्या का कारण बन जाती है। हालांकि, ऐसे बुजुर्ग भी हैं जो वित्तीय दृष्टि से आत्मनिर्भर हैं और शारीरिक

रूप से भी स्वस्थ हैं लेकिन एकाकीपन की समस्या उनके साथ भी है।

● प्रतिस्पर्धा के इस युग में अधिकांश युवा वर्ग की जिंदगी इतनी भागदौड़ भरी और व्यस्त हो गई है कि वह घर के बुजुर्गों को न तो समय दे पा रहा है और न ही उनके साथ कोई तालमेल बैठा पा रहा है, जिसके कारण बुजुर्ग बिलकुल उपेक्षित और असहाय महसूस कर रहे हैं। बुजुर्ग शिक्षित हो या अशिक्षित दोनों ही परिस्थितियों में कई परिवार उन्हें महत्वहीन समझने लगते हैं और कई तो उन्हें अपनी स्वतन्त्रता में बाधक मानते हैं। जबकि उन्होंने अपना सारा जीवन उनके विकास व भलाई में अर्पित किया होता है। इस कारण बुजुर्ग अकेलेपन का शिकार हो रहे हैं, अफसोस की बात है कि कुछ लोग तो उन्हें वृद्धाश्रमों में छोड़ने में भी संकोच नहीं करते, जब कि यह समय उन्हें मान सम्मान, आदर देने का और उन्हें आने वाली पीढ़ी के साथ शामिल कर रहने का है, उनके अनुभव से अपनी और आने वाली नई पीढ़ी के निर्माण व विकास का है।

● नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच एक अंतराल आ रहा है। नई पीढ़ी के अधिकतर लोगों के लिए धन का महत्व बढ़ गया है और वह इतनी स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित हो गई है कि उसके लिए घर के बुजुर्गों का महत्व उनकी धन दौलत और जमीन जायदाद के आधार पर तय होने लगा है। बुजुर्गों के साथ बैठना, उन्हें घर के निर्णयों में शामिल करना आज का कुछ युवा वर्ग गैरजरूरी समझता है। कई बार तो ऐसा होता है कि सुख सुविधाओं की सामग्री जुटाना कुछेक लोगों को घर के बुजुर्गों की दवाई और इलाज से अधिक महत्वपूर्ण लगता है। कई बार तो सुनने को मिलता है कि संतान बुजुर्गों से उनकी कमाई हुई दौलत छीन कर उन्हें एकाकी और असहाय जीवन जीने को विवश कर देती है।

● आज के समाज में संयुक्त परिवारों का विघटन बुजुर्गों की इस हालत के लिए एक महत्वपूर्ण कारण है। पति पत्नी दोनों रोजगार के लिए बाहर जा रहे हैं, ऐसे में एकल परिवार अधिक हो गए हैं अर्थात् पति-पत्नी और बच्चे। अधिकांश युवा वर्ग इनके अतिरिक्त किसी और सदस्य की ज़िम्मेदारी लेना अतिरिक्त बोझ समझता है, जब कि वह यह नहीं समझ रहा कि इन परिस्थितियों में उसके माता पिता उसके लिए कितने मददगार हो सकते हैं। बच्चों को दादा दादी के पास छोड़ने के बजाय वे उन्हें गैर हाथों में सौंप कर ज्यादा स्वतंत्र महसूस करते हैं। यही वजह है कि बच्चे न तो सुरक्षित हैं और न ही वे अपने बुजुर्गों से अच्छे संस्कार ही सीख पा रहे हैं, जिसके कारण एक ऐसी पीढ़ी उत्पन्न हो रही है जिसमें अपनी संस्कृति, अपनी विरासत, परिवार के प्रति आदरभाव जैसे गुणों का अभाव है और इस प्रकार ऐसी पीढ़ी जब बड़ी होगी तो वह कैसे बुजुर्गों और परिवार के वरिष्ठ सदस्यों के प्रति आदर सम्मान, त्याग व प्यार का भाव रख पाएगी। अतः पहले संयुक्त परिवारों में जहाँ एक साथ कई पीढ़ियाँ मिलकर सुख दुख बांटा करती थी वह भाव आज के समाज से लुप्त हो रहा है। मोबाइल, इन्टरनेट गेम आदि के अत्यधिक चलन ने भी इस अकेलेपन को बढ़ाया है। इसका प्रतिकूल असर केवल



बुजुर्गों पर ही नहीं, बल्कि आज की युवा पीढ़ी और बच्चों पर भी पड़ रहा है। एकल परिवारों के इस युग में बुजुर्ग अपने आप को अकेला महसूस कर रहे हैं, चिकित्सा और आपातकालीन स्थिति में उनकी सहायता करने के लिए कोई नहीं है। दूसरी ओर संयुक्त परिवारों में भी बुजुर्ग अपने ही घर में स्वयं को अजनबी सा महसूस कर रहे हैं, उनकी वृद्धावस्था के कारण बहुत से घरों में न केवल उन पर ध्यान ही नहीं दिया जाता अपितु उन्हें दुत्कारा तक जाता है, वे घुटन भरे माहौल में जीने को मजबूर हैं, उनकी गरिमा का अधिकार उनसे छीना जाता है।

### वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण हेतु प्रमुख सरकारी नीतियां और योजनाएं

वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं के विषय में परिवार, समाज और सरकार, सभी को मिलकर विचार करने और इसका समाधान करने की आवश्यकता है। भारत सरकार भी इस संबंध में अति संवेदनशील है और इन समस्याओं को गंभीरता से ले रही है। विभिन्न स्तरों पर भारत सरकार की अनेक योजनाएं व नीतियां कार्यरत हैं, जिनका प्रयोजन उन्हें बेहतर, शान्तिमय और वित्तीय दृष्टि से सुदृढ़ जीवन प्रदान करना है। इनके हितों और कल्याण हेतु नोडल मंत्रालय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय है। कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है:

#### सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय

❖ **वयोवृद्ध लोगों से संबंधित राष्ट्रीय नीति, 1999** - केंद्र सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों के आरोग्यता और कल्याण हेतु वर्ष 1999 में राष्ट्रीय नीति तैयार की। इस नीति का उद्देश्य व्यक्तियों को स्वयं के लिए तथा उनके पति या पत्नी के बुढ़ापे के लिए व्यवस्था हेतु प्रोत्साहित करना है। इसमें परिवारों को अपने परिवार के वृद्ध सदस्यों की देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करने का भी प्रयास किया जाता है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य वृद्ध व्यक्तियों को पूरी तरह से आत्मनिर्भर नागरिक बनाना, वित्तीय सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और पौष्टिकता, आश्रय, उचित रियायतों आदि में सहायता प्रदान करना, अस्पतालों में वृद्ध रोगियों के लिए पृथक लाइनों और शैया के आरक्षण की व्यवस्था, वरिष्ठ नागरिकों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा जैसे उनके कानूनी अधिकारों की रक्षा करना और इन्हें मजबूत बनाने पर विशेष ध्यान देना है। इस नीति को कार्यान्वित करने के लिये 22 मंत्रालयों/विभागों को शामिल कर अंतः मंत्रालय समिति भी गठित है।

❖ **व्योश्रेष्ठ सम्मान** - विख्यात वरिष्ठ नागरिकों और संगठनों को वृद्ध लोगों के हित में योगदान हेतु प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

❖ **वृद्ध व्यक्तियों के लिए एकीकृत कार्यक्रम** - एक ऐसी योजना है जिसमें गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) को परियोजना लागत की 90% तक की राशि की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। यह राशि वृद्धाश्रम, चलते-फिरते चिकित्सा यूनिट स्थापित करने व उनके रखरखाव, हेलपलाइन, फिजियोथैरेपी केन्द्र, मानसिक स्वास्थ्य देखभाल,

वृद्ध व्यक्तियों की अन्य जरूरतों जैसे कि परिवार को प्रबलित और सुदृढ़ बनाना, संबंधित मुद्दों पर जागरूकता लाना और बुढ़ापे को खुशहाल बनाना आदि को पूरा करने के लिए भी कार्य करती है।

❖ **माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों का अनुरक्षण एवं कल्याण अधिनियम, 2007**- बुजुर्गों के कल्याण को ध्यान में रखते हुए सरकार ने अधिनियम लागू किया। अधिनियम में 'कल्याण' से वरिष्ठ नागरिकों के लिए आवश्यक आहार, स्वास्थ्य देख रेख, आमोद प्रमोद केंद्रों और अन्य सुख सुविधाओं की व्यवस्था करना अभिप्रेत है। इसमें माता-पिता के भरण-पोषण, वृद्धाश्रमों की स्थापना, चिकित्सा सुविधा की व्यवस्था और वरिष्ठ नागरिकों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा का प्रावधान किया गया है। यह अधिनियम अन्य बातों के साथ, न्यायाधिकरणों के जरिए बाध्यकारी एवं न्यायोचित बनाकर बच्चों/रिश्तेदारों द्वारा माता-पिता/वरिष्ठ नागरिकों का अनुरक्षण, रिश्तेदारों द्वारा अनदेखी के मामले में वरिष्ठ नागरिकों द्वारा संपत्ति के अंतरण के निरसन, वरिष्ठ नागरिकों के परित्याग के लिए जुर्माने के प्रावधान तथा वरिष्ठ नागरिकों के जीवन एवं संपत्ति की सुरक्षा जैसा संरक्षण उपलब्ध कराता है। कानून में माता-पिता/दादा-दादी को उनके बच्चों से आवश्यकतानुसार गुजारा भत्ता दिलवाने व वरिष्ठ नागरिकों के जान-माल की सुरक्षा, बेहतर चिकित्सा सुविधाओं और हर जिले में वृद्ध सदनों की स्थापना जैसी व्यवस्थाएं हैं। कानून के बारे में पूरी जानकारी न होने और विभिन्न क्षेत्रों पर ठीक तरह से कानून लागू न होने के कारण बड़ी संख्या में वृद्ध जन इस कानून के अंतर्गत मिलने वाले लाभ प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं।

#### ग्रामीण विकास मंत्रालय

❖ **राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना** - गरीबी रेखा से नीचे के लोगों के लिए राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना चलाई जा रही है।

❖ **अन्नपूर्णा योजना** - गरीबी रेखा के नीचे के वरिष्ठ नागरिकों को 10 किलोग्राम अनाज मुफ्त दिया जाता है।

#### स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

❖ **वृद्ध देखभाल केन्द्रों की स्थापना** - केन्द्र सरकार ने वृद्धजनों की स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाने के लिए 'राष्ट्रीय वृद्धजन स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम' (एनपीएनसीडी) को मंजूरी दी है। ये वृद्धजन देखभाल केन्द्र जिला अस्पतालों में खोले जाएंगे। इनकी स्थापना सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर भी की जाएगी।

❖ अस्पतालों एवं स्वास्थ्य देखभाल केन्द्रों में वरिष्ठ नागरिकों के लिए अलग से लाइनों की व्यवस्था।

❖ **केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना** केंद्रीय सरकार के पेंशन भोगियों को पुरानी बीमारियों के इलाज की सुविधा प्रदान करती है।

❖ **राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम** में एल्जाइमर और अन्य विक्षिप्तियों, पार्किन्सन रोग, अवसाद और वृद्धावस्था मनोविकार रोग



से ग्रस्त वरिष्ठ नागरिकों की जरूरतों पर ध्यान दिया जाता है।

- कुछ राज्य सरकारों ने सरकारी अस्पतालों में वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष क्लिनिकों की स्थापना है।

### गृह मंत्रालय

- सरकारी सहायता प्राप्त विभिन्न योजनाओं तक इनकी पहुंच बनाने के लिए वरिष्ठ नागरिकों को स्मार्ट परिचय पहचान पत्र।

- राज्य सरकारों को जिम्मेदारी दी है कि वे वरिष्ठ नागरिकों के जीवन और सम्पत्ति की सुरक्षा करने और उनके विरुद्ध अत्याचार और दुर्व्यवहार रोकने के लिये कार्य योजना बनाएं तथा सहायता के लिये टोल फ्री नम्बर स्थापित करें।

### श्रम एवं रोजगार मंत्रालय

- गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले वरिष्ठ नागरिकों को राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत बीमा सुरक्षा। इसका मकसद गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों को 30 रुपए रजिस्ट्रेशन के आधार पर एक वर्ष में 30 हजार रुपए तक की स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है। पुरानी चिकित्सा व्याधियों का इसके तहत उपचार किया जाता है।

### कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय

- वरिष्ठ नागरिकों के पेंशन प्रोसेस, सेवानिवृत्ति फायदों, आरबीआई मार्गनिर्देशों, लाइफ सर्टिफिकेट आदि के सम्बंध में त्वरित समाधान और मॉनिटरिंग हेतु ऑन लाइन कम्प्यूटरीकृत प्रणाली विकसित की है।

- अनुभव – यह वरिष्ठ नागरिकों को अपने सेवाकाल के दौरान प्राप्त महत्वपूर्ण उपलब्धियों को दर्शाने का एक मंच है।

- संकल्प – यह एक ऐसी पहल है जो समाज में उनके योगदान हेतु अवसर उपलब्ध कराती है।

**वरिष्ठ नागरिकों के लिए अदालतों में छूट/सुविधाएं** - वृद्धजनों से संबंधित केसों को प्राथमिकता और उनका त्वरित निपटारा सुनिश्चित करना।

**सूचना का अधिकार कानून (आरटीआई कानून)** - वरिष्ठ नागरिकों की ओर से आरटीआई कानून के तहत अपीलों की सुनवाई उच्च प्राथमिकता के आधार पर।

### वित्त मंत्रालय

- वरिष्ठ नागरिकों के लिए टैक्स में विशेष छूट तथा अन्य प्रावधान।

- वर्तमान घोषित केन्द्रीय बजट में सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों को 10 वर्ष के लिए 8% गारंटी पेंशन का प्रावधान सुनिश्चित करते हुए वरिष्ठ पेंशन बीमा योजना को मंजूरी दी है।

- स्वास्थ्य बीमा योजना

- सैक्शन 80डी के अंतर्गत वरिष्ठ नागरिक माता-पिता के लिये मेडिकल इश्योरेंस प्रीमियम पर 30000/-रुपए की छूट

- वरिष्ठ नागरिकों को उनकी बचतों पर अधिक ब्याज दर

- कम बैंकिंग शुल्क

### उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग

- अंत्योदय योजना के तहत इस बात पर जोर देना कि वृद्ध व्यक्तियों, खासकर जो विस्थापित हैं, कमजोर वर्गों से संबंध रखते हैं, के कल्याण के लिए सस्ती दरों पर भोजन की व्यवस्था करना।

### रेल मंत्रालय

- किराए में 60 वर्ष की आयु के पश्चात पुरुषों को 40% और 58 वर्ष की आयु के पश्चात महिलाओं को 50% छूट

- वरिष्ठ नागरिकों के लिए अलग काउंटर

- स्टेशनों पर व्हील चेयर की व्यवस्था

- वरिष्ठ नागरिकों के लिये लोअर बर्थ की सुविधा

### विमान यात्रा

- इंडियन एयरलाइंस की साधारण श्रेणी के किराए में 40 से 50 प्रतिशत छूट। अन्य विमान सेवाओं द्वारा भी छूट।

### सड़क यातायात

- विभिन्न राज्य परिवहन निगमों में आरक्षण एवं छूट।

- सरकारी बसों में कुछ सीटें वरिष्ठ नागरिकों के बैठने के लिए आरक्षित रखी जाती हैं।

**डीटीसी** द्वारा वरिष्ठ नागरिकों के लिये 50/-रुपए में ऑल रूट पास की सुविधा है।

**भारतीय जीवन बीमा निगम** द्वारा जीवन धारा योजना, जीवन अक्षय योजना, सीनियर सिटिजन यूनिट योजना, मेडिकल इश्योरेंस योजना जैसी अनेकों योजनाएं बुजुर्गों के हितों का ध्यान रखते हुए चलायी जा रही हैं।

**एमटीएनएल** द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को किराए में 25% की छूट की व्यवस्था है।

**एमसीडी**, दिल्ली द्वारा सम्पत्ति कर बिलों के भुगतान के लिये पृथक काउंटर तथा सम्पत्ति कर में छूट की सुविधा है।

**संचार विभाग** भी वरिष्ठ नागरिकों की शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई तथा उन्हें विशेष केटेगरी में टेलिफोन सुविधा प्रदान करता है।

बहुत से गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) इस दिशा में कार्य कर रहे हैं, जिनमें प्रमुख रूप से **'हेल्पेज इंडिया'** का नाम लिया जा सकता है जो बुजुर्गों के अकेलेपन, गरीबी और परिवार से अलगाव किए जाने पर कार्य करने वाली विख्यात चैरिटी संस्था है। इन्होंने बुजुर्गों के लिए एक सुरक्षा एप भी जारी किया है।

इसके अतिरिक्त **'प्रणाम'** इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है जो कोलकाता पुलिस, द बंगाल और डिगनिटी फाउंडेशन की एक संयुक्त



पहल है। इसके अंतर्गत बालीगंज पुलिस स्टेशन के समीप एक स्थायी कार्यालय स्थापित किया गया है, जो वरिष्ठ नागरिकों का डाटा बेस तैयार करने का कार्य कर रहा है। यह कार्यालय 24 घंटे वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर ध्यान देता है।

मुंबई पुलिस एल्डर हेल्पलाइन और एम्बुलेस सेवा के जरिए वरिष्ठ नागरिकों हेतु कार्यरत है। मुंबई पुलिस की पहल पर वरिष्ठ नागरिक 1298 पर अपनी कानूनी, वित्तीय और चिकित्सा समस्याओं के लिए संपर्क कर सकते हैं।

भारत सरकार वरिष्ठ नागरिकों को आधार आधारित स्मार्ट कार्ड देने की योजना शुरू करेगी जिसमें उनके स्वास्थ्य संबंधी ब्यौरा होगा।

**नेशनल काउंसिल फॉर सीनियर सिटिजन** भी वरिष्ठ नागरिकों के हितों के लिये अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। वह इस संबंध में सरकारी नीतियों और उनके कार्यान्वयन की फीड बैक देने के साथ साथ वरिष्ठ नागरिकों के जीवन को उत्पादक, गुणवत्तापूर्ण व आनंददायक बनाने के लिये उपाय सुझाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त और भी अनेक ऐसी योजनाएं हैं, जो केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा वरिष्ठ नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने के लिये लागू की हुई हैं। लेकिन इन योजनाओं के साथ साथ आवश्यकता है समाज को सम्वेदनशील बनाए जाने की। वरिष्ठ नागरिकों के प्रति अमानवीय व्यवहार अत्यधिक चिंता का विषय है और यह समस्या व्यापक रूप से पूरे विश्व में फैल रही है। इस समस्या और इस अमानवीयता पर विचार करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1 अक्टूबर को 'अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया ताकि वर्तमान पीढ़ी को उनकी इस जिम्मेदारी के प्रति अहसास दिलवाया जा सके और समाज को इसके प्रति जागरूक किया जा सके।

प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह सुनिश्चित करे कि हमारे वरिष्ठ नागरिक एक प्रसन्न, स्वस्थ और सुरक्षित जीवन बिताएं। उन्होंने हमारे बचपन से बड़े होने तक हमारी देखभाल की है और हमें बड़ा किया है अतः सभी को मिलजुल कर वरिष्ठ नागरिकों को सहारा देने की जरूरत है। परिवार को चाहिए कि वे बुजुर्गों का ऐसा सहारा बनें ताकि उन्हें बुढ़ापा अभिशाप नहीं बल्कि अनुभवों का खजाना महसूस हो। ऐसे लोग खुशनसीब होते हैं जिनके सिर पर बुजुर्गों का साया रहता है। हमें अपने बुजुर्गों की सेवा करनी चाहिए ताकि हमारे बच्चों में भी ऐसे संस्कार आएँ। बच्चों के स्कूली पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा भी शामिल की जानी चाहिए और यह नैतिक शिक्षा परंपरागत बातों और रूढ़ियों के बजाए ऐसी होनी चाहिए जिसमें समूचे समाज और सारी मानवता के प्रति बच्चों में संवेदनशीलता विकसित हो। बचपन में श्रवण कुमार की कहानी पढ़ाने के पीछे मंशा यही होती थी कि बच्चों में माता पिता के प्रति सम्मान और त्याग व सेवा का भाव हो। अब फिर से वह समय आ गया है कि बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जाए। हम स्वयं भी छोटी छोटी बातों का ख्याल रख कर अपने बुजुर्गों को प्रसन्न रख सकते हैं :

❁ घर में हमेशा उन्हें सम्मान दें और घर के हर फैसले में उनकी सलाह लें।

❁ उनके साथ भोजन करें। उनकी बातें ध्यान से सुनें, कभी कभी उनसे उनके जीवन के पुराने किस्से सुनें, उनकी सराहना करें।

❁ उन्हें उनके पुराने मित्रों, सम्बंधियों से मिलवाने ले जाएं या उनके नजदीकियों को आमंत्रित करें।

❁ यदि आप किसी कारणवश परिवार के बुजुर्ग से दूर रहते हों तो उनसे फोन पर बात करें, आजकल संचार सुविधा अत्यधिक आधुनिक हो गई है, उन्हें उसके बारे में जानकारी दें और प्रयास करें कि उनसे स्काइप आदि वीडियो पर बात करें।

❁ यदि आपके घर में कोई बुजुर्ग नहीं है तो कभी कभी वृद्धाश्रम में बुजुर्गों के साथ समय बिताएं अथवा अपनी सोसाइटी या आस पड़ोस के बुजुर्गों के लिये कोई कार्यक्रम रखें।

❁ बुजुर्गों को कोई उपहार दें, उनका जन्मदिन मनाएं।

❁ उन्हें घर के हर उत्सव में शामिल करें।

❁ बुजुर्गों को गले लगाएं, इससे न केवल उन्हें अपनेपन का अहसास होगा अपितु उनका तनाव कम होगा और उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

❁ बच्चों को घर के बुजुर्गों के सम्पर्क में रखें, इससे बुजुर्गों को तो अत्यधिक प्रसन्नता मिलती है, साथ ही बच्चे भी उनके सम्पर्क में रिश्तों की मधुरता, मजबूती और संस्कार सीखते हैं।

❁ समाज व परिवारों में बुजुर्गों की समस्याओं और बीमारियों से निपटने के संबंध में जागरूकता लाएँ।

❁ बच्चों को ओल्ड एज होम ले जाकर बुजुर्गों के संपर्क में लाया जाए। उनकी पाठ्य पुस्तकों में ऐसे चैप्टर रखे जाएँ जिनमें बुजुर्गों के सम्मान संबंधी सीख मिले क्योंकि इन समस्याओं का निदान केवल नए कानून लागू करने से नहीं हो सकता।

बदलते सामयिक परिदृश्य और चिकित्सा जगत में आई क्रान्ति के कारण अब जीवन आयु में वृद्धि और मृत्यु दर में कमी आई है। वृद्ध लोगों की जीवनचर्या भी काफी बदली है। वे अब पहले से अधिक सक्रिय, ऊर्जावान तथा स्वस्थ हैं। आज इस बात की आवश्यकता है कि सभी स्तर पर उनके लिए अच्छे अवसर पैदा किए जाएँ, ताकि वे समाज में अपनी सक्रिय भूमिका अदा कर सकें। ऐसे में उन्हें पूर्ण सम्मान तथा उनके स्वास्थ्य की देखभाल सुनिश्चित करना आवश्यक है। बुढ़ापा जीवन का अटूट सत्य है और यह बात हमें ध्यान में रखनी चाहिए कि हम सभी को इसका सामना करना है, सभी को युवावस्था के बाद वरिष्ठ नागरिक की श्रेणी में आना है, तो क्यों न हम इसे बेहतर बनाने के लिये अपनी आने वाली पीढ़ियों को तैयार करें, जिससे कि एक खूबसूरत समाज का निर्माण हो।

**सुनीता शर्मा**

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)



## मारिन, नीदरलैंड में पी-17ए का मॉडल परीक्षण

**जी**आरएसई को प्रतिष्ठित पी 17ए परियोजना दी गई है, ये भारतीय नौसेना के फ्रंट लाइन युद्धपोत होंगे। डी-प्रेसराइज्ड टोइंग टैंक में मॉडल परीक्षण किया जाना अपेक्षित था, अतः जीआरएसई ने मारिन, नीदरलैंड के साथ संपर्क किया क्योंकि यह सुविधा मारिन, नीदरलैंड में ही उपलब्ध है।

मारिन अर्थात मेरिटाइम रिसर्च इंस्टीट्यूट नीदरलैंड्स की स्थापना 1929 में नीदरलैंड्स में शिप मॉडल बेसिन (NSMB) के रूप में की गई। मारिन को हाइड्रोडायनेमिक अनुसंधान – पावरिंग परफोर्मेंस, सी कीपिंग, मेनुअरिंग एवं केवितेशन क्षेत्रों में अग्रणी के रूप में माना जाता है। वहाँ 7 परीक्षण सुविधाएं हैं और उसमें 300 कर्मचारी हैं। उनके पास एक अपतटीय (Offshore) परीक्षण की सुविधा भी है जो 3000 मी गहराई (प्रोटोटाइप) तक मॉडल परीक्षण करने में सक्षम है।

यहाँ यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है, कि मारिन ऐसा संस्थान है, जिसने विख्यात प्रोपेलर डिजाइन श्रृंखला “Wageningen B-Series Propeller” विकसित की है, जिसे विश्वभर में प्रोपेलर ज्यामिति की डिजाइनिंग के लिए नेवल आर्किटेक्टों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।

मॉडल परीक्षण के दौरान, हमने मारिन में विभिन्न



“Wageningen B-Series Propeller”  
का मॉडल

सुविधाओं (Establishments) के प्रयोजनों, लेआउट और कामकाज को देखा और इनके बारे में चर्चा की। यह देखा गया है कि प्रत्येक सुविधा मॉडल परीक्षण के खास पहलू के लिए कार्य करती है। विभिन्न सुविधाओं में पी 17ए मॉडल के

निम्नलिखित परीक्षण किए गए :

### क) प्रतिरोध परीक्षण (Resistance Test)

प्रतिरोध परीक्षण एवं 3डी वेक सर्वेक्षण विभिन्न गतियों में पी 17ए के लिए अपेक्षित प्रतिरोध और शक्ति (Power) का आकलन करने के लिए किया गया। 3डी वेक सर्वेक्षण परिणाम प्रोपेलर की ज्यामिति (Geometry) की डिजाइनिंग के लिए इनपुट के रूप में प्रयोग किया जाता है।

परीक्षण, मारिन की डीप वॉटर टोइंग टैंक सुविधा



डीप वॉटर बेसिन में परीक्षण

में किया गया। डीप वॉटर टोइंग परीक्षण सुविधा 252 × 10.5 × 5.5 मीटर आकार में है और मॉडल गति 9 मी. प्रति सेकेंड तक मॉडल का परीक्षण किया जा सकता है।

### ख) फ्री सेलिंग मेन्यूवरिंग (Maneuvering) परीक्षण एवं बाधित मेन्यूवरिंग परीक्षण

विभिन्न सेंसर (Sensor) एवं प्रोब (Probe) के साथ फिट किए हुए पी 17ए के मॉडल का परीक्षण फ्री सेलिंग (सेल्फ प्रोपेल्ड) की विभिन्न गति पर शांत पानी में सी कीपिंग और मेन्यूवरिंग बेसिन सुविधा में किया गया। जिगज़ैग, टर्निंग सर्कल व बाधित परीक्षण तथा पुल आउट परीक्षण किए गए ताकि पोत की विचलन जांच और अपने कोर्स

को बदलने व उसे मोड़ने की क्षमता का निर्धारण किया जा सके।

### ग) सी कीपिंग (Sea Keeping) परीक्षण

पोत की विशेषता (Characteristics) जैसे उसकी गति प्रतिक्रियाओं (रोल, पिच, हीव आदि), विभिन्न समुद्री स्थितियों में पोत प्रचालन गति की रेंज पर उसकी स्थिरता प्रतिक्रिया (Motion Response) एवं रडर (Rudder), स्लैमिंग फोर्स जांच करने के लिए सी कीपिंग परीक्षण सी कीपिंग और

मेन्यूवरिंग बेसिन सुविधा में किया गया। बेसिन का आकार 170 × 40 × 5 मीटर है। बेसिन में पोत की लम्बाई की दिशा में (Longitudinal) और पोत की चौड़ाई की दिशा में (Transverse) लहर



पी 17ए मॉडल वाहन (Carriage) में,  
एसएमबी, मारिन



उत्पन्न करने वाले पेडलों (फ्लैप्स) के कारण समुद्री अवस्था उत्पादित करने की क्षमता है।

### घ) डी-प्रेसराइज्ड वेव बेसिन

डी-प्रेसराइज्ड वेव बेसिन अद्वितीय अनुसंधान सुविधा है, जिसमें सबसे वास्तविक (स्केल्ड) परिचालन स्थिति में परीक्षण हो सकता है। प्रोपेलर केविटेशन और हल प्रेशर परीक्षण डी-प्रेसराइज्ड परिस्थिति में किया जाता है।

मॉडल स्केल अनुमानतः 1:40 है। केविटेशन (Cavitation) के लिए, समानता नियम (Law of similarity) के अनुसार टैंक में हवा का दबाव मॉडल स्केल के विपरीत (Inverse) तक कम किया जाना चाहिए अर्थात् आस पास के वातावरण में 1 यूनिट का दबाव 1/40 तक कम किया जाएगा। परीक्षण टैंक का 2500 पीए तक डी-प्रेसराइज्ड (वायुमंडलीय दबाव = 101325 पीए) (Pascal) किया जा सकता है।

पी 17ए पोत के केविटेशन परीक्षणों के लिए प्रेशर पल्स माप, वार्टसिला और रोल्स रॉयस के डिजाइन प्रोपेलर के थ्रस्ट ब्रेकडाउन परीक्षण डी-प्रेसराइज्ड वेव बेसिन में किए गए, जो सबसे अधिक वास्तविक (स्केल्ड) परिचालन परिस्थिति प्रदान करता है।

अन्य सुविधाएं जिनका हमने दौरा किया, वे थीं अपतटीय (ऑफशोर) बेसिन, उथले पानी (Shallow Water) बेसिन और ब्रिज सिमुलेटर।

उपरोक्त सभी परीक्षण पोत मॉडल के कार्य निष्पादन की जांच करने के लिए भिन्न भिन्न समुद्री अवस्थाओं और गतियों (Speeds) में किए गए, जो पोत के हल फोर्म (Hull Form) तथा उसके प्रोपेलर लक्षणों का निर्धारण करने व विभिन्न प्रचालन रेंज में उसकी प्रतिक्रिया को देखने के लिए बहुत उपयोगी थे। यह इस बात की पुष्टि करता है कि ये हल फोर्म एवं प्रोपेलर बाकी अपेंडेजेस (Appendages) के साथ अलग अलग मैन्यूरिंग एवं समुद्री परिस्थितियों में प्रचालन करने की क्षमता रखता है।



वेव जेनरेटिंग पैडल एसएमबी का लेआउट



पी 17ए मॉडल वाहन (Carriage) में एसएमबी, मारिन



डी-प्रेसराइज्ड वेव बेसिन

मारिन सुविधाओं की विजिट और विशेषज्ञों के साथ विचार विमर्श से हमें पोत व्यवहार के बारे में विस्तार से जानने में मदद मिली और साथ ही विविध परीक्षण पद्धतियों, विविध समुद्री लोड का प्रभाव, मॉडल परीक्षण के दौरान पोत का प्रदर्शन

और प्रतिक्रिया के प्रभाव के बारे में बेहतर ढंग से समझने में भी मदद मिली।

**संजीव कुमार**

उप प्रबन्धक (डी)(एच)  
सीडीओ, 61 पार्क यूनिट



### गोलियथ क्रेन / Goliath Crane

#### क्रेन एक परिचय

क्रेन एक प्रकार की मशीन है, जो सामग्री को उठाने और उतारने के अलावा क्षैतिज स्थानांतरित करने के लिए उपयोग की जाती है। यह मुख्य रूप से भारी सामग्री उठाने और उन्हें अन्य स्थानों पर परिवहन करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। क्रेन आमतौर पर माल की आवाजाही के लिए और भारी उपकरणों के संयोजन के लिए एवं निर्माण उद्योग में लदान और माल ढुलाई के लिए इस्तेमाल में आती है।

- \* क्रेन डिजाइन करते वक्त तीन प्रमुख चीजों पर विचार किया जाता है। सबसे पहले, क्रेन लोड का वजन उठाने में सक्षम होनी चाहिए; दूसरा क्रेन पलटनी नहीं चाहिए; तीसरा क्रेन टूटनी नहीं चाहिए।
- \* वर्तमान में कई प्रकार की क्रेन उद्योग, निर्माण एवं माल ढुलाई में इस्तेमाल की जा रही हैं, इनमें से कुछ नाम निम्नलिखित हैं:-

1. टावर क्रेन
2. इ ओ टी क्रेन
3. मोबाइल क्रेन
4. क्रौलर क्रेन
5. गेंट्री क्रेन .... आदि आदि

आज हम बात करेंगे गेंट्री क्रेन के बारे में जिसे गोलियथ क्रेन भी कहा जाता है। गोलियथ नाम इसके विशाल आकार के कारण पड़ा। जीआरएसई में भी कई प्रकार की क्रेनों का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें से एक क्रेन गोलियथ क्रेन है, जिसकी चर्चा हम करेंगे। इस क्रेन के बारे में जानना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि यह जीआरएसई में सबसे बड़ी एवं सबसे ज्यादा क्षमता (250 टन) की क्रेन है।

- \* इस क्रेन को फिनलैंड की कंपनी KONE CRANES ने मुख्य तौर पर डिजाइन किया है। इसमें लगने वाले इलैक्ट्रिकल उपकरण SIEMENS, जर्मनी के हैं। आइए, इसकी कुछ तकनीकी विशेषताओं को जानें:

- कुल लिफ्ट क्षमता (Safe working load): 250 टन
- यात्रा की गति: 0.40m / मिनट
- बिजली की आपूर्ति: 3 फेज, 6 के वी, 50 हर्ट्ज
- गेंट्री स्पैन: 116 मी.
- अपर ट्राली उत्थापन क्षमता: 250 टन

- निचली ट्राली उत्थापन क्षमता: 125 टन
- औक्जिलियरी ट्राली उत्थापन क्षमता: 25 टन
- सेवा क्रेन (Service Crane) उत्थापन क्षमता: 6.3 टन
- कुल लम्बाई: 66 मी
- गेंट्री में लगी कुल मोटर : 24 - प्रत्येक की क्षमता 45 के डब्ल्यू
- उपर ट्रॉली में लगी कुल मोटर: 04 - प्रत्येक की क्षमता 37 के डब्ल्यू
- निचली ट्रॉली में लगी कुल मोटर: 04 - प्रत्येक की क्षमता 30 के डब्ल्यू
- यात्री लिफ्ट क्षमता : 200 किलो (रैक एंड पिनिनयन टाइप)
- कुल इलैक्ट्रिक लोड : 1.25 एम डब्ल्यू
- कुल दूरी की यात्रा : 200 मीटर

#### आइए, हम गोलियथ (Goliath) क्रेन के कुछ प्रमुख भागों पर चर्चा करते हैं

1. **मुख्य गर्डर (Main Girder)** - मुख्य गर्डर एक बॉक्स के रूप में स्टील का स्ट्रक्चर है, जो फिक्स्ड लेग एवं हिन्ज लेग से जुड़ा हुआ है। इसके ऊपरी हिस्से पर अपर ट्रॉली एवं निचले हिस्से पर लोअर ट्रॉली है। इसी स्ट्रक्चर के साथ ऑपरेटर कैबिन भी जोड़ा हुआ है।

मुख्य गर्डर का एक छोर एक लेग से वेल्ड कर फिक्स कर दिया है, जिसके कारण इस लेग को फिक्स्ड लेग कहते हैं, मुख्य गर्डर का दूसरा छोर दूसरे लेग के साथ Pivots द्वारा Hinge equalizing विधि से जोड़ा है। इस लिए इसे हिन्ज लेग भी कहते हैं।

2. **ऊपरी ट्रॉली (Upper Trolley)** - ऊपरी ट्रॉली मुख्य गर्डर के शीर्ष पर, दो रेल की सहायता से चलती है। ऊपरी ट्रॉली के नीचे चार डबल चक्र बोगियां हैं। प्रत्येक बोगी एक धुरी पिन से ऊपरी ट्रॉली संरचना से जुड़ी हुई है। यह सुनिश्चित करता है कि लोड समान रूप से प्रत्येक कोने में चार पहियों के बीच वितरित हो सके। ऊपरी ट्रॉली को चलाने के लिए 04 - 37 KW की मोटर लगी हुई हैं, जिसकी सप्लाय ई-हाउस (E-House) से प्राप्त होती है। ऊपरी ट्रॉली में उत्थापन (hoisting) करने के लिए 315 KW की दो मोटर हैं, जिसकी सहायता से यह 250 टन वजन उठाती है।





3. **लोअर ट्रॉली (Lower Trolley)** - लोअर ट्रॉली मुख्य गर्डर के तल पर तय रेल के साथ चलती है। लोअर ट्रॉली को चलाने के लिए 04-30 KW की मोटर लगी हुई है, जिसकी सप्लाय ई-हाउस (E-House) से प्राप्त होती है। लोअर ट्रॉली में उत्थापन (Hoisting) करने के लिए 2315 KW की एक मोटर एवं 90KW की एक मोटर है, जिसकी सहायता से 125 टन एवं 25 टन क्षमता का वजन उठाया जाता है।
4. **गैन्ट्री लंबी यात्रा बोगियां (Gantry Long Travel Bogie)**- गैन्ट्री बोगियां क्रेन के पहियों द्वारा रेल पर चलती हैं। क्रेन के वजन का समर्थन करने के लिए प्रत्येक बोगी में आवश्यक पहियों की संख्या इसकी लंबाई की जरूरत के अनुसार है। गैन्ट्री बोगियों में दोनों तरफ 12-12 संख्या में 45 KW की मोटर लगी हुई है, जो पूरी क्रेन को चलाने के काम में आती है।
5. **सेवा क्रेन (Service Crane)**- एक अलग सेवा क्रेन तय फ्रेम के ऊपर मुख्य गर्डर के अंत में शीर्ष पर लगी हुई है। यह शीर्ष पर एक क्षैतिज बूम और एक काउंटर वजन के साथ एक छोटे से स्तंभ पर है। इसके वजन उठाने की क्षमता 6.3 टन है। जमीन स्तर से कोई चीज ऊपरी ट्रॉली पर ले जाने में इसका इस्तेमाल होता है।
6. **ई-हाउस (E-House)** - ई हाउस, मुख्य गर्डर के अंदर स्थापित है। इसे ई-हाउस कहने का तात्पर्य यह है कि इसमें इलैक्ट्रिकल और इलैक्ट्रॉनिक्स के उपकरण लगे हुए हैं। पूरी क्रेन में पावर की सप्लाय यहीं से होती है। ई-हाउस में 6 KV पावर प्राप्त होती है जिसे 470 V तथा 445 V में ट्रांसफोर्मर की मदद से पावर में बदला जाता है। इस पावर को ड्राइव में फीड किया जाता है, जिसकी मदद से सभी मोटरों को पावर सप्लाय प्रदान की जाती है। ई-हाउस में PLC तथा VVVF ड्राइव लगे हुए हैं, जिसकी मदद से क्रेन की हर मोटर की गति का नियंत्रण होता है।
7. **ऑपरेटर कैबिन (Operator Cabin)** - यह मुख्य गर्डर से जुड़ा हुआ है। ऑपरेटर कैबिन से पूरी क्रेन का संचालन होता है। क्रेन चालक कैबिन में बैठ कर ग्राउंड स्टाफ से Walkie-Talkie के माध्यम से सूचना प्राप्त कर उपयुक्त कमांड देता है।  
अभी हमने क्रेन के मुख्य भागों के बारे में चर्चा की, आइए अब हम इसकी सुरक्षा और अग्रिम प्रौद्योगिकी उपकरण (Safety & Advance Technology Equipment) के बारे में जानें :-  
क) **क्रमादेश तर्क नियंत्रक (पीएलसी)/ Programmable Logic Controller (PLC)** - पीएलसी या प्रोग्राम नियंत्रक



एक औद्योगिक डिजिटल कंप्यूटर होता है, जो आमतौर पर औद्योगिक विद्युत प्रक्रियाओं के स्वचालन के लिए इस्तेमाल किया जाता है। पीएलसी एक मुश्किल वास्तविक समय प्रणाली का एक उदाहरण है, क्योंकि उत्पादन परिणामों के एक सीमित समय के भीतर इनपुट शर्तों के जवाब में उत्पादन किया जाना चाहिए।

- ख) **मानव मशीन इंटरफेस (एचएमआई)/Human Machine Interface (HMI)** - इसमें मानव और मशीन के बीच इंटरफेस या सरल शब्दों में कहें, तो बातचीत होती है। इस बातचीत का लक्ष्य मानव छोर से मशीन के प्रभावी संचालन और नियंत्रण की अनुमति देना होता है।
- ग) **लोड सेल/Load Cell** - लोड सेल एक ट्रांसड्यूसर की भांति होता है, जो लोड को बिजली के संकेत में परिवर्तित करके भार मापने में प्रयोग किया जाता है।
- घ) **क्रेन प्रबंधन प्रणाली/Crane Management System-** क्रेन प्रबंधन प्रणाली को SCADA के माध्यम से एक कम्प्यूटर में डिस्ट्रे किया जाता है, यहाँ से हम क्रेन की हर गतिविधियों, फाल्ट, क्रेन संचालन को देख सकते हैं और उचित कार्रवाई कर सकते हैं।
- ङ) **अन्य उपकरण/Other equipments** - कई अन्य उपकरण जैसे सीसीटीवी, लिमिट स्विच, विमानन प्रकाश, विरोधी टक्कर डिवाइस, लिफ्ट, सीआरडी, आपातकालीन स्टॉप स्विच, यूपीएस, एयर कंडीशन, पब्लिक घोषणा प्रणाली (PA सिस्टम), हाई टेंशन स्विच, ड्राइ टाइप हाई टेंशन ट्रांसफार्मर, वीसीबी (VCB), स्टोर्म लॉक आदि इत्यादि...

छोटी-छोटी अनेक चीजें इस क्रेन में लगी हुई हैं, जिनका विवरण इस लेख में कर पाना मुश्किल है। यह क्रेन अपने आप में इतनी विशाल है कि इसके ऊपर जाने के लिए लिफ्ट का इस्तेमाल होता है। 116 मीटर स्पैन तथा 66 मीटर की ऊँचाई वाली यह क्रेन भारत में कुछ ही जगहों पर है। इस क्रेन की कार्य प्रणाली एवं इसकी निर्माण प्रक्रिया जानने लायक है। जीआरएसई के सभी कर्मचारियों को एक बार यह क्रेन अवश्य देखनी और समझनी चाहिए।

**रवि किशन**

उप प्रबन्धक (यार्ड आधुनिकीकरण)  
मेन यूनिट

## आशा के दीप

*अ रमानों को आँसू बन कर मत बहने दो,  
सहज स्नेह से आशाओं के दीप जलाओ।  
हर पतझड़ के बाद शिशिर का आना होता,  
हर मावस के बाद तिमिर का जाना होता।*

*धूप-छाँव तो हर जीवन के दो पहलू हैं,  
सावन को निश्चय ही मद छलकाना होता।  
तो साहस से काम, नहीं नैना छलकाओ,  
कुंठा ही साधन-हीनों का हथ्र नहीं है।*

*कठिनाई भी कंटक है, पर वज्र नहीं है,  
साहस के पैमानों से नापोगे मंजिल,  
गतिशीलों को तो स्थिरता से सब्र नहीं है।  
साहस के दीपों में श्रम का तेल जलाओ,*

*श्रमशीलों को सदा सफलता शीघ्र नवाती,  
चरणों की रज से माथे की माँग सजाती।  
साहस के साए और सृजन के सुर सजते हैं,  
श्रमिकों के साहस से युग की दिशा बदलती।*

**दुर्गेन्द्र मिश्र**

प्रबन्धक (उत्पादन योजना और नियंत्रण)  
मेन यूनिट



### विमुद्रीकरण और भ्रष्टाचार निर्मूलन

#### विमुद्रीकरण:

विमुद्रीकरण एक आर्थिक गतिविधि है, जिसके अंतर्गत सरकार पुरानी मुद्रा को समाप्त कर देती है और नई मुद्रा को प्रचलित करती है। जब काला धन और भ्रष्टाचार बढ़ जाता है और अर्थव्यवस्था के लिए खतरा बन जाता है तो इसे दूर करने के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

#### भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका:

भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 के आधार पर मुद्रा प्रबंध में भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका निर्धारित हुई है। भारतीय रिजर्व बैंक भारत में मुद्रा संबंधी कार्य संभालता है। भारत सरकार, रिजर्व बैंक की

ईमानदारी से संपत्ति कमा रहे हैं, उनके हितों की और उनके हक की पूरी रक्षा की जाएगी।

आरबीआई के अनुसार 31 मार्च 2016 तक भारत में 16.42 लाख करोड़ रुपये मूल्य के नोट बाजार में थे, जिसमें से करीब 14.18 लाख करोड़ रुपये 500 और 1000 के नोटों के रूप में थे। आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार देश में तब तक मौजूद कुल 9026 करोड़ नोटों में करीब 24 प्रतिशत नोट (करीब 2203 करोड़ रुपये) ही प्रचलन में थे।

#### भारत की अर्थव्यवस्था:

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। अपने कल्याणकारी उद्देश्यों की पूर्ति अर्थात् औद्योगिक, व्यापारिक तथा आर्थिक विकास, राष्ट्रीय आय में

वृद्धि, व्यय तथा समानता पर आधारित वितरण तथा आय की असमानता की समाप्ति के लिए यह आवश्यक है कि सरकार की आय तथा वित्तीय साधनों में कभी भी किसी प्रकार की रुकावट नहीं आनी चाहिए। विगत कुछ वर्षों से हमारा देश अनेक आर्थिक और सामाजिक समस्याओं से गुजर रहा है, क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था के समानांतर एक और अर्थव्यवस्था है, जो वास्तविक अर्थों में देश की अर्थव्यवस्था बन गई है। यह व्यवस्था काले धन और भ्रष्टाचार की है। कालाधन सरकार की आय में रुकावट पैदा करता है तथा देश के सीमित वित्तीय साधनों को अवांछित दिशाओं में मोड़ देता है।



सलाह पर जारी किये जाने वाले विभिन्न मूल्यवर्ग के बैंक नोटों के संबंध में निर्णय लेती है।

#### 500 और 1000 रुपये के नोटों का विमुद्रीकरण:

8 नवंबर, 2016 को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने एक बड़ा कदम उठाते हुए 500 और 1,000 के नोटों को उसी रात 12 बजे से बंद किए जाने की घोषणा की। इससे भ्रष्टाचार, काले धन और जाली नोट के कारोबार में लिप्त देश विरोधी और समाज विरोधी तत्वों के पास मौजूद 500 एवं 1,000 रुपये के पुराने नोट अब केवल कागज के एक टुकड़े के समान रह जाएंगे। लेकिन ऐसे नागरिक जो मेहनत और

#### काले धन की उत्पत्ति:

काला धन मुख्यतः दो प्रकार से उत्पन्न होता है— एक तो अवैध साधनों के प्रयोग द्वारा काले धन की प्राप्ति, दूसरे प्रकार का काला धन वह होता है, जिसके अर्जन का स्रोत न्यायपूर्ण तथा वैध साधन होते हैं, परंतु अर्जन करने वालों के व्यक्तिगत व्यवहारों के कारण यह काले धन का रूप ले लेता है।

#### कालेधन और भ्रष्टाचार का प्रभाव:

1. इससे कालाबाजारी, सट्टेबाजी, मिलावट तथा तस्करी जैसे



- गैर-कानूनी अपराधों को बल मिलता है।
- दुर्लभ संसाधनों को अनावश्यक और अनुत्पादक कार्यों की ओर मोड़ देता है।
  - कर-वंचन से सरकार की सकल आय में कमी आती है।
  - विलासिता, विदेशी साज-सज्जा तथा उपभोग की वस्तुओं की माँग ज्यादा होती है। यह माँग तस्करी को प्रोत्साहित करती है।
  - काले धन को सोने तथा मूल्यवान धातुओं में लगाना स्फीति कारक होता है। उन वस्तुओं की माँग बढ़ने से इनका मूल्य बढ़ जाता है।
  - काले धन को विदेशी बैंकों में जमा करने में घरेलू वित्तीय स्रोत विदेशों को पलायन करने लगते हैं, जिसके फलस्वरूप देश का भुगतान-संतुलन बिगड़ने लगता है।
  - काली कमाई से भूमि तथा भवन आदि अचल संपत्ति क्रय करने पर रजिस्ट्रेशन शुल्क की चोरी के साथ ही इनके मूल्य में वृद्धि होती है।
  - काली आय से हुई बचत को अवैध कार्यों के लिए वित्त के रूप में प्रयोग किया जाता है, जिससे सरकार की मुद्रा संबंधी नीतियाँ असफल हो जाती हैं।

### काला धन निकालने के उपाय:

कालेधन को बाहर निकालने के लिए विमुद्रीकरण एक कारगर उपाय हो सकता है। इसका अर्थ होता है, अर्थव्यवस्था में अधिक मूल्य के करेंसी नोटों को रद्द कर देना, क्योंकि कालाधन आमतौर पर इन्हीं

नोटों के माध्यम से संचालित होता है। देश में कैश के अत्यधिक सर्कुलेशन का एक सीधा सम्बन्ध भ्रष्टाचार से है। भ्रष्टाचार से अर्जित कैश का कारोबार महंगाई पर बड़ा असर पैदा करता है। इसकी मार गरीबों को झेलनी पड़ती है।

### कब-कब हुआ विमुद्रीकरण:

इससे पहले, इसी तरह के उपायों को भारत की स्वतंत्रता के बाद लागू किया गया था। जनवरी 1946 में, 1000 और 10,000 रुपए के नोटों को वापस ले लिया गया था और 1000, 5000 और 10,000 रुपए के नए नोट 1954 में पुनः शुरू किए गए थे। 16 जनवरी 1978 को सरकार ने फिर से 1000, 5000 और 10,000 रुपए के नोटों का विमुद्रीकरण किया था, ताकि जालसाजी और कालेधन पर अंकुश लगाया जा सके।

### उपसंहार:

अतः भ्रष्टाचार, काला धन, जाली नोट और आतंकवाद के खिलाफ जंग में विमुद्रीकरण भी एक कारगर उपाय है। देश के प्रत्येक नागरिक को भ्रष्टाचार के खिलाफ इस महायज्ञ में मिलकर खड़ा होना चाहिए। इस प्रक्रिया में जितना सहयोग मिलेगा, शुद्धिकरण उतना ही सफल होगा।

**बिजय कुमार दास**

वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)

तारातला यूनिट



**हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।**

**- सुमित्रानंदन पंत**



## मासूम बुढ़ापा



**ब**चपन की कल-कल छल-छल  
धूमिल सी हो गई वो आलौकिक ज्योति  
खो गया वो नाना-नानी, मामा-मामी का प्रेम  
रह गया अब तनहा मेरा जीवन  
याद है मुझे हर मार्मिक दृश्य, वो खेलना खाना और फिर नहाना  
आज अकेले बिसराया सा हूँ मैं।  
चिड़ियों का चहचहाना और मेरा तुतलाना  
सबको मुझे प्यार करना और मेरी बातें सुनना।  
पर दोस्तों ये सब खो गया है मेरा  
न अब कोई मेरी बात सुनता है, न मेरे प्रश्नों का कोई उत्तर देता है।

अकेले में यही सोचता हूँ कि इतना मासूम है ये उम्र का पड़ाव,  
न कोई हाथ पकड़ता है और न कोई साथ रहता है।  
बस सब पर बोझ सा बन गया हूँ।  
हारता हूँ जिंदगी से और हरा हुआ हूँ मैं अपनों से,  
न अब कोई मेरे साथ है, बस अकेले में खुद ही रोता हूँ।  
सोचता हूँ कि यादों में बचपन तो सबका प्यारा होता है  
पर मासूम तो बुढ़ापा है।  
जिसमें मन की आशाएँ तो हैं, पर जीवन के अनुभव का मिश्रण भी है।  
हर सबक की अपनी एक कहानी है जो फलक को अर्श से जोड़ती है।

पर इन बातों को न कोई सुनता है  
और न समझता है,  
बस मैं अकेले ही रह रह जाता हूँ।

शरीर साथ देता नहीं, और अपने मुझे साथ रखते नहीं।  
कैसे कहूँ कि मैं भी मासूम हूँ,  
मुझे भी तुम्हारे हाथों से हाथ मिलाना है,  
फिर अपने कदमों को बढ़ाना है।  
जानता हूँ ये जीवन झरना है, जिसे ऊपर से नीचे आना है।  
पर इस ज्योत के बुझने से पहले, सबका साथ चाहता हूँ।

ये सोच नहीं अनुभव है मेरा  
कि मासूम तो बुढ़ापा है  
बचपन तो प्यारा है !

**अर्चना शर्मा**

उप प्रबन्धक (एस एवं एम)  
बेली ब्रिज, 61 पार्क यूनिट





### बदलता हुआ समाज

**स**मय हर पल बदल रहा है। यही समय का नियम है। उसके साथ साथ बदल रही है हमारी सोच, हमारी संस्कृति और हमारा हाथ पकड़कर बदल रहा है ये समाज।

शिक्षा की मात्रा हर रोज बढ़ रही है। हर इंसान अपनी पहचान बनाने की कोशिश में लगा हुआ है। हर तरफ से इंसान आज़ादी मांग रहा है। कभी लोग माता-पिता के अनुशासन में रहते थे, उनकी सोच विचार ही हमारे लिए सब कुछ था। लेकिन वे दिन अब नहीं रहे।

एक समय ऐसा भी था, जब अध्यापक को देख कर श्रद्धा से सिर झुकता था। कभी उन्हें दूर से देखते ही, छात्र डर से छुप जाते थे। लेकिन आजकल स्कूल-कॉलेज में उन्हीं अध्यापकों पर छात्रों के हाथ उठाने की खबर हर रोज़ अख़बार में आती है।

जिस माता-पिता ने अपने बच्चे को पढ़ाया, लिखाया, सामाजिक होने की शिक्षा दी, समय आने पर वही बच्चा अपने माता-पिता को बेघर कर देता है। कुछ लोग तो उन्हें वृद्धाश्रम भेज देते हैं। ये हर घर की कहानी तो नहीं है, लेकिन ऐसी हजारों घटनाएं हर रोज़ देखने सुनने को मिलती हैं। माता-पिता आखिर अदालत में जा कर इन्साफ के लिए मांग करते हैं। कभी इन्हीं माता-पिता ने अपने बच्चों को लेकर न जाने कितने अच्छे अच्छे सपने देखे होंगे !!!!!

सवाल तो यही उठता है कि हमारी इस शिक्षा का लक्ष्य क्या है? सिर्फ़ पैसा कमाना, सिर्फ़ अपने लिए जीना? ये कभी नहीं सोचते कि, जो आज हम अपने माता-पिता के साथ कर रहे हैं, कल मेरा ही बच्चा बड़ा होकर मेरे साथ भी ऐसा करेगा। क्योंकि वो भी बचपन से यही देखते हुए बड़ा हो रहा है। सोचता हूँ तो सिर शर्म से झुक जाता है।

हर रोज़ सिर्फ़ अपने लिए जीते हैं। सब एक दूसरे के साथ बातचीत तो करते हैं, मिलते हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि हम सब अकेले हो गए हैं। परिवार में एक साथ रहने की जो छवि कभी दिखाई देती थी, आज वो भी ख़तम हो रही है। जिस भाई के साथ बचपन में मिलकर खेलते थे, एक साथ बैठकर खाना खाते थे, आज थोड़ी सी संपत्ति के लिए वो भाई भी पराया हो गया। यही कारण है कि निःसंगता आज हमारी जिंदगी का हिस्सा बन गयी। कहीं कोई अकेला बैठ के चुपचाप मन ही मन में रो रहा है, कोई आत्महत्या कर रहा है, कोई गुमशुदा हो गया। रास्ते में किसी के साथ कोई घटना घटी हो तो सब देखते हुए निकल जाते हैं। कोई मदद करने के लिए तैयार नहीं। यही सोचते हैं कि क्यों झमेले में फँसें। लेकिन ये कोई नहीं सोचता कि कल अगर

उनके साथ कुछ ऐसा हुआ तो उनकी भी मदद करने के लिए कोई नहीं होगा। कभी वो दिन भी थे जब घर में एक आँगन हुआ करता था, रोज़ पड़ोसियों से हम मिलते थे, बातचीत करते थे। आज घर तो हैं, लेकिन सब के घरों के सामने ऊंची ऊंची दीवारें बन गई हैं। कई दिनों तक पड़ोसियों से हमारी बातचीत नहीं होती। ऊंचे ऊंचे फ्लैट बन गए हैं। एक एक बिल्डिंग में दस दस परिवार रहते हैं, लेकिन सब अलग अलग हैं। उत्सव के दिन सब मिलते जरूर हैं, लेकिन मिलना वहीं तक सीमित है। हमारी सोच सिर्फ़ और सिर्फ़ मैं और मेरा परिवार तक ही सीमित हो गई है।

कभी कभी अख़बार में पढ़ने को मिलता है कि घर से बुजुर्ग आदमी की सड़ी-गली लाश मिली है। पूरी खबर पढ़ने पर पता चलता है कि उनका बेटा विदेश में रहता है और वे अकेले रहते थे यहाँ घर में। जरा सोचिए, जिस इंसान को ऐसी मौत मिली हो, उसकी जिंदगी के आखिरी समय के साक्षी थे सिर्फ़ घर की चार दीवारें और सिर की ऊपर की छत। क्या यही उम्मीद थी? क्या उन्होंने कभी ये सोचा था कि जिंदगी के आखिरी समय में उनके साथ ऐसा होगा? लेकिन इंसान की अकेले होने की इस सोच ने ही आज हमारी जिंदगी को इस मोड़ पर खड़ा कर दिया है।

बात यह है कि मन ही मन में एक युद्ध चल रहा है। सोचता हूँ कि आज शरीर में ताकत है, सब कुछ अकेला कर सकता हूँ, अगर कोई साथ नहीं है तो भी कोई परवाह नहीं। लेकिन, कल क्या होगा? शरीर कमजोर होगा, मन कमजोर होगा, तब क्या करेंगे? क्या ऐसी ही जिंदगी मेरे इन्तजार में है, जो उस बुजुर्ग इंसान के साथ हुआ? सोचता हूँ तो दिल घबराता है, शरीर में खून तेज़ी से दौड़ता है। इसलिए सब से यही गुज़ारिश है कि आइए, हम सब एक साथ मिलकर जीते हैं। एक दूसरे के सुख-दुख बांटते हैं। जरूरत पर एक दूसरे के साथ रहें। त्याग करें अपने अंदर में जमा हुए ईगो को। बलिदान करें उन चाहतों का, जो हमें सामाजिक होने से रोकती हैं। खत्म करें अपने अंदर में जमा हुए अहंकार को। आखिर इंसान है हम। दुनिया के सबसे बुद्धिमान प्राणी है हम। चाहें तो इसी समाज को और सुंदर बना सकते हैं हम। यह सिर्फ़ थोड़े समय की बात है और आखिर हम सब भी तो यही चाहते हैं ना?

**कौशिक तालुकदार**  
पर्यवेक्षक (स्टोर)  
मेन यूनिट



## 5 टेक्नोलॉजियाँ जो बदल सकती हैं जहाज निर्माण का भविष्य

**टे**क्नोलॉजी के क्षेत्र में प्रगति किसी भी उद्योग के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। जहाज निर्माण उद्योग भी इसके लिए कोई अपवाद नहीं है। वास्तव में, जहाज निर्माण तीव्र दर से बदल रहा है और अति उन्नत टेक्नोलॉजी का लाभ ले रहा है, जिससे पर्यावरण प्रदूषण, ईंधन की बढ़ती लागत आदि समस्याओं का समाधान हो सके।

पाँच महत्वपूर्ण टेक्नोलॉजियाँ, जो जहाज निर्माण के भविष्य को बदलने में मदद कर सकती हैं, उनके बारे में नीचे दिया गया है :

1. **3 डी प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी** : 3 डी प्रिंटिंग तकनीक आभासी (Virtual) 3 डी वस्तुओं से वास्तविक वस्तुओं का निर्माण करने के कार्य को संभव बनाती है। अभी तक कई प्रकार की 3 डी प्रिंटिंग का आविष्कार हो चुका है। लेकिन उनमें से बहुत कम

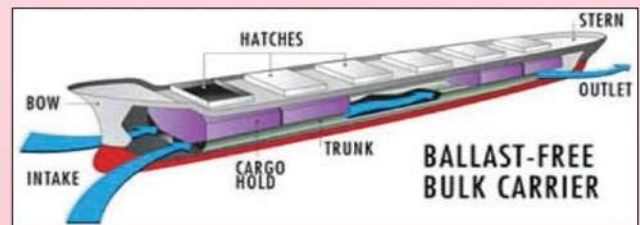


ही व्यावसायिक रूप से सस्ते और टिकाऊ हैं। हाल ही में, NSW Card Rock ने 3डी प्रिंटर का उपयोग करने का एक अस्पताल जहाज USNS कम्फर्ट (टी-एच 20) का मॉडल बनाया। अर्थशास्त्रियों का दावा है, इस तकनीक के प्रयोग से “तीसरी औद्योगिक क्रांति” हो सकती है।

2. **शिपबिल्डिंग में रोबोटिक्स का प्रयोग**: जहाज निर्माण उद्योग को रोबोटिक्स की दक्षता का एहसास हो रहा है और वो इसे कर्मियों को खतरनाक कार्य जैसे वैल्विंग से बचाने के लिए एक विकल्प के रूप में देख रहा है। कुशल श्रमिक की कमी भी रोबोटिक्स को विकल्प के रूप में देखने का कारण है। शिपयार्ड में रोबोटिक्स के माध्यम से वैल्विंग, ब्लास्टिंग, पेंटिंग, हेवी लिफ्टिंग व अन्य कार्य किए जा सकते हैं। उच्च उत्पादन दर हासिल करने के लिए भी रोबोटिक्स का योगदान महत्वपूर्ण है।



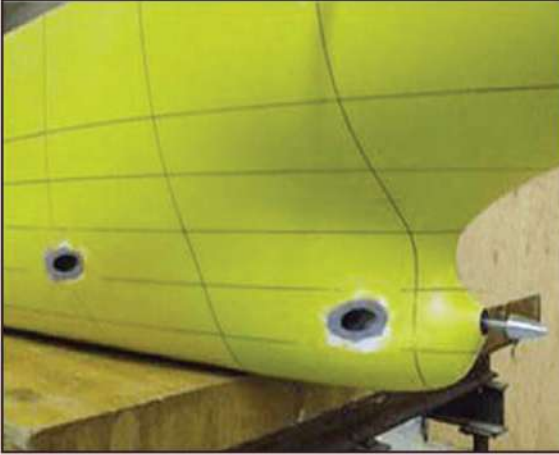
3. **बालास्ट फ्री शिप डिज़ाइन** : इस परिकल्पना में बालास्ट वॉटर के निपटान की समस्या के निदान की संभावना है। वर्तमान में बालास्ट वॉटर निपटान के कारण कई ईकोलोजिकल समस्याएं उत्पन्न होती हैं।



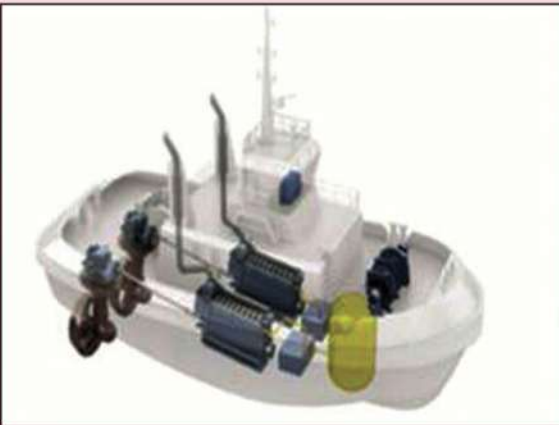
इसमें शिप की लंबाई में पाइप रहेंगे, जिनमें समुद्र का पानी बहता रहेगा, जिससे दूषित जल के एक इकोसिस्टम से दूसरे



इकोसिस्टम में जाने की समस्या नहीं आएगी। यह टेक्नोलॉजी अभी प्रयोगात्मक और विकास के चरण में है।



4. **एलएनजी ईंधनयुक्त इंजन:** प्रमुख शिप इंजन डिज़ाइनर, एलएनजी युक्त इंजन के तकनीकी विकास में लगे हुए हैं। तरल प्राकृतिक गैस (एलएनजी) युक्त इंजन से प्रदूषण कम होगा। एलएनजी ईंधन डीजल से सस्ता भी है। एलएनजी संचालित



एस्कॉर्ट टग BB द्वारा विकसित भी की गई है, जिसमें रोल्स रॉयस मरीन का एलएनजी इंजन है। अगर इन संकेतों का विश्वास करें तो बड़ी संख्या में भविष्य के शिप एलएनजी ईंधन संचालित इंजन से युक्त होंगे।



5. **इंटीग्रेटेड इलैक्ट्रिक प्रॉपल्शन :** इसमें गैस टर्बाइन या डीजल जेनरेटर या दोनों थ्रीफेस बिजली उत्पन्न करते हैं, जिससे कि इलैक्ट्रिक मोटर चलायी जा सकती है, जो प्रोपेलर या वॉटर



जेट को चलाते हैं। इसमें मैकेनिकल ट्रांसमिशन की जगह इलैक्ट्रिक ट्रांसमिशन का प्रयोग होता है, जिससे क्लच और गीयर बॉक्स की आवश्यकता नहीं रहती। इससे इंजन लगाने की आवश्यकता नहीं रहेगी, ध्वनि प्रदूषण घटेगा, वजन और वॉल्यूम घटेगा। यूएस नेवी के भविष्य के युद्ध पोतों में एकीकृत इंटीग्रेटेड इलैक्ट्रिक प्रॉपल्शन का प्रयोग होगा।

**विजय सिंह**  
उप प्रबन्धक (सामग्री विभाग)  
तारातला यूनिट  
(स्रोत - इंटरनेट)



### वरिष्ठ नागरिक – हमारी धरोहर

#### पृष्ठभूमि:

किसी भी प्राणी के जीवन में तीन महत्वपूर्ण अवस्थाएँ होती हैं – बचपन, जवानी, बुढ़ापा। मानव भी इससे अछूता नहीं है। बच्चा जन्म के बाद से लेकर उसकी शिक्षा व्यवस्था एवं शादी विवाह पर्यंत अपने माता पिता अथवा अन्य व्यक्तियों पर पूर्णतया निर्भर रहता है तथा उसे इस प्रकार पाला पोसा जाता है कि उसे इस निर्भरता का बोध ही नहीं हो पाता। बल्कि उसे वह कालांतर में अपना अधिकार समझ बैठता है। माता पिता अपने बच्चों का जीवन सुधारने में अपना न केवल स्वास्थ्य बल्कि जमा पूंजी भी गँवा डालते हैं तथा यही दौड़ धूप करते करते एक दिन वरिष्ठ नागरिक की कतार में पहुँच जाते हैं। हमारी सामाजिक व्यवस्था, मानव मूल्य एवं शिक्षा व्यवस्था सिर्फ पश्चिमी सभ्यता को थोपने पर लगी है, नतीजतन बुजुर्गों के प्रति उनके समाज, उनके देश एवं बच्चों का कर्तव्य क्या है, यह बताने का समय किसी के पास नहीं। यही है हमारी वरिष्ठ नागरिक धरोहर नष्टीकरण का मुख्य कारण।

#### वरिष्ठ नागरिक धरोहर क्यों कहलाते हैं ?

साधारण भाषा में धरोहर का अर्थ है मूल्यवान उपलब्धि। वरिष्ठ नागरिक अपनी मेहनत एवं कार्य के बल पर अकूत व्यावहारिक एवं बौद्धिक ज्ञान रखते हैं, जिसे बांटने के लिए वे सदैव तत्पर रहते हैं। दूसरी ओर नई पीढ़ी उन्हें तकनीकी कारणों से अशिक्षित से बढ़कर कुछ नहीं समझती तथा उनकी किसी भी बात को गंभीरतापूर्वक नहीं लेती। नई पीढ़ी सिर्फ अपनी उधेड़बुन एवं कार्यव्यस्तता में मशगूल हो जाती है और यहीं से वरिष्ठ नागरिक उपेक्षा का दौर धीरे धीरे आरंभ हो जाता है, जिसका एहसास नई पीढ़ी नहीं कर पाती। नई पीढ़ी समझ बैठती है कि उनकी दैनिक रोजमर्रा की समस्याओं का हल उनके बुजुर्ग माता पिता नहीं दे पाएंगे। फलतः अलगाव की स्थिति और बढ़ती जाती है तथा समस्या समाधान से परे हो जाती है।

#### बुजुर्ग हमारी धरोहर या अनावश्यक बोझ ?

जीवन यापन करने के दौरान अनावश्यक समझे जाने वाले वरिष्ठ नागरिक वास्तव में बोझ कैसे हो सकते हैं। ऐसा समझना महज एक बेवकूफी ही है। वरिष्ठ नागरिक आँगन में छायादार वृक्ष के समान हर समय सुरक्षा प्रहरी से कम नहीं हैं, जिनका वास्तविक योगदान दिखाई नहीं पड़ता।

#### क्या है सामाजिक कर्तव्य ?

वरिष्ठ नागरिक केवल सौभाग्यशाली व्यक्ति ही होते हैं, जो अपने अच्छे स्वास्थ्य एवं प्रभुक्रपा से दीर्घायु को प्राप्त होते हैं। जिनके माँ बाप असमय ही मृत्यु को प्राप्त कर जाते हैं, वे ही माँ बाप की सही कीमत का अंदाजा लगा पाते हैं तथा जिनके माँ बाप अपनी पूर्ण ज़िम्मेदारी से अपने बच्चों को सक्षम बनाते हैं, ऐसे बच्चे माँ बाप की कमी सहन करने के बजाय, अज्ञानतावश उन्हें बोझ समझ बैठते हैं। जिंदगी भर पका पकाया बिना मेहनत किए मिला, घर मकान बनाना नहीं पड़ा, तब कैसे इन सबका मूल्य कोई समझे? आग में हाथ डालकर ही उसकी ज्वलन क्षमता अगर समझी जा सकती है तो वरिष्ठ नागरिकों का महत्व भी उनकी अनुपस्थिति में ही हो सकता है। कुछ भी हो, नासमझ बन कर हमारा सामाजिक दायित्व तो समाप्त नहीं हो जाएगा। जब हम किसी लायक नहीं थे, उन्होंने उँगली थामकर चलना सिखाया, अब जब उन्हें हमारी उँगली की जरूरत है तो क्यों न हम अपनी उँगली उन्हें थमाकर सहारा दें?

#### कैसे रखें अच्छे संस्कारों की नींव ?

- माँ बाप अपनी जवानी में बच्चों के साथ दुर्व्यवहार कदापि न करें और हमेशा याद रखें कि वे ही उनके बुढ़ापे का सहारा बनेंगे।
- माँ बाप अपनी जवानी में अपने माता पिता का यथेष्ट सम्मान एवं ख्याल रखें। एक आदर्श जो आप स्थापित करेंगे, आपके बच्चे भी भविष्य में वैसा ही व्यवहार आपको लौटाएँगे, क्योंकि यह एक परम्परा बन जाती है। अगर आप अपने माँ बाप की बेइज्जती करके अपने बुढ़ापे में अपने बच्चों से इज्जत की अपेक्षा रखते हैं तो यह महज एक झूठी कल्पना के अलावा कुछ नहीं को सकता।
- माँ बाप, शिक्षक, भगवत्पूजा एवं बुजुर्गों का सम्मान हमारे पाठ्यक्रमों से न निकाला जाए, क्योंकि ये हमारी संस्कृति का अहम हिस्सा था। सिर्फ भाषा के नाम पर पश्चिमी सभ्यता अपना कर हम न तो अपने देश और समाज का भला कर रहे हैं और न ही स्वयं अपना। इसका नतीजा हमें भविष्य में वरिष्ठ नागरिक बतौर ही तो भुगतना पड़ेगा। जब आप अपनी जवानी में माँ बाप



को नगण्य समझकर केवल हर मौसम में टाई, कोट और टोपी संभालने में व्यस्त रहे, तब आपके बुढ़ापे के समय आपके अपने बच्चों को भी अपने टाई, कोट सभ्यता से कोई विमुख कैसे और क्यों कर पाएगा। बात सीधी और सरल है – जैसा बोओगे वैसा काटोगे। अगर किसी की आँख ज़िम्मेदारी लेने के समय नहीं खुली तो अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

- **सरकार एवं संतान दोनों की ज़िम्मेदारी** – जवानी के समय व्यक्ति अपनी संतान पर खर्च करने के साथ साथ सरकार को भी आर्थिक सहयोग अनेक करों के भुगतान के माध्यम से करता ही है, तब वृद्धावस्था में नागरिकों का ध्यान रखना सरकार एवं संतान दोनों की ही ज़िम्मेदारी बनती है। सरकार को चाहिए कि बुजुर्गों के लिए वांछित सुख सुविधाएं नगण्य कीमतों पर उपलब्ध करवाई जाएं, जिससे अभावग्रस्त संतान को अपने माँ बाप एक आर्थिक बोझ न लगें।

- **सहानुभूति** – अपने पैर दूसरों के जूतों में काल्पनिक तौर पर डालकर दूसरों की परेशानियों को समझने की योग्यता ज्यादा से ज्यादा विकसित की जानी चाहिए, तभी जवान लोग बूढ़े और लाचार लोगों की आवश्यकताओं का सही सही आकलन करके उन्हें पूरा करने की भरसक कोशिश करेंगे।
- **सक्षमता** – जो है सक्षम (जवान) वो ही तो कर पाएगा अक्षमों (बच्चों एवं बूढ़ों) की सहायता और यही तो प्रकृति का नियम भी है। तब प्रकृति विरुद्ध व्यवहार एवं आचरण पर रोक अगर हम स्वयं ही लगा लें तो सारी विषमताएँ स्वतः ही दूर हो जाएंगी।

के एस वर्मा

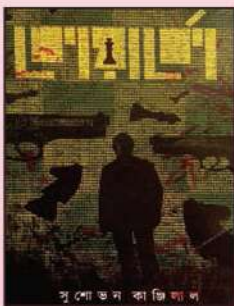
महाप्रबंधक (आईईपी, फायर एण्ड सेफ्टी)



## आज का नाटक – लाइफ ऑफ पाओ

नाट्य समीक्षा

बहुत दिनों के बाद विगत रविवार 19 फरवरी 2017 को रास बिहारी बोस रोड स्थित 'मुक्तांगन' थियेटर में बंगला नाटक 'लाइफ ऑफ पाओ' देखने को मिला। यह नाटक दो कारणों से विशेष उल्लेखनीय था। पहला कारण कि इसके लेखक, पटकथा लेखक और ध्वनि संयोजक हमारे ही जीआरएसई के एक प्रतिभावान युवा सुशोभन कांजीलाल हैं, यह उनके उपन्यास 'क्वार्को' पर आधारित था और दूसरा इसलिए कि इस नाटक का मूल चरित्र समकालीन था, जिसमें हमारे वर्तमान समाज के नैतिक एवं राजनैतिक पतन को बड़ी



सहज नाटकीयता के साथ उजागर किया गया था। कहानी एक नौजवान लड़के पाओ की है, जिसकी उम्र तो 26 साल है किन्तु माँ-बाप के अति संरक्षण के कारण उसका व्यक्तित्व विकसित नहीं हो पाया है। उसके पास माँ-बाप द्वारा अर्जित संपत्ति है जिसके कारण वह समाज के धन लोलुप दलाल और ठग लोगों का शिकार बन जाता है। इस क्रम में वह अंतर्धार्मिक प्रेम के जाल में फँसता है और सामाजिक रोष का शिकार भी बनता है। इसके बाद

उसमें बदलाव आता है और समाज सुधार करते करते अंत में राजनैतिक हत्या का शिकार बन जाता है। नाटक में कहानी को गंतव्य तक ले जाने के लिए फंतासी का भी सहारा लिया गया है। नाटक में पार्श्व संगीत और प्रतीकात्मक पात्रों का बहुत सुंदर उपयोग किया गया है। नाटक शुरू से अंत तक दर्शकों का मनोरंजन कर उन्हें बांधे रखता है। नाटक के मुख्य पात्र श्री संदीप दास (पाओ), सहपात्र श्री प्रसेनजीत राय (पान्ता) एवं श्री कौस्तभ भट्टाचार्य (राडार), जो इस नाट्यमंचन के निर्देशक भी हैं, विशेष रूप से प्रशंसा के अधिकारी हैं।

प्रभुनाथ मिश्र

उप महाप्रबंधक (डेक मशीनरी), तारातला यूनिट





**दे**श का रोशन किया नाम हमारे वीर जवानों ने  
दुश्मन का किया काम तमाम हमारे वीर जवानों ने।

सरहद पार कर मचा दिया तूफान हमारे वीर जवानों ने  
बैरी की चाल करी नाकाम हमारे वीर जवानों ने।

भूगोल बदलने का दिया पैगाम हमारे वीर जवानों ने  
सर्जिकल स्ट्राइक से दिया अंजाम हमारे वीर जवानों ने।

अपने देश की रक्षा के लिए दिया बलिदान हमारे वीर जवानों ने  
शत्रु को सबक सिखा दिया हमारे वीर जवानों ने।

कश्मीर भारत का अंग है दिखा दिया हमारे वीर जवानों ने  
देश की आंतरिक और बाहरी कमान संभाली हमारे वीर जवानों ने।

चुन चुन कर मारेगे आतंकवादियों को वीरानों और तहखानों में  
जान लो महाभारत हमें रचाना आता है युद्ध के मैदानों में।

भारत शांति चाहता है क्या रखा मरने मारने वाले कारनामों में  
कहे कवि जय भगवान देश का बढ़ाया मान हमारे वीर, शूरवीर जवानों ने।

जय भगवान  
सुरक्षा नायक  
61 पार्क यूनिट



हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं  
की अगली श्रेणी में आसीन हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त



### रूपकुंड की यात्रा

**रू**पकुंड उत्तराखंड राज्य में चमोली जिले की प्रसिद्ध झील है। हिमालय की गोद में मौजूद रूपकुंड के बारे में कहा जाता है कि महिषासुर का वध करने के बाद यहाँ पर माता दुर्गा के नहाने के लिए शिवजी ने रूपकुंड नाम की झील का निर्माण किया था।

कोलकाता से हमारा सफर शुरू हुआ। कोलकाता से काठगोदाम तक का लंबा सफर तय करने के बाद पहाड़ों से घिरे उस छोटे से स्टेशन की खूबसूरती ने हमारी थकान को मिटा दिया। वहाँ से दिख रहा विशाल हिमालय ऐसे लग रहा था जैसे हमारे स्वागत में खड़ा हो। पहला दिन काठगोदाम में बिताने के बाद दूसरे दिन हम गाड़ी से लोहाजंग पहुँचे जो हमारा बेस कैम्प था।



लोहाजंग (ऊँचाई 7700 फीट) में सुबह नन्दा घूँटी पर्वत की श्रृंखलाएँ ऐसी प्रतीत हो रही थी, मानो सुबह के सूरज की पहली किरणों ने उस पर सोने की चादर चढ़ा दी हो। यह सुहाना दृश्य हमारे मन को छू जाने वाला था। सुबह का नाश्ता करने के बाद हम पहाड़ों से घिरे एक बेहद खूबसूरत गाँव वाँन को निकल पड़े।

हमारी पैदल यात्रा वाँन से घेरोली पाताल (ऊँचाई 10,000 फीट) के लिए शुरू हुई, जहाँ जाने का रास्ता काफी चढ़ाई वाला और जो जंगलों के बीच से जाता है। रास्ते में हमने नीलगंगा नाम की पवित्र नदी के दर्शन भी किए। रास्ते में चिड़ियों की मीठी आवाज कानों में गूँज रही थी। घेरोली पाताल में

ओलों की बारिश के कारण हमें वह रात तम्बू में गुजारनी पड़ी।

दूसरे दिन सुबह तम्बू के बाहर बर्फ बिछी हुई थी और हम नाश्ता करते हुए त्रिशूल पर्वत के मनोहर दृश्य को निहार रहे थे। आज हमें बेदनी बुधियाल (ऊँचाई 11,500 फीट) जाना था, जिसे विश्व के सबसे सुन्दर घास के मैदानों में से एक माना जाता है और कहा जाता है कि वही पर माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध किया था। हम जंगलों के रास्ते से निकल कर बेदनी बुधियाल के हरे मैदानों में पहुँच गए। वहाँ पहुँच कर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो प्रकृति ने चारों तरफ हरे रंग का गलीचा बिछा दिया है। उस रात साफ आसमान में लाखों अरबों तारे जैसे मोतियों की तरह चमक रहे थे।

तीसरे दिन हम पथरनचानी (ऊँचाई 13,000 फीट) की तरफ निकल पड़े। रास्ता पथरीला था और ऊँचाई बढ़ने से पेड़ पौधे कम हो रहे थे हम वहाँ से एक तरफ विशाल त्रिशूल पर्वत और दूसरी तरफ बर्फ से ढके हुए मृगथुनी पर्वत के दर्शन करते हुए कैम्प में पहुँच गए।

चौथे दिन सुबह तैयार होकर हम भागुवासा (ऊँचाई 14,500 फीट) कैम्प की तरफ रवाना हुए। पिछले कई दिनों से लगातार चढ़ाई करने से हम सब बहुत थक चुके थे और आगे का सफर भी काफी मुश्किलों से भरा हुआ था। ठंड ज्यादा थी, रास्ता काफी संकरा था और ऊँचाई की







वजह से ऑक्सीजन भी कम हो रही थी पर हमारा रूपकुंड पहुंचने का जज्बा हमें इन कठिनाइयों को सहने की ताकत दे रहा था। भागूबासा पहुंच कर हम जल्दी सो गए क्योंकि उसी रात हमें रूपकुंड के लिये निकलना था।

रात 02.30 बजे हम तैयार होकर रूपकुंड (ऊंचाई 15,750 फीट) के लिये निकल पड़े। ठंड इतनी ज्यादा थी कि हम गरम कपड़ों में भी कांप रहे थे और हमारे हाथ सुन्न पड़ गए थे। रास्ते बर्फ से ढके हुए थे और हम हेडलैम्प की रोशनी में आगे बढ़ रहे थे। चाँद की रोशनी में त्रिशूल

पर्वत की खूबसूरती कभी ना भूल पाने वाली थी। लंबा सफर तय करने के बाद जब हम रूपकुंड पहुंचे तब सूरज निकलने वाला था। रूपकुंड बर्फ से ढका हुआ था और वहाँ से त्रिशूल पर्वत और नन्दा घूटी को इतना पास से देख कर हमें अपने सफर की सफलता का एहसास हो रहा था।

**सौविक पात्र**  
सहायक प्रबन्धक  
आरबीडी यूनिट

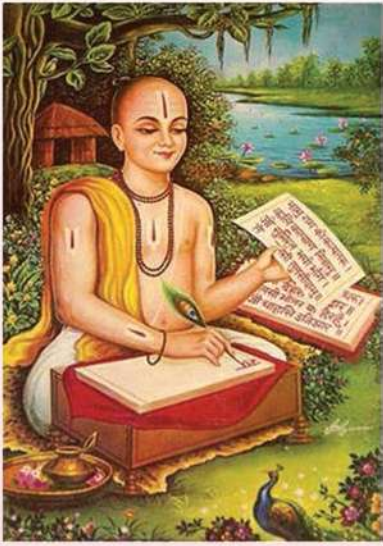
प्रसन्नता ही एक ऐसा इत्र है, जिसे आप दूसरों पर  
छिड़कते हैं तो कुछ बूंदें आप पर भी पड़ती हैं।

- महात्मा गांधी



## रामचरित मानस में वंदना

महाकवि तुलसीदास रचित रामचरित मानस की जब भी चर्चा होती है, तो हमारे समक्ष रामकथा एवं उसके कुछ रोचक प्रसंग खड़े हो जाते हैं – यथा यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण का विश्वामित्र जी के साथ अयोध्या से प्रस्थान, धनुष यज्ञ में जाते समय चरण स्पर्श से अहिल्या का उद्धार, पुष्पवाटिका में सीता राम का मिलन, धनुष यज्ञ



में परशुराम का आगमन और लक्ष्मण-परशुराम संवाद, मंथरा की मंत्रणा पर कैकेयी द्वारा राजा दशरथ से राम के लिए चौदह वर्ष वनवास और भरत के लिए राज्याभिषेक की माँग, सरयू नदी पार कराने के लिए केवट द्वारा श्री राम का चरणोदक लेना, भरत जी द्वारा श्री राम को वापिस लाने वन जाना और श्री राम की चरण पादुका माथे पर रखकर वापिस आना, शबरी मिलन

और शबरी के जूठे बेर खाना इत्यादि इत्यादि। परंतु इन रोचक प्रसंगों के जादू में बंधा पाठक प्रायः प्रसंगों के अंतराल में सहज प्रवाहमान “नाना पुराण निगमागम सम्मत” जीवन दर्शन की ज्ञान गंगा को नजरअंदाज कर देता है।

वस्तुतः रामचरित मानस के रचयिता एक संत हैं और उनका ध्येय राम कथा के सहारे लोक कल्याण के लिए शास्त्र संगत जीवन दर्शन भी प्रस्तुत करना है। यदि इस दृष्टिकोण से रामचरित मानस का अध्ययन करेंगे तो आपको कथा प्रसंगों के बीच बीच में जीवन दर्शन की उपरोक्त ज्ञान गंगा स्पष्ट दिखाई देगी। उदाहरणार्थ, बालकाण्ड के आरंभ में रामकथा आरंभ करने के पूर्व कवि द्वारा प्रस्तुत वंदना को देखें तो उपरोक्त तथ्य उद्घाटित हो जाएगा।

परंपरा के अनुसार काव्य रचना के पहले हर कवि वंदना करता है। कोई गणेश-सरस्वती की तो कोई अपने ईष्टदेव या गुरुदेव की। तुलसीदास ने भी वंदना की है। पर यह वंदना अद्भुत है। वे सबसे पहले विद्वत्जन, साधुजन और सज्जन की वंदना करते हैं, तत्पश्चात् दुर्जन, दुष्ट की, तत्पश्चात् एक साथ सज्जन-दुर्जन की और अंत में समग्र संसार की वंदना करते हैं। वंदना के क्रम में वे बड़ी सहजता से मानव चरित्र की खूबियों और खामियों का चित्रण करते हुए अंत में एक सार्वभौमिक

और सार्वकालिक जीवन दर्शन प्रस्तुत कर देते हैं। मुझे लगता है जो भी तुलसीदास की वंदना का एक आद्योपांत अध्ययन कर लेगा उसके लिए जीवन का दर्शन समझना शायद ही शेष रह जाएगा। इस संदर्भ में वंदना की कुछ चुनी हुई पंक्तियों (मूल पाठ अवधी) को उद्धृत करते हुए उनका भावार्थ प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है :

बंदउँ प्रथम महीसुर चरना ।  
मोह जनित संसय सब हरना ।।  
साधु चरित शुभ चरित कपासु ।  
नीरद विसद गुनमय फल जासु ।।  
जोसहि दुख परछिद्र दुरावा ।  
बंदनीय जेहिं जग जस पावा ।।  
मति कीरति गति भूति भलाई ।  
जब जेहि जतन जहाँ जेहि पाई ।।  
सो जानब सत्संग प्रभाऊ ।  
लोक वेद न आन उपाऊँ ।।

बंदऊँ संत समान चित्तहित अनहित नहीं कोइ ।  
अंजलिगत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ।।

कवि सर्वप्रथम विद्वत्जन की वंदना करता है ताकि वे मोहजनित संशय हर लें। यहाँ कई महत्वपूर्ण तथ्यों को एक ही चौपाई में समेटने का सफल प्रयास किया गया है। पहला तथ्य यह है कि संशय हरदम मोह से पैदा होता है। दूसरा तथ्य यह कि जब तक संशय रहेगा कृति त्रुटिपूर्ण होने की संभावना रहेगी। तीसरा यह कि सिर्फ विद्वत्जन ही अन्तर्ज्ञान जागृत कर सकते हैं, जो मोह से मुक्ति का एकमात्र उपाय है। तो इस प्रकार कवि वंदना के बहाने जीवन में विद्वत्जन और विद्या के महत्व को रेखांकित करता है।

कवि आगे की चौपाइयों में साधु की वंदना करते हुए उपमा अलंकार की सहायता से साधु का चरित्र उजागर करता है। कपास के साथ साधु की तुलना करते हुए कवि कहता है कि कपास और साधु दोनों ही नीरस हैं। परंतु नीरस या वैरागी होने के बावजूद वे समाज के लिए बहुत ही गुणकारी हैं। कपास अनेक यंत्रणाकारी प्रक्रिया से गुजरकर वस्त्र बनता है, जिससे नर-नारी की लज्जा की रक्षा हो पाती है। साधु भी स्वयं तपस्या की कठोरता से गुजरकर इस योग्य बनता है कि वह दूसरों का दोष दूर कर समाज को सत्पथ पर चलाता है।

कवि का स्पष्ट और दृढ़ मत है कि हम जब और जहाँ भी बुद्धि, कीर्ति, ऐश्वर्य, कल्याण और सद्गति देखते हैं, स्पष्ट जानिए वह सत्संग के प्रभाव के ही कारण है। इसको छोड़कर कोई अन्य लोक-सम्मत या शास्त्र सम्मत उपाय नहीं है।



जीवन की कोई भी उपलब्धि विवेक के बिना संभव नहीं, विवेक सत्संग के बिना संभव नहीं और सत्संग ईश्वर की कृपा के बिना संभव नहीं। इसलिए सज्जन वंदनीय है।

संत बिना पक्षपात के, बिना भेदभाव के समान चित्त से सबका भला करते हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम अंजलि में पुष्प लेते हैं तो वह हमारे दोनों ही हाथों, दाएँ और बाएँ को बिना भेदभाव के सुगंधित कर देते हैं। इसलिए संत वंदनीय है।

विद्वत्जन, सज्जन की वंदना के पश्चात कवि दुष्टों कि वंदना करना नहीं भूलता। इस संदर्भ में मूलपाठ (अवधी) से रामचरित मानस की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जाती हैं :-

बहुरि बंदी खल गन सतिमाएँ। जा बिनु काज दाहिने बाएँ।।  
पर हित हानि मम जिन केरे। उजरे हरष विषाद बसेरे।।  
पर अकाजु लगी तन परिहरही। जिमि हिम उपल कृषिदल गरहीं।।  
बंदऊँ खल जस सेष सरोषा। साहस बदन बरनइ पर दोषा।।  
बचन वज्र जेहि सदा पिआरा। सहसनयन पर दोष निहारा।।  
उदासीन अरि मीत हित, सुनत जाहीं खल रीति।  
जानि षानि जुग जोरि जन, बिनती करई सप्रीत।।

दुर्जन की वंदना कवि इसलिए करता है क्योंकि यदि दुर्जन नाराज हो जाएंगे तो कार्यसिद्धि संदिग्ध हो जाएगी, कार्य दाएँ-बाएँ हो जाएगा। जैसे वंदना के क्रम में कवि ने सज्जन के चरित्र को उजागर किया है, वैसे ही वह दुर्जन के चरित्र को भी प्रकाशित करता है। दूसरे की हानि दुर्जन को लाभ के समान लगती है। वे दूसरों के उजड़ने पर हर्षित होते हैं और दूसरों के बसने से विषादग्रस्त हो जाते हैं। दूसरों को हानि पहुंचाने की इच्छा दुर्जनों में इतनी तीव्र होती है कि इसके लिए वे प्राणोत्सर्ग तक कर सकते हैं। ठीक वैसे ही जैसे कृषि बर्बाद करने के लिए हिम ओले अपने को मिटा देते हैं। खल, दुष्टदुर्जन की वंदना कवि शेषनाग स्वरूप में करता है क्योंकि वे सहस्र मुखों से पर निंदा करने में सक्षम हैं। कठोर वचन उन्हें अत्यंत प्रिय हैं और वे सहस्र नेत्रों से दूसरे के दोष देखते हैं। आगे कवि कहता है कि जैसे संत सबके हित साधन में समान चित्त हैं वैसे ही दुर्जन दूसरों के अहित साधन में अर्थात् मित्र हो या शत्रु, वे सबका अहित बिना भेदभाव के करते हैं। दुर्जन मित्र और शत्रु दोनों के ही हित साधन में समान रूप से उदासीन हैं। मित्र या शत्रु किसी का भी हित सुनकर जलना ही उनका स्वभाव है। ऐसे समान चित्त वाले दुर्जनों की दोनों हाथ जोड़कर मैं वंदना करता हूँ।

कवि अपनी वंदना को यहीं विराम नहीं देता। आगे वह सज्जन और दुर्जन की एक साथ वंदना करता है। बतौर कवि सज्जन और दुर्जन के बीच कुछ मामले में ज्यादा फर्क नहीं है। वस्तुतः दोनों ही दुखदाता हैं। दुर्जन जब मिलता है तो दारुण दुख देता है और सज्जन जब बिछड़ता है तो दुख की पराकाष्ठा यहाँ तक भी पहुँच सकती है कि दुख से आदमी

के प्राण निकल जाएं:-

बंदऊँ संत असज्जन चरणा। दुखप्रद उभय बीच कछु बरना।।  
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं। मिलत एक दारुन दुःख देहीं।।

वंदना के अंतिम चरण में कवि जीवन के प्रति पूर्णतः दार्शनिक रुख अपना लेता है और सारे संसार की वंदना बिना किसी भेदभाव के एक साथ करता है। इस संदर्भ में रामचरित मानस की कुछ चयनित पंक्तियाँ उद्धृत की जा रही हैं:

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा।।  
तेहि ते कछु गुन दोष वसाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने।।  
भलेउ पोच सब जग उपजाए। गनि गुन दोष वेद बिलगाए।।  
कहहीं वेद इतिहास पुराना। विधि प्रपंच गुन अवगुन साना।।  
सुख दुख पाप पुण्य दिन राती। साधु असाधु सुजाती कुजाती।।  
सरग नरक अनुराग विरागा। निगमागम गुन दोष विभागा।।  
जड़ चेतन गुन दोष मय विस्व कीह करतार।।  
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि वारि विकार।।  
ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।।  
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग।।  
जड़ चेतन जग जीव जत, सकल राममय जानि।।  
बंदऊँ सब के पद कमल, सदा जोरि जुग पानि।।

कवि कहता है कि सज्जनों के गुणों एवं दुर्जनों के अवगुणों की कथा समुद्र से भी अथाह है। इसीलिए क्या संग्रह करें और क्या छोड़ दें इसका विचार किए बगैर कुछ गुण दोषों का वर्णन हमने किया है। भला और बुरा सब विधि का पैदा किया हुआ है। वेद और पुराण यह कहते हैं कि सारी सृष्टि गुण अवगुण से रची-बसी है। सुख-दुख, पाप-पुण्य, दिन-रात, साधु-असाधु, सुजाति-कुजाति, स्वर्ग-नरक, अनुराग-विराग ये सब सृष्टि में साथ साथ विद्यमान हैं। शास्त्रों ने गुण दोष के आधार पर उनका विभाजन भर कर दिया है।

विधाता ने पूरी सृष्टि की रचना गुण दोषमय कर रखी है, किंतु संत रूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुणरूपी दूध को ग्रहण कर लेते हैं। वास्तव में कोई भी वस्तु बुरी या भली नहीं होती। ग्रह, औषधि, जल, वायु और वस्त्र – ये सब ही सुसंग या कुसंग पाकर अच्छे या बुरे बन जाते हैं। इसीलिए अंत में कवि, जगत में जितने भी जड़ एवं चेतन पदार्थ हैं, सबको राममय जानकर, सब में ईश्वर का अंश जानकर उनकी वंदना करता है और प्रार्थना करता है कि जो पावन ग्रंथ 'रामचरित मानस' वह लिखने जा रहा है, सब उसमें सहायक बनें।

**प्रभुनाथ मिश्र**

उप महाप्रबंधक (डेक मशीनरी)

तारातला यूनिट



### निगमित सामाजिक दायित्व

**नि**गमित सामाजिक दायित्व (सीएसआर) जीआरएसई की निगमित सोच का अभिन्न अंग है। कंपनी द्वारा हाल ही में की गई कुछ सीएसआर गतिविधियाँ :-

**मेटियाब्रज, कोलकाता के गरीब और जरूरतमन्द लोगों के लिए केटेरेक्ट सर्जरी**



जीआरएसई अपनी सीएसआर पहल के तौर पर 2011-12 से मेटियाब्रज क्षेत्र के गरीब और जरूरतमन्द लोगों को केटेरेक्ट सर्जरी की सुविधा मुहैया कर रही है। 2016-17 के दौरान कुल 500 सर्जरी की गई। 26 दिसंबर 16 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (जीआरएसई) द्वारा लाभान्वितों को चश्मे वितरित किए गए।

**स्थानीय क्षेत्रों के बेरोजगार युवकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण**

बेरोजगार युवकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देना जीआरएसई का एक पतैगशिप सीएसआर प्रोजेक्ट है। इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत 18.12.16



को आयोजित कार्यक्रम में 171 सफल विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में रियर एडमिरल ए के वर्मा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (जीआरएसई), प्रोफेसर अजय कुमार राय, निदेशक (आईआईएसटी), श्री ए के नंदा, निदेशक (कार्मिक) तथा श्री ए के महापात्र, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), जीआरएसई उपस्थित थे।

**आईआईसीपी की 03 कक्षाओं को अपनाना**

जीआरएसई इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सेरिब्रल पाल्सी की 03 कक्षाओं को सहयोग दे रही है, जिनमें 43 बच्चे हैं। इस सहयोग के अंतर्गत विशेष शिक्षकों, थेरेपिस्ट, डॉक्टरों के वेतन पर व्यय, न्यूट्रीशन, विशेष उपकरणों आदि पर व्यय शामिल है।



रियर एडमिरल ए के वर्मा, सीएमडी (जीआरएसई) तथा श्री ए के नंदा, निदेशक (कार्मिक), जीआरएसई ने 09 नवंबर 16 को आईआईसीपी ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में आईआईसीपी के विद्यार्थियों को सेरिमोनियल चेक प्रदान किया।



### चुने गए आईटीआई का विकास

आईटीआई का विकास किया जाना, 2016-17 के दौरान कंपनी द्वारा हाथ में ली गई सीएसआर परियोजनाओं में से एक है और इस कार्य के लिए 50 लाख रुपए निर्धारित किए गए हैं। जीआरएसई ने टोलीगंज गवर्नमेंट आईटीआई तथा विमेन आईटीआई कोलकाता के साथ क्रमशः 02 जनवरी एवं 06 जनवरी 17 को 02 एमओयू पर करार किया है।



### एएलआईएमसीओ के सहयोग से उपकरणों तथा सहायक यंत्रों का वितरण

जीआरएसई ने अपनी सीएसआर पहल के तहत मेटियाब्रज और खिदिरपुर के हाशिये पर स्थित समुदायों के विभिन्न प्रकार से दिव्यांग लोगों को करीब 2000 यंत्र वितरित करने के लिए 29 सितंबर 16 को एएलआईएमसीओ के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस प्रोजेक्ट की अनुमानित लागत 66 लाख रुपए है। समझौता ज्ञापन करार के अनुसार, मेटियाब्रज और खिदिरपुर क्षेत्रों में अभिनिर्धारण हेतु 27 अक्टूबर 16 और 06 नवंबर 16 को दो शिविर लगाए गए। उपकरणों के वितरण हेतु दोनों क्षेत्रों में कुल 912 लाभान्वितों का पता लगाया गया है।

### कोलकाता गोल्लू के लिए कोलकाता पुलिस के साथ साझेदारी

‘कोलकाता गोल्लू’ नामक एक नए सीएसआर प्रोजेक्ट के लिए जीआरएसई ने कोलकाता पुलिस के साथ साझेदारी की है। इसके अंतर्गत समाज के गरीब तबके के 1200 बच्चों को फुटबॉल किट प्रदान की जाएगी, जिस पर 12 लाख रुपए का व्यय आएगा।

### सीआईआई के सहयोग से मेटियाब्रज के 24 आंगनवाड़ी केन्द्रों का सुधार

मेटियाब्रज के आंगनवाड़ी केन्द्रों को सुधार कर आदर्श केन्द्रों के रूप में परिणत करना एक अनूठा सीएसआर प्रोजेक्ट है, जिसे सीआईआई-यूनिसेफ सीएसआर हब द्वारा मदद दी जा रही है। यह परियोजना सीआईआई फाउंडेशन के साथ एक एमओयू पर हस्ताक्षर कर 03 वर्ष के लिए 2014-15 में आरंभ की गई। इस परियोजना के अंतर्गत जीआरएसई ने मेटियाब्रज के 120 आंगनवाड़ी केन्द्रों को अपनाया है। 18 नवंबर 16 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, जीआरएसई ने 02 केन्द्रों का उद्घाटन किया।

जीआरएसई इन केन्द्रों में बच्चों, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए बाल सुलभ टोएलेट्स, शैक्षणिक उपकरण, खिलौने, वॉटर प्योरिफायर, मेडिकल किट, साबुन, तौलिये, फ्लोर मैट, डिटर्जेंट, बर्तन, केन्द्रों की पेंटिंग आदि सुविधा मुहैया कर रही है। जीआरएसई आंगनवाड़ी वर्कर्स और हेल्पर्स को भी प्रशिक्षण देने में सहयोग देती है।



कंपनी की सीएसआर परियोजना ‘स्वच्छ भारत मिशन’ के अंतर्गत स्थानीय सरकारी स्कूलों में शौचालयों का निर्माण किया गया।





## मेरी नजरों में भारत की नकदीहीन अर्थव्यवस्था

**आ**इए हम तकनीक को अपनाते हैं और

एक कैशलेस समाज बनने की दिशा में आगे बढ़ते हैं।

- श्री नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

### नकदीहीन व्यवस्था क्या है ?

भारत में नोटबंदी के बाद अर्थशास्त्र की नई शब्दावली इन दिनों खूब सुनने में आ रही है। लेकिन नकदीहीन अर्थव्यवस्था यानि कि कैशलेस इकोनोमी आखिर है क्या ?

नकदीहीन अर्थव्यवस्था (कैशलेस इकोनोमी) का मतलब यही है कि हम प्रत्येक लेन देन टेकनोलोजी की सहायता से करें, जिसमें कैश के आदान प्रदान की कोई आवश्यकता नहीं है। यह सुविधा हम क्रेडिट



या डेबिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, डिजिटल बैंकिंग या डिजिटल वॉलेट से प्राप्त कर सकते हैं।

पुराने 500 और 1000 रुपए के नोटों के बैन यानि डीमोनेटाइजेशन के बाद अब सरकार आम आदमी से कैशलेस होने को कह रही है।

### नकदीहीन अर्थव्यवस्था होने के फायदे

1. काला धन और कर चोरी भारतीय अर्थव्यवस्था की एक गम्भीर समस्या है। बिना नकद लेन देन से इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

2. रीयल एस्टेट कीमतों में काफी गिरावट आएगी क्योंकि काले धन का एक बड़ा हिस्सा इस क्षेत्र में निवेश किया जाता है।
3. भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मुद्रण जारी न करने से व्यय में कमी आ जाएगी। वर्ष 2015 में रिजर्व बैंक ने करेंसी करने में और प्रबंधन में 27 अरब रुपए खर्च किए थे।
4. वेश्यावृत्ति, नशीले पदार्थों की तस्करी, आतंकवाद के वित्त पोषण जैसे अवैध धंधे नकद रुपयों पर ही निर्भर हैं। बिना नकद लेन देन के अपराधियों के लिए इस कारोबार का संचालन करना असम्भव हो जाएगा।
5. सरकार द्वारा नकदीहीन लेन देन पर नजर आसानी से रखी जा सकती है। इसके फलस्वरूप धन में वृद्धि होगी जिसे विकासात्मक गतिविधियों पर व्यय किया जा सकता है।
6. नागरिकों को तरल नकदी साथ रखने की जरूरत नहीं है। मोबाइल, कार्ड से ही लेन देन हो जाएगा। यहाँ तक कि साधारण फोन में भी डिजिटल लेन देन की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।
7. नकद और शराब बाँट कर वोट खरीदने का अभ्यास नकदीहीन लेन देन से बंद हो जाएगा।
8. नकदीहीन लेन देन के आने से सरकार द्वारा जन कल्याण कार्यक्रमों के अंतर्गत पैसा सीधे लाभार्थी के खाते में स्थानांतरित किया जाएगा, जिससे सरकार के भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा गरीबों का शोषण बंद होगा।

### नकदीहीन अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ

सरकार द्वारा तमाम प्रचार के बावजूद देश की आबादी का बड़ा हिस्सा आज भी कैश पर ही निर्भर है। लोगों के पास डेबिट/क्रेडिट कार्ड जरूर है लेकिन वह इसका प्रयोग एटीएम से पैसे निकालने के लिए ही ज्यादा करते हैं, सीधे खरीददारी के लिए कम उपयोग करते हैं। इसके पीछे मुख्य कारण यह है कि :-



\* **हर जगह प्लास्टिक मनी लेने की सुविधा नहीं है।** डेबिट/क्रेडिट कार्ड से जुड़ी असुरक्षा की भावना, इससे जुड़ी फ्रॉड की तमाम खबरें आदि भी लोगों को इनका प्रयोग करने से रोकती हैं।

\* **कमजोर साइबर सिक््योरिटी:** साइबर सिक््योरिटी के जानकार और सुप्रीम कोर्ट के वकील नीरज अरोड़ा का मानना है कि भारत का आईटी एक्ट ऑनलाइन फ्रॉड से निपटने के लिए काफी नहीं है। आईटी एक्ट की धारा 66, 66ए, 66सी और 66डी, जो फिशिंग, फर्जी ई मेल लिंक और फ्रॉड से निपटने के लिए हैं, जिसके तहत पुलिस दोषी को हिरासत में नहीं ले सकती है। इन सब मामलों में दोषी को बेल मिल जाती है।

\* **बैंक में लूट कम होगी और साइबर में लूट ज्यादा होगी:** नकदीहीन अर्थव्यवस्था के मामले में स्वीडन एक नंबर स्थान पर है। ग्लोबल इन्फोर्मेशन टेक्नोलोजी में नंबर 1 माना जाता है। यहाँ 2008 में बैंकों में 110 लूट हुई जबकि 2016 में सिर्फ 16 ही। इसकी तुलना में साइबर फ्रॉड तेजी से बढ़ रहा है, 2011 में 20,000 ऐसे फ्रॉड का पता चला था। इससे संभावना हो सकती है कि साइबर अपराधियों की संख्या बढ़ेगी और लोग इसके शिकार भी होंगे।

\* **स्लो इन्टरनेट स्पीड:** ज्यादा नकदीहीन लेन देन के लिए अच्छी स्पीड वाले इन्टरनेट की जरूरत होती है। लेकिन भारत में इन्टरनेट की स्थिति काफी निराशाजनक है, जिसमें सेशन एक्सपायर, टाइम आउट, इन्टरनेट डिसकनेक्ट, नेटवर्क एरर जैसी समस्याएँ शामिल हैं। इन वजहों से काम में बहुत नुकसान होता है।

\* **रोज़मर्रा की इलैक्ट्रॉनिक समस्याएँ:** नकदीहीन लेन देन के लिए स्मार्टफोन, पर्सनल कंप्यूटर और इन्टरनेट कनेक्शन की जरूरत होती है। अगर फोन अचानक बंद हो गया, बैटरी खतम हो जाए, नेटवर्क चला जाए तो क्या होगा? बैंकिंग से जुड़ा पर्सनल डाटा कहीं न कहीं सर्वर में स्टोर रहता है, जहां से चुराना हैकर्स के लिए ज्यादा मुश्किल नहीं है।

\* **कई गरीब लोगों के बैंक में खाते भी नहीं हैं।** सिर्फ यही नहीं, छोटे खुदरा विक्रेता नकद में ही लेन देन करते हैं। अधिकतर भारतीय जनता कार्ड या ऑनलाइन से भुगतान के तरीकों से लाभ उठाने में अभी भी पूरी तरह से शिक्षित नहीं हो पाई है।

इन सभी समस्याओं को बिना निपटाए और साइबर सिक््योरिटी को बिना मजबूत बनाए नकदीहीन अर्थव्यवस्था बनाने में कठिनाई है क्योंकि भारत की आबादी का बड़ा हिस्सा अभी भी बैंकिंग नेट के बाहर है। इसके लिए नकदीहीन अर्थव्यवस्था की बारीकियों को समझना और उसके लिए पुख्ता व्यवस्था करने में भारत काफी पीछे है।



**सारांश:** नकदी पर भारतीय अर्थव्यवस्था की निर्भरता को कम करने के लिए विभिन्न स्तरों पर काम किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत बैंक में खाता खोलने और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए सरकार अग्रसर होकर कदम उठा रही है। इसके लिए जरूरी है कि हम सब तकनीकी विकास के बारे में पूरे देश में जागरूकता फैलाएँ, मोबाइल पर्स से लेन देन करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करें और नकद भुगतान को कम करें ताकि भारत में नकदीहीन अर्थव्यवस्था, एक सपना नहीं बल्कि हकीकत हो सके।

**सौरिस सामंता**  
प्रबंधक, निपटान विभाग  
मेन यूनिट



## वरिष्ठ नागरिक – हमारी धरोहर

वरिष्ठ नागरिक समाज की धरोहर होते हैं। उनके अनुभवों तथा मार्गदर्शन से समाज में न केवल उन्नति और विकास की राह आसान होती है, बल्कि पारिवारिक संबंधों में भी घनिष्ठता और सौहार्दपूर्ण वातावरण बना रहता है। समाज के समग्र विकास एवं समस्याओं का समाधान करने में वरिष्ठ नागरिक विशेष भूमिका निभाते हैं। वरिष्ठ नागरिकों के पास सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, व्यावसायिक आदि क्षेत्र का व्यावहारिक ज्ञान व अनुभव का अपार खजाना होता है और अच्छे व्यवहार से हम उनकी इस धरोहर को प्राप्त कर सकते हैं। किसी भी इंसान के लिए माँ-बाप का आशीर्वाद सबसे मूल्यवान होता है और जिसको यह मिल जाता है, उसके जीवन में सांसारिक सुखों का कभी भी अभाव नहीं रहता है। इंसान के जीवन काल में जब भी कोई संकट आता है, वह माँ-बाप, दादा-दादी एवं बुजुर्गों की ममता भरी बाहों में आकर अपार सुकून का अनुभव करता है। बुजुर्गों की देखरेख में बच्चों का लालन-पालन बेहतर तरीके से होता है तथा दादा-दादी की कहानियाँ सुनकर बच्चे सुसंस्कार सीखते हैं। यह भी सत्य है कि छोटे बच्चे या तो बच्चों के साथ खुश रहते हैं या फिर बुजुर्गों के साथ। वरिष्ठ नागरिक भी बच्चों के संग रहकर अपार प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।



जब पौधा बोया जाता है, उससे यही उम्मीद की जाती है कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ वह अपना फल और छाया अन्य लोगों को प्रदान करेगा, लेकिन वह पेड़ जब बूढ़ा हो जाता तो किसी का ध्यान उसकी ओर नहीं जाता। कोई उस वृक्ष की ओर ध्यान नहीं देता, जिसने पूरी जिंदगी दूसरों का ही हित सोचा। इतना ही नहीं, उसे मात्र एक बोझ ही मान लिया जाता है। यह एक पेड़ की कहानी नहीं बल्कि हर उस इंसान की कहानी है, जिन्हें उम्र के बढ़ते पड़ाव में परिवार द्वारा वृद्धाश्रम में धकेल दिया जाता है। उन्हें अपने परिवार से दूर रहने के लिए विवश कर दिया जाता

है। उम्र बढ़ने का अर्थ अनुभव बढ़ने से भी लिया जा सकता है। लेकिन आज के समाज की युवा पीढ़ी जो सभी सुसंस्कारों को भूलकर स्वयं से आगे कुछ सोच ही नहीं पाती, वह परिवार के बुजुर्गों को अपने ऊपर एक बोझ समझने लगती है। जिस परिवार को व्यक्ति अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करता है, जिसकी खुशियों के लिए अपना हर सुख छोड़ देता है, दिन-रात मेहनत करके उनका पालन-पोषण एवं शिक्षा की व्यवस्था करता है, वही परिवार उसके वृद्ध होते ही उन्हें तुच्छ तथा बोझ समझने लगता है। उनकी देखरेख व स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। उनको घर के किसी कोने में बैठा दिया जाता है। समाचार

पत्रों व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में बुजुर्गों की दुर्दशा की खबरें छपती तथा प्रसारित होती रहती हैं। वैसे तो हम अपने सुसंस्कारों की बात करते हैं, लेकिन बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार करके हम अपनी औछी मानसिकता का परिचय देते हैं।

हमें समझना चाहिए कि वरिष्ठ नागरिक समाज की अमूल्य धरोहर हैं। उन्होंने देश और समाज को बहुत कुछ दिया होता है, उन्हें जीवन के हर क्षेत्र का व्यापक अनुभव होता है। आज का युवा वर्ग राष्ट्र को ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव का लाभ उठा सकता है। जीवन के इस मोड़ पर उनकी देखभाल करके उन्हें यह एहसास कराने की जरूरत है कि

वे हमारे लिए खास महत्व रखते हैं और इसके लिए किसी धन-दौलत या कोई विशेष प्रकार की मेहनत की जरूरत नहीं। बस उनसे प्यार भरे शब्दों में वार्तालाप करने की आवश्यकता है। मन में उनके प्रति सेवा भाव रखकर हमारे कर्तव्य पालन, जैसे परिवार का हर खुशी का अवसर उनके साथ मनाना, साथ बैठकर भोजन करना, मधुर शब्दों में बातचीत करना, साफ-सुथरे कपड़ों की व्यवस्था करना, आवश्यकता पड़ने पर उचित उपचार कराना, उनसे पूछ कर सभी कार्य करना, उनका जन्मदिन मनाना आदि की जरूरत है। ऐसा करने से उनका मन बहुत प्रसन्न होता है और वे हमें प्रत्येक कार्य में अपार सफलता प्राप्त करने का आशीर्वाद देते हैं। हमारे शास्त्रों के अनुसार माँ-बाप,



दादा-दादी व बुजुर्गों की सेवा सबसे बड़ी सेवा है। आज हम जो कुछ भी हैं, हमारे माता-पिता की वजह से हैं क्योंकि इस दुनिया में हमें लाने का श्रेय उनको ही है।

सम्पूर्ण विश्व में बुजुर्गों के प्रति होने वाले अन्याय और उनके साथ दुर्व्यवहार पर लगाम लगाने के साथ-साथ वृद्धों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से 14 दिसंबर 1990 के दिन संयुक्त राष्ट्र ने यह निर्णय लिया कि हर साल 01 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस के रूप में मनाया जायगा। इससे बुजुर्गों को भी उनकी अहमियत का एहसास होगा और समाज के अलावा परिवार में भी उन्हें उचित स्थान दिलवाया जा सकेगा। सबसे पहले 01 अक्टूबर 1991 को बुजुर्ग दिवस मनाया गया और तब से यह सिलसिला निरंतर जारी है। वैसे तो भारत में भी बुजुर्गों की रक्षा एवं अधिकार दिलवाने के लिए बहुत से नियम और कानूनों की व्यवस्था है, लेकिन उनका पालन व कार्यान्वयन ठीक ढंग से नहीं किया जाता। भारत सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों की आरोग्यता और उनके कल्याण को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1999 में बुजुर्गों के लिए राष्ट्रीय नीति तैयार की, जिसके तहत व्यक्तियों को स्वयं के लिए तथा उनके पति या पत्नी के बुढ़ापे की व्यवस्था करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और साथ ही परिवार वालों को वृद्ध सदस्यों की देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करने का भी प्रयास किया जाता है। केंद्र सरकार ने भी वरिष्ठ नागरिकों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएँ लागू की हुई हैं। इसके साथ ही 2007 में माता पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा का प्रावधान किया गया है। लेकिन इन सबके बावजूद अखबारों एवं समाचारों की सुर्खियों में वृद्धों की व्यथा तथा लूटमार की घटनाएँ देखने को मिल ही जाती हैं। वृद्ध आश्रमों की बढ़ती संख्या इस बात का साफ सबूत है कि वृद्धों को उपेक्षित किया जा रहा है। बड़ी बात तो यह है कि एक दिन हम सभी को वृद्ध अवस्था में जाना निश्चित है, तब हमारे साथ कैसा व्यवहार होगा? क्या हमें भी वृद्ध आश्रमों में भेज दिया जायगा या उपेक्षित किया जायगा। यदि आज हमने अपने बुजुर्गों का सम्मान नहीं किया और बच्चों में सुसंस्कार पैदा नहीं किए तो हमारा कल भयानक हो सकता है।

## इंसाफ

ये तुम्हारा कैसा विचार  
बोलो हे सर्वशक्तिमान,  
किसी को दी है हज़ार खुशियाँ  
किसी को दिया है अभिमान।  
ये तुम्हारा कैसा विचार  
बोलो हे सर्वशक्तिमान।

किसी की झोली भरी है दौलत से,  
किसी को दिया है तुमने ज्ञान  
कोई पड़ा है बेसहारा हो कर,  
और किसी को बनाया तुमने अज्ञान।  
ये तुम्हारा कैसा विचार  
बोलो हे सर्वशक्तिमान।

ये तुम्हारा कैसा विचार  
बोलो हे मेरे दीनानाथ,  
कोई जी रहा है प्यार के सहारे में  
तो किसी को किया है तुमने अनाथ।  
ये तुम्हारा कैसा विचार  
बोलो हे मेरे दीनानाथ।  
कर रहे हो सब कुछ तुम  
फिर भी बने हो अन्जान,  
ये तुम्हारा कैसा विचार  
बोलो हे सर्वशक्तिमान।

इंसाफ दो, इंसाफ दो  
हे मेरे दीनानाथ,  
अधर्म का तुम करो विनाश  
और न्याय का दो हमेशा साथ।  
इंसाफ दो, इंसाफ दो  
हे मेरे दीनानाथ।

पवन कुमार कौशिक  
पर्यवेक्षक, बेली ब्रिज (पी एवं पी)  
61 पार्क यूनिट

कौशिक तालुकदार  
पर्यवेक्षक (स्टोर)  
मेन यूनिट



### जांस्कर नदी - बर्फ की सफ़ेद चादर

**ह**मारे छह सदस्यीय दल ने 26 जनवरी 16 की शाम को दिल्ली होते हुए लेह के लिए कोलकाता हवाई अड्डे से उड़ान भरी और 27 जनवरी को हम पहुँच गए लेह। अगले तीन दिन हम वहीं होटल में रुके रहे, वहाँ के तापमान से अपने आप को अभ्यस्त करने और स्वयं को आगे की यात्रा तथा मौसम के लिए तैयार करने के लिए। वहाँ दिन का तापमान 15° सेल्सियस के आसपास रहता है जो रात को -25° सेल्सियस से -35° सेल्सियस हो जाता है। चारों ओर मीलों तक फैली बर्फ से हमें यह एहसास हुआ कि क्यों सर्दी के दिनों में सड़क के रास्ते लद्दाख आना संभव नहीं होता है। लेह दुनिया के सर्वाधिक ऊँचाई वाले हवाई अड्डों में से एक है। जैसे ही हम वहाँ पहुँचे, हमें भयंकर ठंडी हवाओं का एहसास हो गया। पूरा लेह शहर ठंड के कारण बंद था। खाने पीने की और छोटी मोटी जरूरी सामान की दुकानें ही खुली थीं। हमने कुछ सामान जैसे स्कार्फ, मोजे आदि खरीदे। इन तीन दिनों में हमें दूसरे दल के लोगों के साथ भी संपर्क और दोस्ती करने का मौका मिला। कुछ लोग उनमें से अपनी यात्रा खतम कर चुके थे, अतः वहाँ के बारे में आवश्यक जानकारी भी मिली।

31.01.2016 को यानि यात्रा के छठे दिन हम तिलारडु चिलिंग होते हुए जांस्कर की ओर रवाना हुए। अब हमारा दल बढ़कर 24 लोगों का बन चुका था। जिसमें पाँच महिलाओं सहित भारत के हर प्रांत के लोग थे। हमने एक छोटी सी बस में यात्रा शुरू की। मालवाहक, तम्बू, खाने का सामान, ऑक्सीजन किट, दवाइयाँ तथा मार्गदर्शक को भी साथ में लिया। यह सारी व्यवस्था M/s Adventure Nation Leh द्वारा की गई। चिलिंग तक पहुँचने के लिए हमने लगभग 64 किलोमीटर की बस

यात्रा की। पूरा रास्ता प्राकृतिक सौंदर्य से भरा था। यह यात्रा हमें सिंधु नदी के किनारे निमु नामक गाँव तक ले गई, जहाँ जांस्कर सिंधु से मिलती है। यात्रा काफी रोमांचक थी। जब जब हमारी बस पहाड़ी पगडंडी को पार करती, हम डर कर सहम जाते थे। उन विशाल चट्टानों के सामने हम सब कितने छोटे हैं यह ख्याल बार बार आ रहा था। कैंप पहुँच कर पहली बार बर्फीली चादर पर पैर रखे, जो वास्तव में जमी हुई जांस्कर नदी थी। यह नदी हिमालय के दुर्गम पहाड़ों के बीच बहती हुई नीचे घाटी तक आती है। सर्दी के दिनों में यहाँ रहना और रोज़मर्रा की जिंदगी का हर काम असंभव हो जाता है। उस समय बर्फ बनी यह नदी सड़क का काम करती है। शाम होते होते हम सब वापिस अपने अपने तंबुओं में लौट आए।

सातवें दिन की यात्रा थी तिलडडू से ग्यालपो की। सुबह की सबसे बड़ी चुनौती थी कांपती हुई सर्दी में बाहर निकलने की। हमें करीब 12 किलोमीटर चलना था। दल नेता ने हमें बताया कि बर्फ पर किस तरह चलना होगा। उन्होंने यह भी बताया कि बर्फ अलग अलग प्रकार की होती है जैसे सख्त बर्फ जिस पर चलने से पैर फिसल सकता है, सूखी बालू जैसी बर्फ जिस पर आसानी से चला जा सकता है। मौसम के हिसाब से बर्फ कहीं पतली और कहीं मोटी परत की हो सकती है। इसलिए तय किया कि हमेशा मार्गदर्शक को ध्यान से देखते हुए उसी के दिखाए मार्ग पर चलना होगा। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि मार्ग में कभी पानी से होकर और कभी पहाड़ों से होकर गुजरना होगा। ग्यालपो के रास्ते में मालवाहकों ने खाने के लिए सूपी नूडल्स बनाए क्योंकि इस रास्ते पर चलते हुए बीच बीच में खाने और पानी की जरूरत होती है।





सिंगरा कोमा पार करने के बाद हमारी उस दिन की यात्रा का अंत हुआ। हम कैंप पहुँच गए। चारों ओर पहाड़ ही पहाड़, कुदरत का एक खूबसूरत नजारा था।



आठवें दिन की यात्रा सुबह चाय नाश्ते के साथ करीब 7.00 बजे शुरू हुई। आज हमें लगभग 14 किलोमीटर चलना था, जिसमें रास्ते में नदी के दो बड़े बड़े हिस्सों को पार करना भी शामिल था। बर्फ से ढकी ऊंची ऊंची पहाड़ की दीवारों ने सूरज की किरणों को पूरे दिन हमारे पथ पर आने नहीं दिया। इस मार्ग पर हमें गुफाएँ मिलीं, कुछ जमे हुए झरने भी देखने को मिले। इसी रास्ते में कुछ झरने ऐसे भी देखे जिनका पानी ठंड के बावजूद भी नहीं जमा था। एक पहाड़ी पर कुछ हरियाली के दर्शन हुए, जो इस मार्ग पर चलते हुए एकमात्र हरियाली थी। इसके विषय में एक लोक कथा सुनने को मिली। कहा जाता है कि एक बार यहाँ के लोग पानी के कारण परेशान होकर तिब्बत गए और उनसे मदद मांगी। वहाँ उन्हें एक बक्सा दिया गया और कहा गया कि वे इस बक्से को केवल अपने घर जाकर ही खोलें। लेकिन अधिक कौतूहल के कारण उन्होंने रास्ते में ही उस बक्से को खोल दिया। जैसे ही बक्से को खोला, उसमें से दो मछलियाँ निकल कर बाहर कूद गईं और उनसे दो झरने बने। उन्हीं झरनों में से एक का पानी कभी नहीं जमता, बहता रहता है।

टिब पर हमें एक बड़ी सी गुफा दिखाई दी, मालवाहक लोग वहाँ रहते हैं। उन्होंने हमारा स्वागत गरम गरम चाय के साथ किया। नौवें दिन की यात्रा टिब गुफा से नेरक की। पूरी यात्रा के दौरान यह दिन हम सबके लिए अत्यंत लाजवाब रहा। जमी हुई नदी के ऊपर से चलते हुए गहरी घाटियों को पार कर हम हपुषा जामुन (Juniper Tree) के पेड़ों से भरे एक स्थान पर पहुँचे। मालवाहकों ने हमारी अच्छी सेहत और सौभाग्य के लिए हमें उन पेड़ों की सूखी टहनियों से बंधी हुई प्रार्थना पताकाएँ दीं। कुछ दूर जाने पर हमें बड़ा सा जमा हुआ झरना दिखाई दिया। जमी

बर्फ में सूर्य की किरणों से इंद्रधनुषी रंगों के मेल ने मन मोह लिया। वहीं पास में ही एक सेतु दिखाई दिया, जो गर्मी के दिनों में यातायात करने के लिए बनाया गया है। इस दिन की यात्रा में कुछ कठिनाइयाँ भी सामने आईं। बर्फ के टूटने से कुछ जगहों पर पानी बढ़ कर करीब करीब हमारी कमर तक आ गया था। कोई दूसरा पथ भी हमें नजर नहीं आ रहा था। हम वहाँ रुके और दूसरे यात्री दलों से इस पर विचार करने लगे। इसी सोच के साथ कि अगली सुबह तक शायद यह पानी जमकर बर्फ बन जाए और हमें जाने का मार्ग मिल जाए।

दसवें दिन की यात्रा कैमिंग के स्थान पर ग्यलपोका टिब गुफा होते हुए थी। हमारी आशाओं के अनुरूप पानी नहीं जमा और हमें मजबूरन वहाँ से ही लौटना पड़ा। तापमान थोड़ा बढ़ चुका था और इस कारण जांस्कर नदी की बर्फ का रूप बिलकुल बदल चुका था। पहाड़ की दीवारों पर जमी बर्फ काँच की तरह चमक रही थी। हमें उस बर्फ पर जंगली सियारा और हिम तेंदुए के पंजों के निशान दिखाई दिए।



ग्यारवें और बाहरवें दिन की यात्रा थी लेह से प्रस्थान। यात्रा के लिए जिस होटल में हम रुके हुए थे हमने Musk Dance of Thicksey Monastery देखा। हम सभी ने इसमें भाग लिया। वास्तव में हमारे लिए बहुत ही सुंदर नजारा था। कभी न भूलने वाली यह यात्रा अपने समापन पर थी। लेह से हम सब लौट रहे थे, जांस्कर नदी के लिए मन में अपार श्रद्धा लिए। यह नदी लेह और उसके आसपास के क्षेत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण नदी है। यह रोमांचकारी यात्रा जो लेह प्रशासन द्वारा हर साल 25 जनवरी से 25 फरवरी तक आयोजित की जाती है, पूरा जीवन हमारी स्मृतियों में रहेगी और हम बार बार सबको इसके बारे में बताते हुए आनंदित होते रहेंगे।

**प्रणव कुमार चक्रवर्ती**  
प्रबन्धक (अग्निशामन)  
मेन यूनिट



### ओल्ड इज़ गोल्ड



**व**रिष्ठ नागरिकों का विशाल अनुभव और उनका ज्ञान भावी पीढ़ी की उन्नति और विकास के लिए आवश्यक हैं। समाज के वरिष्ठ सदस्यों को विशेष देखभाल की जरूरत है। कुछ निवारक उपायों और उनकी ओर उचित ध्यान देकर उनके जीवन को ऐसा बनाया जा सकता है कि वे इसे सार्थक जीवन के रूप में तथा और अधिक मनोरंजक रूप में अच्छी तरह जी सकते हैं। माइकल एंजेलो 74 वर्ष की उम्र में सेंट पीटर बेसिलिका (वैटिकन सिटी) के आर्किटेक्ट नियुक्त

किए गए थे। उस उम्र में उनकी रचनात्मकता हमें आज भी आश्चर्यचकित करती है।

2011 में भारत में बुजुर्गों की संख्या 90 मिलियन थी, 2026 तक इस संख्या के 173 मिलियन तक पहुँचने की संभावना है। इन 90 मिलियन में से 30 मिलियन बुजुर्ग ऐसे हैं, जो अकेले रह रहे हैं। कल्पना कर सकते हैं कि भविष्य में इसका भारत पर क्या असर होगा। जहां तक संभव हो वरिष्ठ नागरिकों को अपने स्वयं के लिए और देश के लिए स्वस्थ और सक्रिय रहना चाहिए। बेहतर समझ और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की उन्नति के कारण आज यह बहुत संभव है।

यहाँ हमारे वरिष्ठ नागरिकों के लिए कुछ उपयोगी सुझाव हैं :

1. **शारीरिक और मानसिक गतिविधि** - नियमित रूप से व्यायाम करने से हृदय रोग, हड्डियों की कमजोरी, हिप फ्रैक्चर और शारीरिक क्रिया में गिरावट के जोखिम को कम करने की क्षमता बढ़ती है। उन्हें चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए कि उनकी उम्र और शारीरिक फिटनेस के लिए किस प्रकार का व्यायाम उपयुक्त होगा। एक सुखद सेवानिवृत्त जीवन जीने के लिए शरीर का वजन सामान्य श्रेणी में रखा जाना चाहिए। सक्रिय मन के लिए शरीर को सक्रिय रखना बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर, मस्तिष्क मांसपेशियों की तरह होता है, यदि आप उसका उपयोग नहीं करते हैं, तो उसके कार्य करने में शिथिलता आ जाएगी।

यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं :

- i) अपने सामाजिक जीवन को बनाए रखें और उत्साह तथा जोशभरी बातचीत में व्यस्त रहें।
  - ii) समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें पढ़ें।
  - iii) कोई ऐसा विषय, जिसमें आप की रुचि हो, उसका कोर्स करें।
  - iv) एक नया शौक पैदा करें।
  - v) एक भाषा सीखें।
  - vi) क्रोसवर्ड पहेली और शब्द खेल (Word game) खेलें।
  - vii) बुद्धि और स्मृति को चुनौती देने वाले खेल जैसे शतरंज, खेलें।
  - viii) टेलीविजन पर 'सवाल और जवाब' गेम शो देखें, और उन्हें प्रतिभागियों के साथ खेलें।
  - ix) ध्यान (मेडिटेशन) और नियमित रूप से विश्राम द्वारा तनाव को नियंत्रण में रखें।
2. **आहार** - जैसे जैसे उम्र बढ़ती है, ऊर्जा की जरूरत कम होती जाती है और भोजन के सेवन में भी गिरावट आती है। परिणामस्वरूप, बुजुर्ग पोषक तत्वों की कमी के लिए अतिसंवेदनशील हो जाते हैं। 75 अथवा 80 और उससे अधिक आयु के लोगों में, कुपोषण होना एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बन जाता है। एक स्वस्थ संतुलित आहार, जिसमें फलों और सब्जियों की मात्रा अच्छी हो, बहुत जरूरी है। विटामिन और कैल्शियम को नियमित रूप से लेने की सिफारिश की जाती है। यदि किसी व्यक्ति को चिकित्सक द्वारा किसी भोजन के प्रतिबंध की सलाह दी गई है, तो उसका पालन किया जाना चाहिए।
  3. **धूम्रपान और शराब** - धूम्रपान से पूरी तरह से बचा जाना चाहिए। एक सीमित मात्रा में मदिरा सेवन हानिकारक नहीं है, लेकिन प्रति सप्ताह 7 ड्रिंक और एक दिन में 3 ड्रिंक से अधिक नहीं होने चाहिए।
  4. **चोट की रोकथाम** - बुजुर्ग व्यक्तियों को चोट लगने का खतरा अधिक रहता है। उस उम्र में आम चोटें जटिल और घातक हो सकती हैं। यहाँ कुछ सुझाव हैं :



- i) जब आप ड्राइविंग के लिए फिट नहीं हैं, तो ड्राइव न करें। कभी भी ड्रिंक कर के ड्राइव न करें।
- ii) जोखिम भरे व्यवहार से बचें। फिसलन वाली सतहों पर चलने से बचें। सीढ़ी और बाथरूम में हैंड रेल का सहारा लें। गीली सतहों पर बाथरूम मैट रखें। बुजुर्ग लोग गीले बाथरूम में अक्सर गिर जाते हैं।
- iii) बेहतर ग्रिप वाले जूतों का प्रयोग करें। बेहतर संतुलन बनाए रखने के लिए छड़ी का प्रयोग करें।
- iv) बुजुर्गों के कमरे में रात में समुचित रोशनी रहनी चाहिए। मंदी रोशनी में चलने से बचें।



बाथरूम में हैंड रेल



बाथरूम में एंटी स्किड मैट

- v) प्रतिवर्ष आँखों की रोशनी की जाँच करानी चाहिए।
  - vi) यदि आप कोई दवा ले रहे हैं, तो कृपया अपने डॉक्टर से पूछें कि क्या इस दवा से चक्कर तो नहीं आएंगे।
5. **बीमारी की रोकथाम-**

- क) **टीकाकरण** - बुजुर्ग व्यक्ति छाती में संक्रमण की चपेट में जल्दी आते हैं। 65 वर्ष से अधिक की आयु के व्यक्तियों को वार्षिक रूप से इन्फ्लूएंजा और निमोनिया के लिए सिंगल डोज़ वैक्सीन की सिफारिश की जाती है।
  - ख) **हृदय रोग** - सीमित व्यायाम, उच्च रक्तचाप, मधुमेह और लिपिड का नियंत्रण, शरीर के वजन को सामान्य श्रेणी में रखना, धूम्रपान से परहेज आदि ऐसे महत्वपूर्ण उपाय हैं, जिनसे किसी भी उम्र में दिल के दौरों से बचा जा सकता है।
  - ग) **कैंसर** - यह ज्यादातर बुजुर्ग व्यक्तियों को प्रभावित करता है। इसके लिए सिफारिश की जाती है, कि प्रारंभिक अवस्था में कैंसर का पता लगाने के लिए रूटीन जाँच की जाए। कई अस्पतालों में वरिष्ठ नागरिकों के लिए किफायती दर पर कैंसर जांच की ऑफर दी जाती है।
  - घ) **संवेदी विकार** - अधिकांश बुजुर्ग व्यक्तियों में देखने, पहचानने और सुनने की क्षमता में कमी आ जाती है, जो गंभीर दुर्घटना को जन्म देती है। अतः आँखों की नियमित जांच जरूरी है। जब भी आवश्यक हो श्रवण क्षमता की जांच भी करवाई जानी चाहिए।
6. **मौजूदा रोगों का उपचार** - यदि कोई बुजुर्ग किसी क्रोनिक बीमारी, जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग आदि से पीड़ित है, तो नियमित जांच के साथ उसका उपचार जारी रखा जाना बहुत महत्वपूर्ण है। इससे उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा और साथ ही गंभीर जटिलताओं और पीड़ा से बचाव होगा।

★ वरिष्ठ नागरिकों के लिए यही मंत्र है कि वे सक्रिय रहें ★

डॉ. अमिय लाल भौमिक  
उप महाप्रबंधक (चिकित्सा)  
(सेवानिवृत्त)

अनुवाद - सुनीता शर्मा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा)



## वरिष्ठ नागरिक - हमारी धरोहर

सबके दिलों को जीत लो आचरण से,  
जैसे की मधुगन्ध वातावरण से।  
आशीषों का मोल होता बहुत है,  
जिन्हें देते हैं बुजुर्ग लोग,  
हमें अपने अन्तःकरण से।

उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा मिले आशीर्वाद हमें जीवन के रचनात्मक कार्यों को करते हुए सफलता की ओर बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। दैनिक जिम्मेदारियों को शांति से पूर्ण करते हुए कभी-कभी मार्ग में व्यवधान आ ही जाते हैं, तब माता-पिता की दी हुई शिक्षा काम आती है और हम बाधाओं से उबर जाते हैं। माता-पिता, गुरु और बुद्धिमान आदर्श पुरुषों की शिक्षाओं को हम अपनी धरोहर मानते हैं। उनके लंबे जीवन के सारे अनुभवों, सत्प्रेरणा, सद्भावना और ज्ञान से सीख लेकर हम अपना जीवन सार्थक और सजल बना सकते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में हम चंद्रमा को पार कर मंगल ग्रह तक पहुंच गए हैं और वहाँ पर बसने की तैयारी भी कर रहे हैं, लेकिन सफलता तभी मिलेगी जब हम सभी धरती पर प्रेम, हमदर्दी, भाईचारे और लगाव से रहना सीख जाएंगे। यह सारे गुण हमें अपने परिवार रूपी पाठशाला के मुखिया या बड़ों से पहले प्राप्त करने चाहिए। हमारे आदर्श पथ-प्रदर्शक वरिष्ठ बुजुर्गों का कहना है कि :-

गौरव की भाषा नई सीख,  
भिखमंगों की आवाज बदल।  
सिमटी बाहों को खोल गरुड़,  
उड़ने का अब अंदाज बदल।

प्रगति पथ पर,

आपका आशीष हमारा संबल है,  
आपका आदर्श ही हमारा बल है।  
आपकी सत्प्रेरणा, सद्भावना अरु ज्ञान से,  
प्रगति पथ पर अग्रसर हों,  
हम सभी सम्मान से।



हमें अपने बड़ों को सर्वश्रेष्ठ सम्मान, आदर और अपनी सेवा प्रदान करनी चाहिए क्योंकि सच्चे अर्थों में हमारे वरिष्ठ बुजुर्ग ही हमारी धरोहर और जीवन के आधार हैं।

दुर्गेन्द्र मिश्र

प्रबन्धक (उत्पादन योजना और नियंत्रण)

मेन यूनिट



## विमुद्रीकरण – भारतीय अर्थव्यवस्था

The degree of an economy's monetization, which has an important implication on economic growth, can be affected by the conduct of monetary policy, financial sector reform and episode of financial crisis.

Cameron McLoughlin

**भारत** के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय अर्थव्यवस्था पटरी पर लाने के लिए एक महत्वपूर्ण व साहसिक कदम विमुद्रीकरण सर्जिकल स्ट्राइक के रूप में उठाया और 8 नवम्बर 2016 मध्यरात्रि से 1000 और 500रु के नोट कानूनी तौर से रद्द कर दिए तथा नये नोट को प्रचलन में लाए जाने की घोषणा की। रिजर्व बैंक द्वारा 2000रु के नोट और 500रु के नए नोट 10 नवम्बर 2016 से परिचालित किए गए, साथ ही 100, 50, 10, 5, 2, 1 रुपए के नोट कानूनी तौर से जारी रहे।

### पूर्व परिस्थिति:

भारतीय अर्थव्यवस्था में काले धन को कम करने के लिए स्वाधीनता के पहले और उसके बाद भी पुराने नोटों को रद्द करके नये नोटों का प्रचलन किया गया है। सन 1946 में 1000रु अथवा उससे ज्यादा मूल्य के नोटों को रद्द किया गया था। उस घटना से इस तरह शोरगुल नहीं मचा था। सन 1987-88 में 500रु का नोट प्रचलन में था। 1000रु के नोट नवम्बर 2000 से प्रचलन में आए। 1000रु के नोट सबसे पहले 1938 में ब्रिटिश सरकार के अधीन में आए थे, जो बाद में 1946 में रद्द कर दिए गए। अभी कुल मुद्रा संख्या 16,415 बिलियन नोट की थी जिसमें 1000रु के नोट लगभग 38.6% (रु 6,326 बिलियन), 500 रु के 47.8% (7854 बिलियन) थे। मार्च 1990 में 500रु के नोट 4.1% से 31 मार्च 2016 में 47.8% हो गए। 1000रु के नोट 2001 में 1.7% से बढ़ कर 2016 में 38% हो गए। भारत की राष्ट्रीय आय 1,35,761/- बिलियन रु में से 500 और 1000रु के नोट का मूल्य 14,180 बिलियन रु था, जो 2015-16 की जीडीपी का 10.5% है।

### उद्देश्य :

1. भ्रष्टाचार अर्थव्यवस्था की वृद्धि को रोक रहा है। भ्रष्टाचार सरकार की दक्षता के विरुद्ध है, जो विकास में बाधक है। मैक्रो फाइनेन्शियल स्टेबिलिटी (Macro Financial Stability), निवेश (Investment), मानव पूंजी निर्माण और उत्पादकता (Human Capital Formation and Productivity) को बढ़ाने के लिए कठोर नीति, सही प्रशासन और तकनीकी का सही प्रयोग भी जरूरी है।
2. नोटबंदी द्वारा आतंकवादियों और देश में काला धन के कारोबार को रोकने के लिए प्रयास किया गया। आतंकवादी कार्यकलाप को बढ़ावा देने के लिए विगत कुछ वर्षों में वित्तीय पोषण में बढ़ोतरी

हुई है। नकली नोट नियमित तौर पर आतंकवादी कामकाज में लग रहे हैं।

### प्रभाव :

1. काला धन जो भारत की व्यवस्था व इसकी अर्थव्यवस्था में सुधार को खोखला बना रहा है, उस पर रोक लगेगी।
2. आतंकवादी गतिविधियों पर रोक लगेगी।



3. अंतर्राष्ट्रीय संघ कम्प्यूनिटी में अपना विश्वास वापस लाने के लिए भी भारत भ्रष्टाचार रोकने की कोशिश में लगा हुआ है। इस कार्य से Corruption Index में भारत का रैंक सुधरेगा।
4. हालांकि, कुछ समय के लिए निम्नलिखित अस्थायी प्रभाव भी पड़ने की सम्भावना है, जिन्हें सरकार की पैनी नजर काबू में रखेगी :
  - कृषि क्षेत्र में उत्पादन कम होने की सम्भावना तथा इनडस्ट्री और सर्विस सेक्टर में उत्पादकता पर प्रभाव।
  - अगणनीय अर्थव्यवस्था में उत्पादन जैसे कि सूक्ष्म, मध्यम और छोटे उद्यम में नोट की कमी की वजह से कुछ समय के लिए Micro Finance Institution के कार्य की गति पर प्रभाव।
  - निष्क्रिय धन का खुलासा होने से जमा की गई पूंजी का प्रवाह होना जरूरी है। लिक्विडिटी कोन्स्ट्रेंट का उत्पादन पर प्रभाव व नोट की कमी से उत्पादकता के साथ साथ मुद्रास्फीति पर प्रभाव।
  - कुछ समय के लिए विनिमय दर पर प्रभाव।

### बैंकिंग क्षेत्र में प्रभाव :

1. पीएसयू बैंक में Non-Performing Asset (NPA) कम होगी। श्री एस एस मुन्द्रा, डिप्टी गवर्नर, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की



रिपोर्ट के अनुसार सितम्बर 2015 में वास्तविक डिफ़ॉल्ट दर (ग्रेस एनपीए, स्ट्रक्चरल असेट एवं राइट ऑफ असेट सहित) सभी बैंकों के लिए 14.1%, पीएसयू बैंकों के लिए 17%, प्राइवेट बैंकों के लिए 6.7%, विदेशी बैंकों के लिए 5.8%, बड़ी इंडस्ट्रीज़ में डिफ़ॉल्ट अनुपात 23.7%, माइक्रो इंडस्ट्रीज़ में 12.3% थी।

- भारतीय बैंकों को अपना कैपिटल टू रिस्क वेटेड असेट रेश्यो (CRAR) आधार III सामान्य रखने के लिए 6 लाख करोड़ रुपए की आवश्यकता होगी।
- पीएसयू बैंकों को सार्वजनिक/निजी क्षेत्र से पूंजी/इक्विटी हस्तांतरण के माध्यम से 50% नई पूंजी प्रवाह होने की आवश्यकता होगी।
- विमुद्रीकरण के बाद सरकार की आय 3.54 लाख करोड़ रुपए बढ़ गई। वित्तीय वर्ष 2015-16 में केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार का राजकोषीय घाटा और राजस्व घाटा 8,85,290 करोड़ रु और 3,40,754 करोड़ रुपए है। केंद्रीय सरकार का आर्थिक घाटा 5,35,090 करोड़ रुपए है। विमुद्रीकरण के बाद सरकार का राजकोषीय घाटा कम होगा और पीएसयू बैंक में निवेश कर सकते हैं। बैंकों को अस्वीकृत नोट 75% (रु 10.63 लाख करोड़) मिलेंगे और संभावना है कि 25% ऐसे नोट बैंकों में जमा नहीं होंगे। सरकार की अनुमानित राशि 3.54 लाख करोड़ रुपए से देश को इस साल राजकोषीय घाटा कम करने में सहायता मिलेगी।
- 10.63 लाख करोड़ रुपए जनता की जमा राशि पुराने नोट में और नए नोट निकालने की मात्रा सीमित होने से बैंक में ज्यादा लिक्विडिटी की आशा कर सकते हैं। बैंक अपना एनपीए नियंत्रित करके कम ब्याज दर पर क्रेडिट वितरित कर सकते हैं, अपनी बैलेंस शीट अच्छी कर सकते हैं। सरकारी तौर पर बैंक का पूंजी निवेश बढ़ सकता है।
- डिजिटल कंपनी को बढ़ावा देना, जैसे कि Pay-tm का लेन देन एक सप्ताह में 300% बढ़ गया।

### नोटों की आपूर्ति पर प्रभाव:

पुराने 500 और 1000 रु के नोट अमान्य होने के कारण नोटों की आपूर्ति कुछ समय के लिए कम हो गई थी, लेकिन ये शीघ्र ही सामान्य हो गई। इससे काले धन की भी आपूर्ति कम होगी। नए नोट आने के साथ साथ मार्केट में नोटों का परिचालन कम होगा।

### माँग पर प्रभाव :

नोटों के सीमित प्रचलन के दौरान मार्केट में कुल माँग कम हो सकती है और निम्नलिखित क्षेत्र प्रभावित हो सकते हैं -

- उपभोक्ता वस्तुएँ
- रिएल एस्टेट और संपत्ति
- गोल्ड और लज्जरी का सामान
- ऑटोमोबाइल (कुछ हद तक)

उपरोक्त क्षेत्रों में माँग कुछ कम होने की संभावना है क्योंकि इन सब में नगद लेनदेन ज्यादा है।

### कीमत पर प्रभाव:

कुल माँग कम होने के कारण कीमत में भी कमी आने की आशा है।

- कीमतों की माँग में कमी के कारण उत्पादकता की अस्थाई कमी, लेकिन कार्ड और चेक का प्रयोग खरीददारी में कुछ हद तक सुधरेगा।
- रिएल एस्टेट क्षेत्र में कीमत कम होने की संभावना है। सम्पत्ति की बिक्री, जहाँ पर नगद द्वारा लेन देन ज्यादा होता है, बैंक और चेक का उपयोग कम होता है। कुछ समय के बाद स्थिति में सुधार आएगा।

**भुगतान के वैकल्पिक माध्यम :** डिजिटल सिस्टम जैसे e-Wallet & apps, ऑनलाइन ट्रांज़ैक्शन, e-Banking की सहायता से प्लास्टिक मनी का व्यवहार ज्यादा होगा।

### भविष्य की कार्रवाई :

- प्रत्यक्ष कर कम करके नोटों की माँग कम करना।
- जीएसटी को चालू करके पूर्व शिड्यूल आर्थिक व्यवस्था को पुनः जीवित करना।
- स्टैम्प ड्यूटी कम करके रियल एस्टेट बाजार में तेजी लाना।
- विमुद्रीकरण की प्रक्रिया में जिन लोगों ने काला धन जमा किया है, उनको पहचान कर उचित कार्रवाई करना।
- अधिक आय वाले लोग जो आयकर रिटर्न नहीं भर रहे हैं, उन्हें आयकर प्रक्रिया में लाना।
- सरकार यूएसए की तरह राजनीतिक अनुदान और चुनाव के वित्त पोषण में पारदर्शिता ला सकती है।

काले धन को नियंत्रित कर देश की अर्थव्यवस्था में सुधार लाने, आतंकवाद पर लगाम लगाने आदि के लिए विमुद्रीकरण सरकार का एक साहसिक, महत्वपूर्ण और सराहनीय कदम है। विमुद्रीकरण, डिजिटलाइजेशन तथा आधार से काला धन रखने वालों की भावी पीढ़ी पर नियंत्रण लगेगा। कुछ चीजों व व्यवस्थाओं पर अल्पकालिक प्रभाव पड़ सकता है लेकिन सरकार की पैनी नजर और सुशासन के जरिए इन्हें नियंत्रित किया जा सकेगा और देश की अर्थव्यवस्था में विमुद्रीकरण के दीर्घकालिक फायदे होंगे।

**नवनीता बेरा**

उप प्रबन्धक (ईआरपी), मेन यूनिट



## मानसिक एवं शारीरिक उत्पादकता वृद्धि के उपाय

**ई**श्वर ने मनुष्य को सोचने समझने एवं निर्णय लेने की अद्भुत शक्ति प्रदान की है, जिसका मुख्य केंद्र मस्तिष्क है। कहा गया है कि जैसा खाये अन्न वैसा होय मन। इस संसार में मनुष्य इंद्रियों (आँख, नाक, कान, त्वचा एवं जीभ) का गुलाम बन कर रह गया है। अर्थ यह है कि आँखें सुंदर वस्तुओं को देखना चाहती हैं, नाक खुशबूदार वस्तुओं एवं भोजन को चाहती है, कान दूसरों की बुराई एवं अपनी बड़ाई सुनना चाहते हैं, त्वचा कोमलता के स्पर्श के लिए लालायित रहती है। जीभ तो चटोरी एवं स्वादिष्ट खाद्य वस्तुओं में लिप्त होकर रह गई है। जो अपनी जीभ को काबू में न रख सका वह अच्छा आहार त्यागकर चटपटे आहार करने लगा, जिसका नतीजा हुआ तरह तरह की बीमारियों का आक्रमण। अब अस्वस्थ शरीर, मष्तिष्क एवं मन से उत्पादकता की कल्पना करना भी अनुचित है। शारीरिक क्षमता को बढ़ाने के लिए हमें पौष्टिक आहार लेना होगा, जिससे हम स्वस्थ रहकर अधिक कार्य कर सकें एवं थकान भी न हो। याद रहे मनुष्य कमजोर एवं बीमार होने पर अधिक थकान महसूस करता है। अब ये बात समझनी होगी कि स्वास्थ्यवर्धक एवं पौष्टिक भोजन के अलावा और कोई भोजन न किया जाए क्योंकि स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का प्रभाव उत्पादकता पर ही तो पड़ेगा। संतुलित भोजन निम्न प्रकार से शारीरिक एवं मानसिक उत्पादकता बढ़ाने में मदद कर सकता है :

- भोजन पर कम खर्च
- कम लागत पर अधिक पौष्टिक भोजन।
- असंतुलित भोजन करने के कारण अतिरिक्त चर्बी हटाने में न तो समय ही खर्च होगा, न ही रुपया पैसा और न ही व्यायाम की दौड़ धूप।
- उत्तम निर्णायक क्षमता।
- अच्छा स्वास्थ्य रहने के कारण दवाइयों पर कम खर्च।
- स्वस्थ मन एवं मस्तिष्क देगा अच्छी सोच एवं बेहतर उत्पादकता।

अतः अगर आप एक सफल, स्वस्थ, मेहनती, अधिक कार्य करने वाले, धन सम्पन्न, दयावान, रूपवान, गुणवान, सत्यवादी, प्रशंसक एवं प्रेमी व्यक्ति बनकर सुखद जीवन जीना चाहते हैं, तो सिर्फ एक ही रास्ता है और वह है संतुलित भोजन एवं संतुलित जीवनचर्या।

अंत में कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं :

स्वस्थ रहे मन तेरा तन भी, न हो तुझको कोई थकान।  
बिन व्यायाम बिन जिम के तू, रहे हमेशा ही बलवान।  
करके भोजन संतुलित, बना रहे स्वस्थ और धनवान।  
इसी तरह से काम करे तो, उत्पादकता हो महान।

**के एस वर्मा**

महाप्रबंधक (आईईपी, फायर एण्ड सेफ्टी)

### वृक्ष

**वृ**क्ष ने बचा रखा है प्राणी जगत, देकर अपना अमृतजान।  
वृक्ष लगा कर खाद पानी डाल कर, करेंगे हम उसका यतन।  
वृक्ष है धरती के सीने में स्वच्छ हरियाली का रूप,  
वृक्ष के लिए आज जगत में नहीं है कोई चाप और ताप।  
वृक्ष को देंगे हम स्नेह और श्रद्धा, लगाएंगे दे कर अपना मन।  
वृक्ष ही दूर करेगा दूषित हवा, बचाएगा हमारा जीवन।  
वृक्ष लगाएँ भाइयों और बहनों, चलो हम सब मिलके।  
वृक्ष से धरती हँसेगी, सावन आएगा बरस के।  
वृक्ष दे फल, वृक्ष दे जल, वृक्ष तो है अमूल्य धन।  
वृक्ष के पास वृक्ष लगाकर बनाएँ कानन और वन।

**विजय कुमार दास**

वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)

तारातला यूनिट



## कल्पना चावला का जीवन

पूरा नाम – कल्पना जीन पियरे हैरिसन  
(विवाह पूर्व – कल्पना बनारसी लाल चावला)  
जन्म - 17 मार्च 1962  
जन्मस्थान – करनाल, पंजाब (जो अभी हरियाणा में है)  
पिता – श्री बनारसी लाल चावला  
माता - श्रीमती संज्योति चावला  
पति - श्री जीन पियरे हैरिसन

इंजीनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़ से पूरी की। वे 1982 में संयुक्त राज्य अमेरिका चली गईं और 1984 में पंजाब वैमानिक अभियांत्रिकी (एयरोनोटिकल इंजीनियरिंग) में विज्ञान स्नातक की उपाधि टैक्सास विश्वविद्यालय आरलिंगटन से प्राप्त की। फिर उन्होंने ठान लिया कि उन्हें अन्तरिक्ष यात्री बनना है। 1986 में कल्पना जी ने दूसरी विज्ञान स्नातक और 1988 में कोलोरेडो विश्वविद्यालय से वैमानिक अभियांत्रिकी में पीएचडी की उपाधि पाई।



### कल्पना चावला करियर

1988 के अंत में उन्होंने नासा के एम्स अनुसंधान केंद्र के लिए ओवेसैट मैथड्स इंक के उपाध्यक्ष के रूप में काम करना शुरू किया, उन्होंने वहाँ वी/एसटीओएल में सीएफडी पर अनुसंधान किया। कल्पना जी को हवाई जहाजों, ग्लाइडरों व व्यावसायिक विमान चालक के लाइसेंसों के लिए प्रमाणित उड़ान प्रशिक्षक का दर्जा हासिल था। उन्हें एकल व बहु इंजन वायुयानों के लिए व्यावसायिक विमानचालक के लाइसेंस भी प्राप्त थे। अन्तरिक्ष यात्री बनने से पहले वे नासा की वैज्ञानिक थीं। 1991 में वे संयुक्त राज्य अमेरिका की नागरिक बनीं।

**क**ल्पना चावला पहली भारतीय अमेरिकी अन्तरिक्ष यात्री और अन्तरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला थीं। 1997 में वह अन्तरिक्ष शटल मिशन विशेषज्ञ थी और 2003 में कोलम्बिया अन्तरिक्ष यान आपदा में मारे गए सात यात्रियों के दल में से एक थीं।

### प्रारम्भिक जीवन

भारत की बेटी कल्पना चावला का जन्म 17 मार्च 1962 को करनाल, पंजाब में हुआ जो अभी हरियाणा में है। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा टैगोर बाल निकेतन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, करनाल से और बैचेलर ऑफ इंजीनियरिंग (एयरोनोटिकल इंजीनियरिंग) 1982 में पंजाब

कल्पना जी मार्च 1985 में नासा के अंतरिक्ष यात्री कोर में शामिल हुईं और उन्हें 1996 में अपनी पहली उड़ान के लिए चुना गया। उनका पहला अंतरिक्ष मिशन 19 नवम्बर 1997 को छह अंतरिक्ष यात्री दल के हिस्से के रूप में अन्तरिक्ष शटल कोलंबिया की उड़ान एसटीएस - 87 से शुरू हुआ। कल्पना जी अंतरिक्ष में उड़ने वाली भारत में जन्मी प्रथम महिला थीं और अंतरिक्ष में उड़ने वाली भारतीय मूल की दूसरी व्यक्ति थीं। राकेश शर्मा ने 1984 में सोवियत अंतरिक्ष यान में उड़ान भरी थी। कल्पना जी ने अपने पहले मिशन में अंतरिक्ष में 360 से अधिक घंटे बिताए।

एसटीएस-87 की उड़ानोपरांत गतिविधियों के पूरा होने पर कल्पना जी



ने अंतरिक्ष यात्री कार्यालय में, तकनीकी पदों पर काम किया, जिसके लिए उन्हें पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 2000 में उन्हें एसटीएस-107 में अपनी दूसरी उड़ान के कर्मचारी के तौर पर चुना गया। यह अभियान लगातार पीछे सरकता रहा, क्योंकि विभिन्न कार्यों के नियोजित समय में टकराव होता रहा और कुछ तकनीकी समस्याएँ भी आईं, जैसे कि शटल इंजन बहाव अस्तरों में दरारें। 16 जनवरी 2003 को कल्पना जी ने अंततः कोलंबिया पर चढ़ के विनाशरत एसटीएस-107 मिशन का आरंभ किया। उनकी जिम्मेदारियों में शामिल थे, स्पेसहैब और कुछ छोटे प्रयोग जिसके लिए कर्मचारी दल ने 80 प्रयोग किए, जिनके जरिए पृथ्वी व अंतरिक्ष विज्ञान, उन्नत तकनीक विकास व अंतरिक्ष यात्री स्वास्थ्य व सुरक्षा का अध्ययन हुआ।



### कल्पना चावला मृत्यु

1 फरवरी 2003 को कोलंबिया अंतरिक्ष यान पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश करते ही टूटकर बिखर गया। देखते ही देखते अंतरिक्ष यान और उसमें सवार सातों यात्रियों के अवशेष टेक्सास नामक शहर पर बरसने लगे और सफल कहलाया जाने वाला अभियान भीषण सत्य बन गया। कल्पना चावला निश्चित ही आज की लड़कियों की आदर्श हैं। आज की लड़कियों को ये सोचना चाहिए कि जब कल्पना चावला एक मध्यमवर्गीय परिवार से होने के बावजूद इतना सब कर सकती है तो वे क्यों नहीं? कल्पना चावला ने अन्तरिक्ष में जाकर पूरे विश्व में भारत का परचम लहराया।

### पुरस्कार (मरणोपरांत):

कॉंग्रेसनल अन्तरिक्ष पदक के सम्मान  
नासा अन्तरिक्ष उड़ान पदक  
नासा विशिष्ट सेवा पदक

### शुभजीत अधिकारी

सुपुत्र – श्री तपन अधिकारी  
हॉट मील कैटीन, 61 पार्क यूनिट



## वाह रे तेरा न्याय

**पु**रातन के रावण का पुतला तुम हर साल जलाते हो, वर्तमान के रावण का क्या, जो हर रोज पनपाते हो। वर्तमान के रावण से भला पुरातन का रावण है, जिसने सीता मईया का हरण कर उनके सुहाग का मान रखा। वर्तमान के रावण की क्या बात तुम्हें बतलाऊं मैं, हर नारी इनके हवस का शिकार हुई। क्या सुहागन, क्या विधवा, क्या बच्ची, क्या बूढ़े हैं? नहीं किसी का सम्मान इन्हें, नहीं किसी को छोड़े हैं। अग्नि परीक्षा की शिक्षा दी तुमने हर नारी को, पर राम जैसी सोच न दी हर पुरुष जाति के भैया को। आत्मरक्षा की शिक्षा देकर हमें सुरक्षित करते हो, कभी न दी उनको शिक्षा जिसे हवसी तुम कहते हो, आत्मरक्षा का पहनावा तुम ट्राउजर को कहते हो, परंतु पहन कर निकले कमीज पैट उसे बेशर्म तुम कहते हो। सूट, साड़ी में भी क्या कोई आत्मरक्षा कर पाया है? उल्टा अपने साथ सदा ही फांसी का फंदा पाया है। उस मरे रावण का पुतला तुम हर साल जलाते हो, पर अपने रावण का क्या, जो हर रोज पनपाते हो।

### अवन्तिका पाल

बहन – श्री भूषण पाल, सहायक प्रबन्धक  
एमएफओएस, मेन यूनिट





### बेटियाँ

**बे**टियाँ हैं घर की लक्ष्मी  
परिवार की दुलारी  
माँ बाप के घर राज करें  
बन राजकुमारी

बेटा है अगर बाप का  
बुढ़ापे का सहारा  
बेटी है माँ-बाप की  
आँखों का सितारा

होती है इसके सर पर  
दो कुल की पूरी लाज  
आसां नहीं संभालना  
है काँटों भरा ये ताज

मत कहना इन्हें तुम कभी  
यह धन है पराया  
होती हैं सारी बेटियाँ  
माँ-बाप का साया

मत हत्या करो इस भ्रूण की  
तोड़ जमाने की बेड़ियाँ  
रो रही है गर्भ में  
अपनी नन्ही सी बेटियाँ

फट जाता है कलेजा  
जब होती है विदाई  
लगता है साथ छोड़ चली  
अपनी ही परछाई

छोड़कर तुम ये फर्क  
इन्हें सीने से लगाओ  
बेटी हो या बेटा  
इन्हें गले से लगाओ

भर जाती हैं मेरी आँखें  
तेरी याद में अक्सर  
खुश रहना मेरी लाडली  
ये दुआ है जीवन भर

**चाँदनी साव**

धर्मपत्नी – श्री सुरेन्द्र कुमार साव  
पर्यवेक्षक (सिविल), मेन यूनिट



### जनसंख्या वृद्धि

**ज**नसंख्या, जन की संख्या,  
कम रहे तो समस्या, बढ़ जाए तो भी समस्या।

तेजी से बढ़ती जो जन की संख्या, बहुत सी पैदा करती समस्या,  
भोजन, पानी, शुद्ध हवा तक सब पर भारी है जनसंख्या।

खाद्यान्न संकट खड़ा हो गया, ऊर्जा संकट बड़ा हो गया  
भुखमरी चारों ओर बढ़ी, गरीबी की समस्या सामने खड़ी।

बेरोजगारी हताशा ला रही, आर्थिक संकट की चिंता खाए जा रही,  
महंगाई तेजी से बढ़ रही, आम लोगों का जीना मुश्किल कर रही।

भ्रष्टाचार तेजी से बढ़ रहा, जनता को न्याय नहीं मिल रहा,  
जंगल काटे जाते हैं, ऊँचे मकान बनाते हैं, पर पेड़ न कोई लगाते हैं।

जनसंख्या पर रोक लगाओ, विकास की धार बढ़ाओ,  
सुखी जिंदगी का आधार, छोटा और स्वस्थ परिवार।

हर एक को कुछ ना कुछ तो कदम उठाना होगा,  
छोटा परिवार, सुखी परिवार का नारा हमेशा लगाना होगा।

**मनीषा टोप्यो**

सुपुत्री – श्री महादेव टोप्यो  
पर्यवेक्षक (यार्ड आधुनिकीकरण)  
मेन यूनिट



### वरिष्ठ नागरिक – हमारी धरोहर

**हे** ईश्वर यदि दे बुढ़ापा, तो अपनों का प्यार भी दे  
अन्यथा नहीं दे – ये आशाएं, ये आकांक्षाएं,  
ये प्रतीक्षा और ये लम्बी उम्र, बिन मांगे नहीं दे  
अपनत्व के बिना ये सब कुछ।

#### वरिष्ठ नागरिक कौन ?

कोई भी नागरिक जिसने 60 वर्ष की आयु पूरी की है, वरिष्ठ नागरिक माना जाता है। वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण मानव मृत्यु दर में अप्रत्याशित गिरावट आई है। मानव स्वास्थ्य एवं दीर्घायु जीवन पाने में सफल हुआ है। आज भारत सहित समस्त विश्व में वृद्धों की संख्या में तीव्रता से वृद्धि हो रही है। युनाइटेड नेशन ग्लोबल और एजिंग 2007 के अनुसार पूरे विश्व में भारत और चीन में बुजुर्गों की संख्या में सर्वाधिक वृद्धि हो रही है। वर्तमान में भारतवर्ष में आठ करोड़ व्यक्ति वरिष्ठ नागरिकों की श्रेणी में आते हैं। यह संख्या 2025 तक 18 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान लगाया जा रहा है। भारत में यह हमारी संस्कृति, समाज और परिवार की परम्परा रही है कि हम बुजुर्गों की देखभाल करें। वरिष्ठ नागरिकों को उच्च प्रतिष्ठा दें, उन्हें सभी मामलों में प्राथमिकता तथा आदर सत्कार दें। लेकिन तीव्रता से बढ़ती बुजुर्गों की संख्या और भौतिक विकास के कारण तेजी से आ रही जीवन शैली में बदलाव और सामाजिक संरचना में परिवर्तन के कारण वरिष्ठ नागरिक पूरे देश और समाज के लिए चिंता का विषय बनते जा रहे हैं। जिस व्यक्ति ने पूरी उम्र लगा दी दूसरों के हितों के लिए, उसी व्यक्ति को उम्र बढ़ने पर बुजुर्ग बना कर परिवार वाले वृद्धाश्रम में धकेल देते हैं। वह परिवार के लिए एक बोझ समझा जाता है। वृद्ध होने के बाद इंसान को कई रोगों का सामना करना पड़ता है, उसे चलने फिरने में दिक्कत आती है।

#### वरिष्ठ नागरिक हमारी धरोहर हैं।

बुजुर्गों के सम्मान व सेवा से घर स्वर्ग के समान बनता है। वरिष्ठ नागरिक समाज की अनमोल धरोहर हैं। वे अपने अंदर अनुभवों का खजाना समेटे हुए हैं। वे एक बरगद के पेड़ की तरह हैं, जो समाज के सभी लोगों को छाया देते हैं। वे समाज की ऐसी अमूल्य विरासत हैं, जिन्होंने देश और समाज को बहुत कुछ दिया है। उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का व्यापक अनुभव है। देश को ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए युवा वर्ग को वरिष्ठ नागरिकों के अनुभव से लाभ उठाना चाहिए क्योंकि वे उस अक्षय पात्र के समान हैं, जिनके पास प्रचुर ज्ञान का भंडार है। वृद्धावस्था में हमें उनकी देखभाल करनी चाहिए और उन्हें यह अहसास कराया जाना चाहिए कि वे हमारे लिए खास महत्व रखते हैं। हमारे शास्त्रों में भी बुजुर्गों का सम्मान करने की राह दिखाई गई है।



#### अंतर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस

सम्पूर्ण विश्व में वरिष्ठ नागरिकों के साथ होने वाले अन्याय और उनके प्रति दुर्व्यवहार पर लगाम लगाने के लिए तथा उनमें अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न कराने के उद्देश्य से 14 दिसम्बर 1990 के दिन संयुक्त राष्ट्र ने हर साल 1 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस के रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया। इससे उन्हें अपनी अहमियत का अहसास होगा ताकि समाज और परिवार में उन्हें उचित स्थान दिलवाया जा सके। तब से हर साल 1 अक्टूबर को वरिष्ठ नागरिक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

#### भारत में वरिष्ठ नागरिकों की स्थिति

भारत में वरिष्ठ नागरिकों की रक्षा और उनके अधिकार दिलवाने के लिए कई कानूनों का निर्माण किया गया है। केंद्र सरकार ने भारत में वरिष्ठ नागरिकों की आरोग्यता और कल्याण के लिए वर्ष 1999 में वृद्ध सदस्यों के लिए राष्ट्रीय नीति तैयार की, जिसके तहत व्यक्तियों को स्वयं तथा पति या पत्नी के बुढ़ापे के लिए व्यवस्था करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है और साथ ही परिवार वालों को वृद्ध सदस्यों की देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाता है। इसके साथ ही 2007 में माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण विधेयक संसद में पारित किया गया है। इसमें माता पिता के भरण पोषण, वृद्धाश्रमों की स्थापना, चिकित्सा सुविधा की व्यवस्था और वरिष्ठ नागरिकों के जीवन और सम्पत्ति की सुरक्षा का प्रावधान किया गया है।

**उपसंहार :** यह जीवन का एक कड़वा सच है कि जो आज जवान है उसे कल बूढ़ा भी होना होगा। इस सच से कोई बच नहीं सकता है। इसके बावजूद भी वरिष्ठ नागरिकों के साथ अत्याचार होता है। अपने जीवन यापन के लिए परिवार पर निर्भर होने के कारण परिवार वाले उनकी उपेक्षा करते हैं। हमारे देश की सरकार इतनी सक्षम नहीं है कि वह वरिष्ठ नागरिकों की इतनी विशाल संख्या का भरण पोषण कर सके। इसके लिए जरूरी है कि बुजुर्ग और युवा दोनों पीढ़ियाँ एक दूसरे के मान सम्मान एवं भावनाओं की कद्र करें, एक दूसरे की खुशियों का ध्यान रखें। तब ही परिवार का वातावरण सहज और शांतिपूर्ण बन सकता है। इसके साथ साथ युवा पीढ़ी को वरिष्ठ नागरिकों को देश की धरोहर समझकर उनका ध्यान रखना चाहिए।

#### प्रियंका सामंता

धर्मपत्नी – श्री सौरिस सामंता  
प्रबंधक, निपटान विभाग  
मेन यूनिट



### नैतिकता और विकास



**भारतीय** समाज में कुछ समय से भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठ रही है और साथ ही साथ विकास या आर्थिक प्रगति के विषय पर भी जोर दिया जा रहा है। आज़ादी के करीब 70 वर्ष बीतने के बाद यदि अध्ययन करें, अपने देश की अर्थव्यवस्था पर, तो पाएंगे कि भारत आर्थिक उन्नति की ओर अग्रसर है

लेकिन इसके विपरीत भारत में भ्रष्टाचार भी बढ़ा है और आज के समय में इसकी जड़ें गहरी और व्यापक रूप ले चुकी हैं, जैसे भ्रष्टाचार बहुत आम बात हो गयी है। भ्रष्टाचार किस प्रकार से नुकसान पहुंचाता है, इसका एक उदाहरण लें। जैसे मान लें कि किसी जिले में एक स्कूल, एक पुल और एक लघु उद्योग के लिए पैसे आए, भ्रष्टाचार के कारण ये कार्य केवल कागजों पर हुए, अब न स्कूल बना, न पुल बना और न लघु उद्योग खुला। इसका नुकसान आने वाले पूरी पीढ़ी पर पड़ता है, स्कूल न होने से आने वाली पीढ़ी की शिक्षा और भविष्य का नुकसान, पुल न होने से सुविधाओं का अभाव और लघु उद्योग जो कल को एक बड़ा रूप ले सकता था और रोजगार के अवसर दे सकता था, वहाँ के लोगों की आर्थिक स्थिति सुधार सकता था, वो एक पूरा विकल्प ही खत्म हो गया। इतनी सारी योजनाओं और पैसे खर्च होने के बाद भी जमीनी स्तर पर कई बार सुधार देखने को नहीं मिलता।

भ्रष्टाचार और आर्थिक विकास एक साथ नहीं हो सकते, ये एक दूसरे के विरोधी हैं। जब तक मनुष्य स्वयं ईमानदार न हो, विकास के कार्य कठिन बने रहेंगे। ईमानदारी मनुष्य की स्वयं की नैतिकता और समाज के प्रति उसकी ज़िम्मेदारी और प्रतिबद्धता का विषय है। हर जगह

सीसीटीवी कैमरा और पुलिस या सतर्कता विभाग को नहीं लगाया जा सकता। नैतिकता के विषय में अगर विचार करें तो पाएंगे हमारा समाज नैतिकता के विषय में भी नीचे जा रहा है, मतलब आज के युवाओं में नैतिकता (स्वयं के व्यवहार के प्रति ज़िम्मेदारी) घट रही है। इसका प्रमाण हमें आए दिन समाचारों में आने वाली नकारात्मक खबरों से मिल जाता है। इसका एक कारण युवाओं में बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति, भोग विलासिता के जीवन के प्रति आकर्षण, पैसे को और निज स्वार्थ को बाकी चीजों के ऊपर रखना तथा जल्दी धनवान बनने और खर्च करने की इच्छा भी है। इसके दुष्परिणाम फिर जीवन में आने वाली कठिनाइयों के रूप में झेलने पड़ते हैं।

एक नागरिक के रूप में हम सबको इस बात का एहसास करना चाहिए कि जीवन में नैतिकता में ऊपर उठे बिना आर्थिक संपन्नता कठिन है। अपने स्तर पर अपने और आस पास के नैतिक विकास के लिए कार्य करते रहना चाहिए। मनुष्य जीवन में नैतिकता का बड़ा महत्व है। जीवन में सुख शांति और संपन्नता के लिए रिश्तों में नैतिकता, एक दूसरे के प्रति व्यवहार और विचार एक महत्वपूर्ण विषय है।

नैतिकता हमें शिक्षा देती है कि हमें अपने समाज के वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान करना चाहिए और उनकी आवश्यकताओं, सुविधाओं का ध्यान रखना चाहिए। आखिर आज का युवा कल को स्वयं वरिष्ठ नागरिक बनेगा और उसे भी इस पड़ाव से गुजरना होगा।

शायद इसीलिए कहते हैं, मनुष्य का जन्म (अच्छा जन्म) तो सहजता से मिल जाता है, मनुष्य के जीवन (अच्छे जीवन) के लिए प्रयास करना पड़ता है।

**शिखा सिंह**

धर्मपत्नी – श्री विजय सिंह  
उप प्रबन्धक (सामग्री विभाग)  
तारातला यूनिट

लक्ष्य को ही अपना जीवन-कार्य समझो। हर क्षण उसी का चिंतन करो, उसी का स्वप्न देखो, उसी के सहारे जीवित रहो।

- विवेकानंद



### आयुर्वेदिक पंचकर्म चिकित्सा

**आ**युर्वेद के अनुसार रोगों को तीन प्रमुख दोष वात, पित्त और कफ बढ़ाते हैं। इन्हें कम करने में आयुर्वेदिक पंचकर्म चिकित्सा मददगार है। इससे पुराने दर्द को दूर करने में मदद मिलती है। आयुर्वेद में पंचकर्म पुराने दर्द का इलाज करने का कारगर उपाय है। यह समग्र कायाकल्प की ऐसी उपचार पद्धति है जिसका लक्ष्य शरीर के विषैले तत्त्वों को बाहर निकालकर रोगी को स्थायी रूप से राहत पहुंचाना है। पंचकर्म चिकित्सा का इस्तेमाल जोड़ों का दर्द दूर करने के अलावा त्वचा के रोमछिद्रों को खोलने, रक्त धमनियों और शिराओं के ब्लॉकेज दूर कर रक्त संचार बेहतर करने में होता है। पंचकर्म में पांच चिकित्सा अहम रूप से अपनाई जाती हैं, जो हैं- बस्ती (औषधीय एनिमा), अभ्यंग (पूरे शरीर की मालिश), पोटली (प्रलेप यानी पुल्टिस मालिश), पिजहिचिल (रिच ऑयल मसाज) और स्वेदन (स्टीम बाथ या भाप स्नान)। जानते हैं, इन्हें कैसे किया जा सकता है और इनके फायदे क्या हैं -

#### 1. अभ्यंग (पूरे शरीर की मालिश)

यह मसाज वात विकार को शांत कर ऊतकों से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालती है। नियमित अभ्यंग से तनाव, थकान व वात संबंधी विकार दूर होते हैं। इससे शरीर को पोषण मिलता है और व्यक्ति को अच्छी नींद आती है। रक्तसंचार बेहतर करने का यह सबसे अच्छा विकल्प है, जिससे मांसपेशियां भी मजबूत होती हैं।

#### 2. बस्ती (औषधीय एनिमा)

यह थैरेपी शरीर के विषाक्त पदार्थों को हटाकर ऊतकों को पोषण देकर दोबारा बनाती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है। साथ ही धमनियों की सफाई कर इन्हें खोलने और जोड़ों के दर्द से राहत दिलाती है।

#### 3. पिजहिचिल (रिच हॉट ऑयल मसाज)

यह गठिया रोग और जोड़ों में दर्द के लिए उपयोगी है। इसमें पूरे

शरीर की गुनगुने तेल से मसाज की जाती है। औषधीयुक्त तेलों का प्रयोग होने के कारण रोग प्रतिरोधक क्षमता में इजाफा होता है और तनाव दूर होकर मन को शांति मिलती है।



#### 4. पोटली (पुल्टिस मालिश)

जड़ी-बूटियों से तैयार पोटली को शरीर की मालिश के लिए प्रयोग में लाते हैं। दर्द निवारक होने के साथ इससे मांसपेशियों की अकड़न व ऐंठन, स्पांन्डिलाइटिस, जोड़दर्द, ऑस्टियोअर्थराइटिस और वात से जुड़ी समस्या से राहत मिलती है। इस प्रक्रिया में जड़ी-बूटियों के पाउडर व रस को रोग की प्रकृति के अनुसार उचित मात्रा में लेकर एक लिनन के कपड़े में भर लें और एक पोटली का रूप दे दें। इसके बाद पोटली को औषधीय तेल में गर्म कर त्वचा पर रखें।

#### 5. स्वेदन (स्टीम बाथ)

इस प्रक्रिया से रक्त संचार सुचारू होता है और रोमछिद्र भी खुलते हैं। स्टीम बाथ के लिए पानी में वरुण, निर्गुंडी, गिलोय, अरंडी, सहजना, मूली के बीज, सरसों, अडूसा और तुलसी के पत्ते आदि को उबालकर कुछ देर भाप लेते हैं।

**मीना कौशिक**

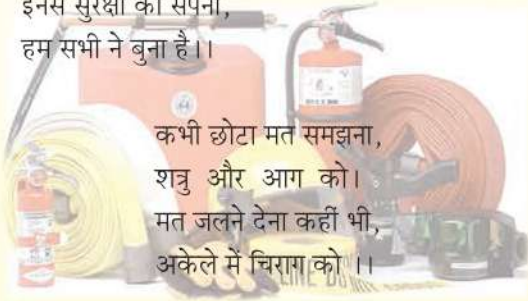
धर्मपत्नी - श्री पवन कुमार कौशिक  
पर्यवेक्षक, बेली ब्रिज (पी एवं पी)  
61 पार्क यूनिट





## अग्नि सुरक्षा

**आ**ग, पानी और हवा बिन,  
सब कुछ सूना सूना है।  
इनसे सुरक्षा का सपना,  
हम सभी ने बुना है।।



कभी छोटा मत समझना,  
शत्रु और आग को।  
मत जलने देना कहीं भी,  
अकेले में चिराग को ।।

अग्नि सुरक्षा को पूरी तरह अपना ले,  
मोक ड्रिल करके सबको कभी बुला ले ।  
बीच बीच में सायरन कभी तू बजा ले,  
अग्नि शामकों को ठीक तू करा ले ।।

दमकल तैयार रख बीच बीच में चला ले,  
फायर हाइड्रेंट को ठीक ठाक करा ले ।  
रेत की बाल्टी में घास मत उगा ले,  
बिना असल काम किए ढपली मत बजा ले ।।

**के एस वर्मा**

महाप्रबंधक (आईईपी, फायर एण्ड सेफ्टी)

## कदम कदम बढ़े चलो

**जि**दगी की राह में, मंजिलों की चाह में, कदम कदम बढ़े चलो।  
अनगिनत पड़ावों से गुजर, निडर समर बढ़े चलो, कदम कदम बढ़े चलो।

सहस्र बाधाएँ मिलेंगी, आशाएँ, निराशाएँ मिलेंगी।  
दृढ़ संकल्प लिए, अनवरत चढ़े चलो, कदम कदम बढ़े चलो।

उथल पुथल पथ रहे, विचार गर सबल रहे।  
चट्टानों की धारों पर, चट्टानों की श्रेणी को छूने,  
आत्मबल संग बढ़े चलो, कदम कदम बढ़े चलो।

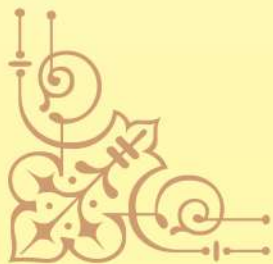
साम-दंड भेद कर, सत्य को संवार कर,  
सत्य की खोज में, असत्य को पछाड़ कर,  
दहाड़ कर बढ़े चलो, कदम कदम बढ़े चलो।

सत्य कि दिनकर ढलते हैं, यह प्रकृति प्रदत्त है,  
दुष्कर्म भी थक जाएगा, साहस अगर उन्मत्त है।  
कर प्रयास तुम निरंतर, अनायास बढ़े चलो, कदम कदम बढ़े चलो।

कर्म सत्य संग संग चले, आनंदित मन क्यों डरे,  
हौसला खग सा लिए, छूने नभ का नयन,  
आत्मशक्ति श्रम लिए, गति पूर्ण चलते चलो।  
कदम कदम बढ़े चलो।

**रत्ना कुमारी**

उप प्रबन्धक (वित्त)  
मेन यूनिट





### हिन्दी दिवस तथा हिन्दी माह आयोजन

**गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड** में इस वर्ष 14 अगस्त 2016 से 14 सितम्बर 2016 तक की अवधि को हिन्दी माह के रूप में मनाया गया। राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने और हिन्दी में काम करने का वातावरण निर्मित करने के लिए इस अवधि के दौरान विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं यथा हिन्दी निबन्ध, हिन्दी नोटिंग-ड्राफ्टिंग, हिन्दी में चित्राभिव्यक्ति, हिन्दी अनुवाद, हिन्दी में प्रश्नोत्तरी, हिन्दी कविता पाठ प्रस्तुति, हिन्दी भाषण आदि आयोजित की गईं।

28 सितम्बर 2016 को अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस आयोजित किया गया। अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक ने कंपनी को राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए लगातार चौथी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिले 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' और हिन्दी पत्रिका राजभाषा जागृति को भी राष्ट्रीय स्तर पर मिले 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'



के लिए कंपनी के राजभाषा विभाग सहित सभी कार्मिकों को बधाई दी।

समारोह में अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक के हाथों कम्पनी की हिन्दी पत्रिका 'राजभाषा जागृति' के 13वें अंक, सितंबर 2016 का विमोचन किया गया।

हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा हिन्दी में सराहनीय काम करने वाले कर्मचारियों/विभागों तथा

राजभाषा जागृति में प्राप्त सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों के रचनाकारों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए गए। राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए कम्पनी की 'राजभाषा शील्ड' एफओजे यूनिट को प्रदान की गई। प्रथम रनर अप शील्ड तारातला यूनिट को और द्वितीय रनर अप शील्ड आरबीडी यूनिट को प्रदान की गई।





### राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने हेतु कंपनी में लागू विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएँ



**मूल कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना** - क तथा ख क्षेत्रों में कम से कम 20,000 शब्द और ग क्षेत्र में कम से कम 10,000 शब्द हिन्दी में लिखने वाले कार्मिकों को हिन्दी दिवस आयोजन में नकद पुरस्कार दिए गए।

**अंत: यूनिट राजभाषा शील्ड** - हिन्दी का सर्वाधिक प्रयोग करने पर 'राजभाषा शील्ड' एफओजे यूनिट को, प्रथम रनर अप व द्वितीय रनर अप शील्डें क्रमशः तारातला यूनिट और आरबीडी यूनिट को प्रदान की गई।

**हिन्दी पत्राचार व हिन्दी नोटिंग-ड्राफ्टिंग को बढ़ावा देने के लिए अंत: विभागीय वार्षिक प्रोत्साहन योजना** - 7000, 4500 और 2500/- रुपए के नकद पुरस्कार वर्ष के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक काम करने के लिए क्रमशः कौंट्रैक्ट, सचिवीय तथा सुरक्षा विभाग को दिये गए।

**हिन्दी पत्राचार और हिन्दी नोटिंग-ड्राफ्टिंग को बढ़ावा देने के लिए अंत: विभागीय त्रैमासिक प्रोत्साहन योजना** - विभागों को हिन्दी में

काम करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान 03 सर्विस विभागों, 03 उत्पादन विभागों और 03 उत्पादन सपोर्ट विभागों को उनके द्वारा भेजी गई हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी तिमाही रिपोर्ट के आधार पर नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है।

**हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार** - हिन्दी पत्रिका राजभाषा जागृति में प्राप्त सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों के लिए हिन्दी भाषी और हिन्दीतर भाषी कार्मिकों व परिवार के सदस्यों को नकद पुरस्कार दिए गए।

**नोडल अधिकारी (राजभाषा) के लिए प्रोत्साहन योजना** - विभिन्न विभागों व यूनिटों में नामित नोडल अधिकारियों को प्रोत्साहित करने के लिए सर्वश्रेष्ठ नोडल अधिकारी का 5000/-रु. का वार्षिक नकद पुरस्कार श्री रवि किशन, उप प्रबन्धक व नोडल अधिकारी, यार्ड आधुनिकीकरण को दिया गया।



### हिन्दी व कंप्यूटर कार्यशालाएँ

**कं**पनी की तारातला यूनिट में दिनांक 17.01.2017 को हिन्दी/कंप्यूटर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें सामग्री विभाग, डेक मशीनरी विभाग और वित्त विभाग के कार्मिकों ने भाग लिया। संकाय सदस्य के रूप में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से श्री अनूप कुमार, सहायक निदेशक ने उपस्थित कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा विकसित ई-टूल्स का प्रयोग और व्यावहारिक अभ्यास करवाया और

इस दिशा में आने वाली उनकी कठिनाइयों के समाधान बताए। महाप्रबंधक (सामग्री) श्री एम वेंकटेश मूर्ति व अपर महाप्रबंधक (डेक मशीनरी) कमांडर आर एन चट्टोपाध्याय भी कार्यशाला में उपस्थित रहे।



**राँ**ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (सार्वजनिक उपक्रम) के तत्वावधान में जीआरएसई के डीजल इंजन प्लान्ट, राँची की ओर से दिनांक 21.02.2017 को टिप्पण – आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें नराकास, राँची



के विभिन्न सदस्य कार्यालयों से 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन श्री जी. तामसोय, वरिष्ठ प्रबन्धक (मानव संसाधन) एवं नोडल अधिकारी (राजभाषा), डीईपी द्वारा किया गया।



### राजभाषा के प्रचार प्रसार हेतु स्कूलों में हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन

**रा**जभाषा का प्रयोग जीआरएसई की चारदीवारी तक ही सीमित नहीं है, अपितु कंपनी के बाहर भी स्कूलों में नियमित प्रतियोगिताएं आयोजित कर इसका प्रचार प्रसार किया जाता है। दिनांक 20.01.17 को संघमित्रा विद्यालय, साउथ ईस्टर्न रेलवे कॉलोनी, कोलकाता में हिन्दी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई और स्कूल के तीन विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।



**SANGHAMITRA VIDYALAYA (H.S.)**  
(BENGALI & HINDI MEDIUM CO-EDUCATIONAL  
PRIMARY AND HIGHER SECONDARY SCHOOL)  
S.E. RLY. COLONY, KOLKATA-700043  
ESTD. : 1950





### नए भर्ती अधिकारियों के लिए इंडक्शन कार्यक्रम राजभाषा सत्र

**क**ंपनी में सेवारम्भ करने वाले नए अधिकारियों के लिए सेवारम्भ करने के कुछ समय पश्चात ही एक इंडक्शन कार्यक्रम रखा जाता है, जिसमें उन्हें कंपनी के विभिन्न विभागों तथा कार्यों आदि के संबंध में जानकारी दी जाती है।

इंडक्शन कार्यक्रम के दौरान 09.11.16 को राजभाषा सत्र में नए भर्ती अधिकारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति और उसे जीआरएसई में कार्यान्वित करने तथा गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) द्वारा विकसित ई-टूल्स के उपयोग संबंधी जानकारी दी गई।





## विविध राजभाषा कार्यक्रमों में जीआरएसई कार्मिक



गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग), केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता केंद्र के अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री मनीष कुमार सिंह, सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रम - जीआरएसई से निम्नलिखित कार्मिकों ने भाग लिया :

- श्रीमती नबनीता बेरा, उप प्रबन्धक, ईआरपी विभाग
- श्री पी मनोज, उप प्रबन्धक, ईआरपी विभाग
- श्री दीपांकर पाल, पर्यवेक्षक, पीपी एवं सी विभाग
- श्री प्रदीप कुमार मण्डल, कार्यालय अधीक्षक, पीपी एवं सी विभाग



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में आयोजित 'हिन्दी टिप्पण-पत्र लेखन प्रतियोगिता' में जीआरएसई अधिकारी पुरस्कृत।

श्री संदीप आर्य, निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्रीमती नबनीता बेरा, उप प्रबन्धक (ईआरपी)



### राजभाषा संगोष्ठी

**वि**भिन्न विभागों तथा यूनिटों में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नामित किए गए नोडल अधिकारियों के लिए दिनांक 07.02.17 को राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में निदेशक (पोतनिर्माण) सह अ.प्र.नि., निदेशक (वित्त), निदेशक(कार्मिक) व मुख्य महाप्रबंधक (ईआरपी, ओएल, वाईएम) भी उपस्थित हुए। अध्यक्ष महोदय ने कंपनी



के राजभाषा विभाग द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए सभी नोडल अधिकारियों का अपने अपने विभागों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने हेतु आभार व्यक्त किया और उन्हें इस दिशा में उत्तरोत्तर विकास करने के लिए प्रेरित किया।

संगोष्ठी में 'तकनीकी संदर्भ में राजभाषा का अनुप्रयोग' और 'हिन्दी का पर्यावरण' विषयों पर चर्चा की गई। गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) से श्री अनूप कुमार, सहायक निदेशक ने जहाँ भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में ई-टूल्स



की उपयोगिता पर व्यावहारिक जानकारी व ई-टूल्स प्रयोग संबंधी शंकाओं का समाधान किया, वहीं केन्द्रीय काँच एवं सिरेमिक अनुसंधान संस्थान के श्री प्रियंकर पालीवाल, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के स्वरूप और प्रयोग पर अपना सारगर्भित और प्रभावशाली व्याख्यान दिया।





**आ**पके द्वारा संपादित उक्त पत्रिका को देखने-पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

पिछले अंकों की भांति यह अंक भी रोचक लगा। रचनाएँ सूचनापरक व ज्ञानवर्धक हैं।

विद्यालयों में हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन, कार्मिकों के परिवारों को 'राजभाषा जागृति' से जोड़ना एवं सर्वोत्कृष्ट रचनाकार को पुरस्कृत करना, स्वच्छ भारत पखवाड़ा तथा वृक्षारोपण के अलावा संगठन में नवागतों को राजभाषा नीतियों व कार्यान्वयन के महत्व से परिचित करवाना आदि ऐसे कार्यक्रम हैं, जो राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन की दिशा में आपके व्यावहारिक पक्ष को मजबूत करते हैं।

11 वें एवं 12 वें अंक को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' हेतु हार्दिक बधाई। 14 वें अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

**शिवशंकर प्र. सिंह**

संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा), पूक्षे  
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

**रा**जभाषा जागृति अर्धवार्षिक पत्रिका के 13वें अंक को प्राप्त कर हमें प्रसन्नता हुई। इस अंक की सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय हैं। जल ही जीवन है विषय को रेखांकित करते हुए जल संकट एवं समाधान संबन्धित सभी रचनाएँ बहुत ही अच्छी एवं प्रशंसनीय हैं। संपादक मण्डल का प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के संपादक मण्डल को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की ओर से हार्दिक बधाइयाँ एवं आगामी अंक हेतु शुभकामनाएँ। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त होने पर विशेष बधाई।

**अनीता गोस्वामी**

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)  
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

**वि**गत बार की तरह आपकी राजभाषा पत्रिका राजभाषा जागृति का 13वां अंक इस बार भी प्राप्त हुआ। आपकी पत्रिका जब-जब प्राप्त हुई, मन को काफी प्रसन्नता मिली। पत्रिका की सादगी तो अपने आप में उत्तम है ही, साथ ही इसकी सारगर्भिता अपने आप में एक मिसाल है। पत्रिका अपने आप में परिपूर्ण और आकर्षक है।

इस बार की पत्रिका में योग्य है योग, नारी और जल – समाज का आधार, देशवासियों की थाली में मिलावट का खतरा जैसी रचनाएँ पढ़ने को मिली जो समीचीन लगीं। पत्रिका उत्कृष्ट कविताओं से भी लबरेज है। साथ ही, अन्य प्रासंगिक विषयों को भी इसमें समेटा गया है।

वर्ष 2015-16 के दौरान राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार से आपके संगठन को सम्मानित किया गया तथा आपकी पत्रिका को भी इस सम्मान से नवाजा गया जो अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि आपने राजभाषा के क्षेत्र में गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड को जो दिशा प्रदान की है, वह अपने आप में अतुलनीय है।

मेरी शुभकामना है कि आपके सम्पादन और कुशल नेतृत्व में आपकी राजभाषा पत्रिका राजभाषा जागृति आगे भी नित नयी बुलंदियों को स्पर्श करती रहे।

बधाइयाँ स्वीकार करें।

**नवीन कुमार प्रजापति**

प्रबंधक (राजभाषा) व पदेन सचिव,  
राभाका समिति, दामोदर घाटी निगम





जीआरएसई द्वारा भारत सरकार को लाभांश – माननीय रक्षा मंत्री श्री मनोहर पर्रीकर को चेक सौंपते हुए



जीआरएसई में गणतन्त्र दिवस समारोह

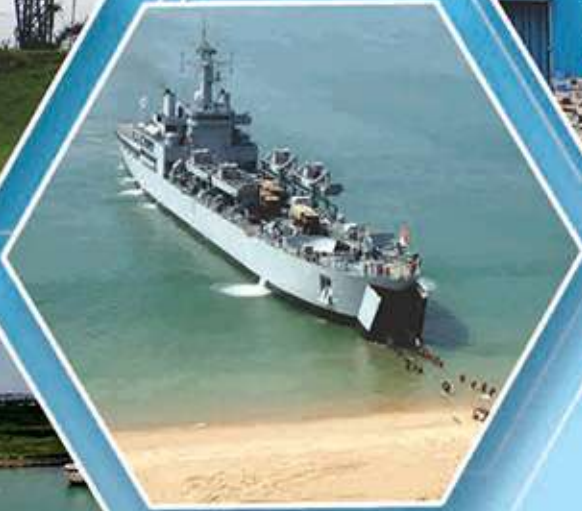
रियर एडमिरल वी के सक्सेना, भानौ (सेवानिवृत्त) ने 01 मार्च 2017 से जीआरएसई के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का कार्यभार ग्रहण किया।



7वे एवं 8वे लैंडिंग क्राफ्ट यूटिलिटी का जलावतरण – माननीय रक्षा राज्य मंत्री श्री सुभाष रामराव भामरे तथा माननीय केंद्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री श्री राजीव प्रताप रूडी की गरिमामयी उपस्थिति में







## एक पौरवशाली प्रथम श्रेणी मिनी रत्न प्राप्त उपक्रम



गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

43/46, गार्डन रीच रोड, कोलकाता-700 024

दूरभाष सं. : 2469-8100 से 8113, फैक्स : (033) 2469-8150

वेबसाइट : [www.grse.nic.in](http://www.grse.nic.in)

सम्पादन, डिजाइनिंग तथा संकल्पना श्रीमती सुनीता शर्मा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा